

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अस्मिन् भारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत प्राकृत अपभ्रंश राजस्थानी हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विभिन्न बाहुल्यप्रकाशित विविध ग्रन्थावलि

यथाथ सम्पादक

पद्मश्री सितविजय मुनि पुरातनशास्त्रार्थ

[फ्रान्सेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएण्टल सोसाइटी जर्मनी]

सम्पाद्य तबस्य

भाण्डारकर प्राच्यविद्या संशोधन मन्दिर, पूना, गुजरात साहित्य-सभा अहमदाबाद
विश्वेश्वरामन्त्र वैदिक शोध-संस्थान होशियारपुर निबद्ध सम्पाद्य नियामक-
(फ्रान्सेरि डायरेक्टर) भारतीय विद्यामन्त्र अम्बई ।

ग्रन्थाङ्क ५५

स्वर्गीय पुरोहित हरिमारामराजी, बी ए -

विद्याभूषण-ग्रन्थ-संग्रह-सूची

६

प्रकाशक

राजस्थान राज्यशासनाद्वारा

संस्वास्तक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

स्वर्गोप पुरोहित हरिनारायणजी, बी ए -

विद्याभूषण - ग्रन्थ - संग्रह - सूची

सम्पादक

श्री गोपालनारायण धट्टरा एम ए

श्रीर

श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी बीशित

प्रकाशनकर्ता

राजस्थान राज्याङ्गलुतार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विष्णुमास २ १८	भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८३	{	सिंस्ताम्ब ११९१
प्रथमावृत्ति १००			मूल्य ६२५

मुद्रक-इन्द्रिप्रसाद पारीक छापना प्रेस जोधपुर.

RAJASTHAN PURATANA GRANTHAMALA

PUBLISHED BY THE GOVERNMENT OF RAJASTHAN

A series devoted to the Publication of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa,
Old Rajasthani-Gujarati and Old Hindi works pertaining to
India in general and Rajasthan in particular

★

GENERAL EDITOR

PADMASHREE JINA VIJAYA MUNI, PURATATTVACHARYA

Honorary Member of the German Oriental Society Germany Bhandarkar
Oriental Research Institute, Poona, Vishveshvarananda Vaidic
Research Institute, Hoshiarpur Punjab Gujrat Sahitya
Sabha, Ahmedabad, Retired Honorary Director
Bharatiya Vidya Bhawan, Bombay General
Editor Gujrat Puratattva Mandira
Granthavali Bharatiya Vidya
Series, Singhji Jain Series
etc. etc.

★ ★

No 55

A CATALOGUE OF

LATE PUROHIT HARINARAYAN B. A. -

VIDYABHOOSHAN MANUSCRIPTS COLLECTION

★ ★ ★

Published

Under the Order of the Government of Rajasthan

By

The Director Rajasthan Prachya Vidya Pratisthana
(Rajasthan Oriental Research Institute)
JODHPUR (RAJASTHAN)

A CATALOGUE OF
LATE PUROHIT HARINARAYAN B.A. -
VIDYABHOOSHAN MANUSCRIPTS
COLLECTION

*

Edited By
Shri Gopal Narayan Bahura, M. A.
‡
Shri Lakshmi Narayan Goswami Dikshit

*

Published under the orders of the Government of Rajasthan

By
RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE
JODHPUR (Rajasthan)

V.S 2018]

[1961 A.D

विषय तासिका

विषय	पृष्ठ संख्या
संस्कृतभाषाकीय वस्तुस्थिति	
एक सुरोहित श्री हरिनारायणजी विद्याभूषण का जीवन-वृत्त	१-८
विद्याभूषण-ग्रन्थ-संग्रह-सूची	१-११२
परिशिष्ट १-हृत्तीवरात्मजमुद्रामयिका	१-२६
२-कर्तृ नामाभूषणमयिका	२६-३३

जयपुरनिवासी विभूतकीर्ति शोधविद्वान् स्वर्गीय पुरोहित श्रीहरि नारायणजी विद्याभूषण द्वारा सङ्गृहीत विद्याभूषण ग्रन्थ-संग्रह की सूचीको इस विभागके द्वारा प्रकाशित किया जा रहा है। श्रीविद्याभूषणजीने अपने जीवनकालमें अदम्य उत्साह एवं सलग्नतासे अमूल्य ग्रन्थरत्नोंका संग्रह किया था जो पुरातत्त्वविज्ञानसुष्माँके लिए उपादेय है। इस संग्रहको श्रीविद्याभूषणजीके दिवंगत होने पर उनकी अक्षय कीर्तिकामना रखते हुए श्रियुक्त रामगोपालजी पुराहित बी ए, एल-एल बी (श्रीविद्याभूषणजीके आत्मज)ने किसी ऐसी संस्थाको दाना संकल्पित किया जहाँ निरन्तर इसका उपयोग भावी शोधकारा द्वारा किया जा सके। इसी उद्देश्यसे प्रेरित यह एक दिन हमारे कार्यालय (पुरातत्त्व मन्दिर जयपुर)में उपस्थित हुए। यहांकी प्राचीन ग्रन्थोकी सुरक्षा सम्पादन एवं प्रकाशन सम्बन्धिनी व्यवस्थासे प्रभावित हो कर उन्होंने अनुभव किया कि विद्याभूषण-ग्रन्थ-संग्रहका सही उपयोग इसी प्रतिष्ठान द्वारा भसी प्रकार किया जा सकेगा। इसके तुरन्त बाद ही 'शुभस्य दीर्घम' को चरितार्थ करते हुए उन्होंने उक्त संग्रह इस कार्यालयमें भिजवा दिया और दिनांक २१ २ १९५७को एक पत्र मुझे लिख कर सूचित किया कि मेरे स्वर्गीय पितृचरणका कायस्थ जयपुर ही रहा है और सौभाग्यसे अब यहीं पर पुरातत्त्व मन्दिर जैसी शोधसंस्था काय कर रही है अतएव मेरी उत्कट अभिभाषा है कि आप उनके विद्याभूषण ग्रन्थ-संग्रहको एक उप संग्रहक समान अपने ही विभागमें सुरक्षित रखें ताकि स्वर्गीय विद्याभूषणजीका यश शरीर शोधविद्वानोंके अधिकाधिक काम आ सके।

इस सम्बन्धमें राजस्थान सरकारको विधिवत् स्वीकृतिक लिए लिखा गया और आदेश नं. डी १००६७ एफ ६ (२) एण्यू बी ५१ दिनांक १६ जुलाई १९६० द्वारा सरकारने उक्त संग्रहको इस विभागके अधिकारमें लेना स्वीकृत कर लिया। यह भी निश्चय किया गया कि

प्रस्तुत विद्याभूषण-ग्रन्थ-संग्रह जयपुरमें ही प्रतिष्ठानके शाखा कार्यालयमें सुरक्षित रखा जायगा एवं भविष्यमें इस प्रकार भेंटस्वरूप प्राप्त होने वाले अन्य उपादेय संग्रहोंको भी मध्यायवाद स्वीकार किया जायेगा।

इस प्रकार उक्त संग्रह प्रतिष्ठानके अधिकारमें ले लिया गया।

स्वर्गीय पुरोहितजीने विद्याभूषणग्रन्थसंग्रहके नामसे प्रस्तुत संग्रहकी प्रायः दो सहस्रनामान्वित सूची तैयारकी थी जिसे हमने उसी रूपमें प्रकाशित किया है। आवश्यक स्थानों पर टिप्पणी एवं परिशिष्टमें वृत्ति और बतु नामानुक्रमणिका तथा स्वर्गीय विद्याभूषणजीका संक्षिप्त जीवनवृत्त दे कर सम्पादकोंने इसे अधिक उपाध्य बना दिया है। स्वर्गीय विद्याभूषणजीने प्रस्तुत संग्रहके अनेक ग्रन्थोंमें यथास्थान स्वहस्ताक्षरोंसे आवश्यक फुट नोट लिखे हैं जिससे वे प्रकरण अधिक प्राञ्जल हो उठे हैं।

प्रस्तुत सूचीके प्रकाशन-व्यय का अर्द्धांश भारत सरकारके दानानिक और सांस्कृतिक मन्त्रालय द्वारा आधुनिक भारतीय भाषा विकास योजनाके अन्तर्गत प्रदान किया गया है। एतद्वय प्रतिष्ठानकी ओरसे हम आभार प्रदर्शित करते हैं।

इस प्रकार स्वर्गीय विद्याभूषणजीके ग्रन्थसंग्रहकी यह सूची सम्पादित की जा कर पाठकोंके समक्ष उपस्थित की जा रही है। आशा है यह सूची विषयके शाता और अध्येताओंके लिये बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।

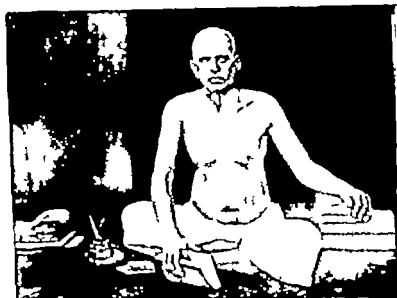
मुनि जिनविजय

होमी वर नं २ १७

धर्मदास बिहार पहलवाबाद

सम्भाव्य सम्भावक

राजस्थान प्राध्यापिका प्रतिष्ठान जोधपुर



स्वामीय कुरोहिम श्री हरिनारायणजी विद्याभूषण

अम-मास ४ ४ १९३१ वि । [निपत-माघ (मार्गशीर्ष)] पञ्चाङ्ग २ २ वि

स्वर्गीय विद्याभूषण पुरोहित श्रीहरिनारायणजीका संक्षिप्त जीवन-वृत्त'

शुभ मिति माघ कृष्णा चतुर्थी रविवार विक्रम संवत् १९२१ के पवित्र प्रभातमें उषाकी लाघव्यप्रभाके अरुचमसे जयपुरके राज्यप्रतिष्ठित पारीककुल पूषण विद्याभूषण श्रीहरिनारायणजी पुरोहितका अवतरण हुआ। राजस्थानके साहित्याकाशमें यह सूर्य निरन्तर एकाशीतिवर्षपर्यन्त प्रभा विकीर्ण कर साहित्य साधनाके ससर्गगी शक्रचाप घनासा रहा। स्वर्गीय विद्याभूषणजीके नाम जीवन और मृत्यु तीनों ही अपनी उज्ज्वल भूमिकामें अप्रतिम रहे। उनकी ज्ञानप्रमाने इतिहास और मन्त-साहित्यकी प्रतिनिधिकाे रहन आवरणोंको चीर कर प्रामाणिकताका अक्षय्य भालोक प्रदान किया। वे व्यक्ति जिन्हें उनको देखनेका सौभाग्यलाभ हुआ है सदैव उन्हें स्मरण करते रहेंगे और वे भी जो उनकी अक्षरसम्बद्धकीतिके अवगाहक हैं उनके पाषिव प्रभावकी कचाट नहीं मिटा पाएंगे।

स्वर्गीय विद्याभूषणजीके शिक्षाकाशमें अग्रजीविशेषज्ञ अगुलिपरिमेय ही थे और उनमें भी इनका नाम सम्मानके साथ लिया जाता था। एफ ए० और बी ए परीक्षाओंमें उन्होंने सर्वाधिक योग्यताके परिणामस्वरूप 'सार्थ नार्थ बक' पदक एवं कासेजके सर्वोत्तम चरित्रवान् तथा मेधावी छात्र होनेके फल स्वरूप 'सार्थ सेंस डाउन' पदक प्राप्त किये। शिक्षा-समाप्तिके पश्चात् वि० संवत् १९४८से जयपुरराज्यकी सेवा अंगीकार कर उन्होंने निरन्तर आसोस वर्ष पर्यन्त विभिन्न प्रशासनिक उच्च पदों पर कार्य किया। इस अन्तरमें यह नाजिम सी आई डी इंस्पेक्टर मोहलमिम जनानी इयोड़ी एवं चैरिटो सुपरिटेण्डेंटके पदों पर कुशलतापूर्वक प्रतिष्ठित रहे। राजकीय कार्यरत रहते हुए उन्हें दोसा वाटी और तोरावाटीमें (सत्कामीन जयपुरराज्यके अधीनस्थ सीकर एवम् सडेली प्रभृति ठिकानोंके प्रदेश) रहनेका अवसर प्राप्त हुआ जहां उन्होंने अनेक गो-शाखाओं और पाठशालाओंकी स्थापना की।

१ जयपुरसे प्रकाशित दिसम्बर जनवरी सन् १९४१-४२ के पारीक मासिक पत्रके 'विद्या भूषण विरोधाक' एवं स्वर्गीय विद्याभूषणजीके छात्रज श्रीयुक्त रामगोपालजी पुरोहित जी ए एल-एन.बी के मौखिक वक्तव्योंके आधार पर लिखित।—(ध)

शिक्षाकी ओर उनका अगाध अनुराग था। स्वयं तो वह बाजी-मन्त्रिकी देहसी पर यावज्जीवन साधनाके प्रसून समर्पित करते ही रहे औरोंको भी इसके लिए प्रेरणा और उत्साह प्रदान करते रहना उनका सहज स्वभाव था। पारोक हार्नून्स (वर्तमान कालेज) को एक साध साध सहस्र रुपयोंका दान देकर उसकी आधार शिमाको सुदृढ़ बनानेमें विद्याभूषणजीका सहयोग अग्रणी रहा है।

साहित्यसेवाकी ओर उनका प्रबल आकर्षण छात्रावस्थासे ही था जो स्नात कोत्तर अवस्थामें पहुँच कर इतना उत्कण्ठ हो उठा कि उनके सम्पर्कमें जन साहित्य और विद्याभूषणजीमें ठाढ़ात्मदर्शन करने लगे थे। इस प्रकारके साहित्यकार्यके मूल स्रोतका परिचय देते हुए स्वयं विद्याभूषणजीने सुन्दरप्रभावसीकी सम्पादकीय भूमिकामें व्यक्त किया है कि हमारे स्वर्गीय पूज्य पिताजी जो मापासाहित्यके प्रेमी और मर्मज्ञ थे और मित्रकी धर्म और ज्ञानमें बड़ी श्रद्धा थी सुन्दरविलास सुन्दरवासकुल सर्वथा संवत् १९३३का सीधो प्रस का छापा बड़े आनन्दसे पढ़ा करते। स्वामी गोपामदासजी भी जो हमारे पिताजी के सत्संगी थे हमको सुन्दरस्वामीकी रचनाओं में से यथा मूला इत उत फिर ताक रही मिनकी। यथस्य अपस माया भई किम की। 'राम हरि राम हरि बोल भूवा' इत्यादि बड़े प्रेम रस और स्वरसे पढ़ कर सुनाते। सब जो भाव हमारे चित्तका होता वह अकथनीय है। फिर तो हम उक्त ग्रन्थको बड़ी तल्लीनतासे पढ़ने लग गये। हमें ऐसा ज्ञान पड़ता माना हम आनन्दक सरोवरमें गोता लगा रहे हैं। निदान हमारी शक्ति और भक्ति सुन्दरस्वामीके बचनानामृतमें तबसे ही हो गई थी। (सुन्दरप्रभावसी भूमिका पृष्ठ ३)

स्पष्ट है कि विद्याभूषणजीकी साहित्यप्रविष्टिका सिद्धार उनका सुन्दर दासजीकी रचनाओंके प्रति प्रबल आकर्षण ही था। यह आकर्षण बढ़ता ही गया और सुन्दरदासजीके साध-साध सम्पूर्ण सन्तसाहित्यके बहुमूल्य रत्नों पर उनकी वृष्टि स्थिर हो गई। अधिकसे अधिक समय सन्तसाहित्यमें लगने लगा। जिस प्रकार निमल वर्षणमें प्रतिबिम्ब सक्रान्त होता है उसी प्रकार विद्याभूषणजीकी आत्मा पर सन्तबाणीका वर्णन आनोदित हो उठा। इस आत्मयोगकी स्थितिने स्वयं उस शोधकर्ताको भी सन्तके प्रातिस्विक रूपमें तदाकार बना दिया। उन्हें घुन हुई कि यह साहित्य जो दीमकों उपेक्षाओं अज्ञता और क्रूरमनोंमें अवश्रय होता जा रहा है रक्षित होना ही चाहिए। बस्तुतः राजस्थानकी भूमि पर हस्तमिक्षित प्रज्ञात-ज्ञात ग्रन्थोंके प्रथम उद्धारकके रूपमें विद्याभूषणजीने जो प्रबल प्रयत्न आरंभ किया उससे बहुत सा और्ध्वशीर्ष साहित्य कालकबलित होते-होते बच गया।

उस समय तक नागरीप्रचारिणी सभा काशी अक्षिस भारतीय स्तर पर कार्य करनेका उपक्रम कर रही थी किन्तु व्यापक क्षमता और साधनोंकी बहु

सताने अभावमें वह कार्य संयुक्तप्रान्त तक ही कर पा रही थी। कलकत्ता की रॉयस एशियाटिक सोसायटी कबल संस्कृतग्रंथों पर अपना ध्यान केन्द्रित किये हुए थी। अबधी धीरे ब्रजभाषाक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थोंकी खोजका काम उत्तर भारत यथासक्य कर रहा था और परिणामस्वरूप इन दोनों भाषाओंका बहुतसा साहित्य प्रकाशमें आता आ रहा था। प्रयत्न नहीं हो रहा था तो वह राजस्थानमें। विद्याभूषणजी इस स्थितिसे चिन्तित हो उठे। उनका हृदय क्रमन् क्रम उठा। परन्तु अकेल किसना करते? तब उन्होंने अपने साहित्यिक मित्र बालाबन्साजी वारहृठको प्रेरित कर चारणों भाटों राजमहालयों और अनसामान्यके समीप अस्तव्यस्त रखे हुए उपेक्षाग्रस्त ब्रिगल और पिगल साहित्यके उद्धार का पुन शक्तिमर प्रयत्न किया। प्रकाशन निमित्त सात सहस्र रुपयोंकी स्थायी निधि मागरीप्रचारिणी सभा काशीमें स्थापित करवायी। राजस्थानी भाषाकी संपन्नताकी साहित्यिकजगतके समक्ष सामनेके लिए वह सदैव उत्कण्ठित रहते थे। इस दिशामें उन्होंने एक बृहद् राजस्थानी कोषके निर्माणको परमावश्यक समझते हुए जोधपुरके श्रीयुत् मीतारामजी लाडसको सन १९३२में उत्प्रेरित किया तथा बहुतसी सदन सामग्री भी प्रदान की। वह कोष अब श्री लाडसजीक कतू त्वमें संपादित होकर प्रकाशित हो रहा है। इसी प्रकार सन्त साहित्यके अक्षय भंडारका प्रकाशन भी उत्तका मनावाञ्छित था जिसके लिए उन्होंने उदानीन्तन उदीयमान साहित्यिकोंकी एक समिति बना कर सन्त प्रथमांश' की योजना—सस्ता साहित्य मण्डल नई दिल्लीक तत्वावधानमें धामू की थी।

हस्तलिखित ग्रंथोंकी अन्वेषणा करते रहना उनका स्मिकर कार्य था। किसी प्रयोजनसे बही गये हों वही समय निकाल कर ग्रन्थोंकी खोज यह करते रहते थे। सोमावाटी और सारावाटी जहाँ यह दीपकाल तक राजकीय अधिकारीके रूपमें रहे थे से निरन्तर प्रपञ्चयन करते रहत थे। जहाँ कहीं नूतन ग्रंथ मिलता उसे मुहमांग दामों पर खरीद कर अपने संग्रहालयकी शोभा बढ़ाते एक शोधकार्यके लिए नवीन उत्साहसे जुट जाते थे। उनकी इस विमृद्ध साहित्यिक अभिरुचिसे उत्प्रेरित होकर बहुतसे विद्वत्कील सन्त महन्त और सद्गुरुहन्ध भी उन्हें मदुपयागार्थ अपनी पत्नियाँ और गुन्हे से दिया करते थे। विद्याभूषणजीन ऐसे कृपासू समर्थोंका उत्सव यथास्थान अपनी सूचीमें किया है। कल्पित ऐसे ग्रंथ जो उन्हें स्थायी संग्रहके लिए नहीं मिल पाते थे उनकी प्रतिनिधिमता वह अपने व्यय से निरन्तर करवात रहत थे। ग्रंथ-सूची में न्य प्रकारके अनेक प्रतिनिधिकर्ताओंका उत्सव भूय ग्रंथक भूय यात्रक साथ दर्शित है।

ग्रंथप्राप्तिविषयक उनके उत्पट अनुरागात् वणन कम्मे हुए श्रीयुग राम गोपासजी पुराहितने एक ममम्पर्शी धटना सुनाई जो न्य प्रकार है —

जोधपुरमें जहाँ राजकल "मानसिह हार्द बे" है वहाँ पहाड घटबाणा बाजार

संगता था जो अब गणगौरी बाजारके बतुप्यस पर बेला जा सकता है। इसमें विविध प्रकीर्ण वस्तुएँ विक्रयार्थ आती हैं। पुरोहितजी साहबके दृष्टिपथमें एक हस्तलिखित पुस्तक आई। जितना मूल्य उस विक्रयाने संगया विद्या भूषणजीके पास तत्काल नहीं था। अपरिचित होनेसे विद्येताम सबद नामों पर ही पुस्तक देना स्वीकार किया। विद्याभूषणजीने यहाँ जो परिचय ग्रन्थानुरागका दिया वह अत्यन्त दुर्लभ है। उन्होंने अपना अंगरखा उतार कर विद्येतामके पास न्यासके रूपमें रख दिया और यह कहते हुए ग्रन्थ खरीद लिया कि अभी प्रमुख लक्षण वाला व्यक्ति मूल्य लेकर तुम्हारे पास आएगा उसे यह अंगरखा सौदा देना। क्या किसी साहित्य प्रेमीका हृदय साहित्यके लिए इस प्रकार तटपा है ? यह केवल एक मूल्यक है उनके उत्कट विद्यानुरागकी।

विद्याभूषणजी द्वारा सम्पादित ग्रन्थोंकी सम्भी सूचीमें^१ धामुर्बेद ज्योतिष इतिहास तथा भूमिसन्धान काव्य और सन्तसाहित्य आदि विविध प्रकीर्णक हैं जिन्हें बेस कर उनका बहुमुखी पांडित्य सुव्यक्त होता है। जितना उनकी तीक्ष्ण दृष्टि और समर्थ सेखनीकी अकुठ धारासे बेला सिखा गया है वह धाणोल्सीख मणिके समान है जिस पर आलोचनाका कण्टीक्षभक्षुप्रहार भी मोघ है।

सन्त-साहित्य और इतिहास विद्याभूषणजीके विशेष प्रिय विषय रहे। इनके लिए उन्होंने आबूड अमस्वेदाबगाहम किया। विशेषतः सन्तसाहित्यके ग्रन्थोंमें उन्होंने जो आत्मामन्द प्रभुमय किया उससे यह छके रहते थे। यह लिखते हैं—

जितने ग्रन्थ हमें उपलब्ध हुए हैं उनके अवसाकमसे सात होता है कि समग्र रचनासमूह एक घटल अनन्यमगवद्भक्ति प्रभुप्रेम और सच्चे गहरे हृदिरसका तरंगमय समुद्र है। उसमें आचोपान्त आस्तरसका समुद्र है जिसकी गम्भीर घीमी अनुद्विग्न लीला-सोसतरंगमालाएँ ममरूपी अहाजकी सुमधुर पतिते अगबच्चरत्नारविन्दोंमें बहाये हुए ले जा रही हैं^२ और यही कारण है कि दादू मीरा मीरा जनगोपास प्रयतिधि और गरीबनास आदिने कुलम साहित्यपाषो

१-विदुषिकानिचारण २-सतसई ३-सुन्दरगा ४-तारावण सूर्य ५-महाराज मिर्जा राजा बयसिह ६-महाराज मिर्जा राजा मानसिह ७-महापति पि मीरजटन - ब्रजनिधिप्रकाशनी ८-सुन्दरप्रकाशनी ९-गुरु गोविन्दसिंहके पुत्रीकी बसेबसि ११-मीरा कृत्यप्रकाशनी १२-अमपुरकी कथाबसी १३-होलीद्वारा १४-महाराजा सवाई जयसिंह १५-धीरजतपिरोमणीजी १६-बागहवासी मण्ड १७-बाबलीसदह १८-भोगनि-पदा १९-विज्जमादित्य और उनके मकरल २०-रायबीस जलप्राम २१-सुन्दरीदस २२-सुन्दरमपूजक २३-बाबीदप्रकाशनी २४-अम गोपासप्रकाशनी २५-मधवात्मकामकरवला २६-भीमबाबनी सटीक २७-दादूचरित संघह २८-पिपरबंघोलति २९-बाजबसि प्रकाशनी ३०-गिरिनीसंघह सटीक ३१-गरीबवासप्रकाशनी ३२-टाकुर पिबसिहजी ३३-महापति श्रीपंके कवित इत्यादि।

निधिका रत्नरश्मियाँ सम्माले हुए वह कौस्तुभमणिसमुत्समित विष्णुके समान विद्युत्के मध्यमें धोभाषमान रहूँ है । उन्होंने ऐसी अनेक आन्तियोंको निमू स किया जो सन्तसाहित्य और साहित्यकारोंके रचना स्थान वेश बाल एवं प्रदिप्तांश आदिसे सम्बन्ध रखती थीं । मुन्दरग्रन्थावली और व्रजनिधिग्रन्थावलीकी बृहत् साधपूर्ण भूमिकाओंको पढ़ कर विद्याभूषणजीके गम्भीर अनुपासन प्रौढ़ पाण्डित्य और बिलक्षण सामर्थ्यका दुर्गाङ्ग परिषय प्राप्त किया जा सकता है । भीरा बहत् पदावली' एवं 'पत्रावली' को राजस्थान प्राध्यापिका प्रसिष्ठान जोधपुर द्वारा प्रकाशित करनेका उपक्रम धालू है ।

विद्याभूषणजीका इतिहास प्रम प्रसिद्ध था । वह कहा करते थे कि इतिहासमें मिथ्याको स्थान नहीं । ऐसे साहित्यकारके लिए जो मत्स्यसेवाको ही सफल मानता है इतिहाससे उत्तम वस्तु प्राप्त करना बटित है । स्वभावतः सत्यसंकी होनेके नाते वह ऐतिहासिक शोधप्रसंगोंको प्रामाणिकताकी प्रकाश्य बमौटी पर कस कर ही मत्स्यके रूपमें स्थिर करते थे । इनके द्वारा लिखित 'कनूवे दीलत महाराजा श्रीमिर्जाराजा मानसिंहजी प्रथम' 'मिर्जागजा जयसिंह' एवं अन्य ऐतिहासिक प्रसंग स्थायी सन्दर्भके रूपमें विद्वानोंके द्वारा मान्य किये गये हैं । इतिहासके विषयमें इनको अधिकारी विद्वान् मान कर ही देशके अन्त्याय इतिहासज्ञ उनसे निस्पावकी करके अपना मार्गदर्शन प्राप्त किया करते थे । जयपुरराज्यकी ओर से देशके प्रसिद्ध इतिहासकार सर महुनाम सरकारको राजकीय ऐतिहासिक पुरासगोंके सङ्ग्रहके आधार पर जयपुरराज्यका इतिहास मिलानके लिए आमन्त्रित किया गया था । श्रीमत्कारने जितन ही बर्षों तक सकल पुगालोंका अनुशीलन और मनन करनेके पश्चात् सन्धिपक्ष इतिहासके बहुतसे अध्याय लिखे भी थे । किन्तु किन्हीं कारणोंसे वह अन्तिम रूप नहीं प्राप्त कर सका । जयपुरके वर्तमान महाराजा साहब श्रीमवाई मानसिंहजीन पुरोहितजी महाराजका आमन्त्रित कर उक्त अग्रमाप्त कार्यको पूर्ण करनेका अनुरोध किया । स्वर्गीय विद्याभूषणजी उस समय भीराबृहत्पदावलीके कार्यमें एकांत भावसे संलग्न थे । इसलिये उन्होंने निश्चय किया कि भीरासम्बन्धी कार्यको पूरा करके वह इतिहासके कार्यमें हाथ लगा सकय । परन्तु महाराजा साहबका आग्रह अनुरोध बनता रहा कि भीराके कार्यका स्थगित करने भी इतिहासका पत्र पुरा करें । अन्तर्गत गत्वा राजनयन पुरोहितजीको यह स्वीकार करना पड़ा । भीरासाहित्यग्रन्थी मामकी को सन्धिपक्षे बाध कर रग दिया गया और वह इन इतिहासशोधन-सम्पादनके कार्यमें लग गये । उन्होंने सर महुनाम सरकार द्वारा निमित्त अध्यायोंको पढ़ा और उनमें आश्चर्यके लक्ष्योंका समावेश प्रामाणिक रूप कागजातके आधार पर

सही व्याख्या व बिदलेपण करते हुए किया। परन्तु, इतिहासका यह कार्य भी वह अपने जीवनकालमें पूरा नहीं कर सके और बीच में ही वासने अक्षय व्यवधान बाल दिया।

इससे मीरासम्बन्धी शोधमें जो अपेक्षित पूर्णता उनके हृदयंगम थी एवं जिसको वह सम्भव कर रहे थे वह भी छप रह गयी और इतिहासके वे बेपटन भी विद्याभूषणजीके सुपुत्र श्रीरामगोपालजी पुराहितके कथनानुसार पुनः महाशय साहित्यको यथावत् प्रत्यर्पित कर दिये गये।

प्रसिद्ध इतिहासज्ञ महामहोपाध्याय प० गौरीशंकर हीराचन्द घोषजाने अपने सस्मरणमें लिखा है कि विद्याभूषणजी इतिहासके अन्वेषक तार्किक एवं मगनशील व्यक्ति थे। इसीलिए मेरा उनका पत्रसम्बन्ध प्रायः होता रहता था। मुगल सम्राटोंकी ओरसे जयपुरनरेशोंकी सवारीके लिए प्रदत्त 'भाहीमगतिब'के क्रमोत्सङ्गकी जानकारी प्राप्त करनेके लिए स्व० विद्याभूषणजीसे श्रीघोषाजीने जो पत्रव्यवहार किया था वह बहुतसे सम्पुष्ट प्रमाणों और ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित है।

विद्याभूषणजीके महत्त्वपूर्ण पत्रोंका सङ्कलन जिनकी संख्या साढ़े छह सहस्र प्रायः है उनके धारमज दीयुग प० रामगोपालजी बी ए एस-एस बी के पास है। ये पत्र हिन्दी अंग्रेजी और उर्दू में हैं। हिन्दी पत्रोंकी छतनी राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर द्वारा करवादी गयी है तथा अन्य पत्रोंका निमक्ती करण श्रीरामगोपालजी साहब अपनी रग्गाबस्त्रामें भी पूर्ण मनोयोगसे करवा रहे हैं। श्रीरावूहत्पदाबलीका विस्तृत प्रामाणिक सग्रह विद्याभूषणजीकी अमर देन है। इसमें अद्यावधि अज्ञात मीराके छह सौ पदों का अद्भुत सङ्कलन किया गया है जिनकी मात साढ़े तीस सौ पदोंके साथ पूर्ण संख्या नौ सौ पचासके समयमें है। मीरासम्बन्धी अज्ञात पदोंका यह उद्धार विष्णुके गजेन्द्रमोक्षकी अथवा बराहके धरा-उद्धारकी स्मृति दिलाता है। विद्याभूषणजीने देशके कोने कोनेसे पत्रव्यवहार कर मीराके सम्बन्धमें अभूतपूर्व जानकारी प्राप्त की थी। मीराके जितने पद उन्हींने प्राप्त किये उनको मापा भाव वाली भोक्तृभूति और परम्परा आदिकी प्रामाणिक कसौटियों पर उन्हींने परखा है और सौ टंफ मुक्कको ही मीराबूहत्पदाबलीमें स्थान दिया है। यद्यपि विद्याभूषणजीके पास समय-समय पर आने वाले विद्वानों और उनके बाद भी पुनर्हित श्रीरामगोपालजी से सम्पर्क साधन वाले कतिपय आधुनिक शोधकर्ताओंने इस संकलनसे आघातीत साम उठाया है और स्वतन्त्र निबन्धोंकी रचनाके रूपमें प्रकाशित भी करवा दिया है फिर भी स्वर्गीय विद्याभूषणजीके पत्रव्यवहारसे ऐसी अनेक बातें सम्मुख

आएगी जो मीरांक जीवन काव्यसाधना और भक्तिपथ पर अमिनव प्रकाश निकोप करत हुए कितनी ही गवेषणाग्रन्यमोंको सुचमानेमें परम सहायक सिद्ध होंगी ।

विद्याभूषणजी एक समर्थ भूमिकालेखक भी थे । अनेक ग्रन्थकार ग्रन्थवा सम्पादक उनसे भूमिका लिखवाने उपस्थित हुआ करते थे । जिस पुस्तक पर वह भूमिका लिखना स्वीकार कर लेते थे उसमें केवल उपचार निम्नानेके लिए ही कसम नहीं उठाते थे । अपितु वह उस ग्रन्थको सम्मानको विषयवस्तु और उसके प्राप्त अप्राप्त तथ्योंको प्रचुर मात्रामें सगृहीत कर पूर्ण सूक्ष्मेक्षिकाके पश्चात् कर्तव्य साधने बैठते थे । यही कारण है कि ये भूमिकाएँ इतनी उत्कृष्ट होती थीं कि सम्पादक ग्रन्थवा ससकका परिचयम निखर उठता था । काशी नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित व्रजनिधिग्रन्थावली और दादू कविया गोपास सुन्दरदास और रघुनाथरूपक गीतारो तथा बाकीदास पर इस प्रकारके सम्पादन और संस्करणकी पुष्प प्रौढ छाप देखी जा सकती है ।

नागरीप्रचारिणी सभा काशीके वह भाजीवन सदस्य और प्रमुख स्तम्भोंमेंसे अग्र्यतम थे । विद्याभूषण तो वह थे ही विनयभूषण भी प्रथम कोटि के थे । उनका प्रकृतिम सारत्य ध्यानके समान निष्काम एव निरुपचार था । धर्म और सत्यके प्रति अटल निष्ठा सत्प्रचारका पालन स्वाध्याय सद्दिष्णुता एवं विचारस्पर्धे आदि गुणसमूहोंने उन्हें अपना एकमात्र आश्रय मान लिया था और वह स्वयं भी इन गुणपुंजोंमें इतने तदाकार हो गये थे कि गुण और गुणोका पार्यव्य देख पाना बन्धनपाटोंकी सन्धिकीस उखाड़ना था ।

इतने दिव्य मध्य और और विद्वान् होते हुए भी वह मानासक्ति और आत्मविज्ञापनके पक्षसे कबीरजी आदरके समान अस्पृष्ट थे । 'दास कबीर जतन से छोड़ी क्यों की त्यों घर दीनी बदरियाकि वह उपमान थे । एक उदाहरण इस प्रसंग में उपादेय होगा ।

काशी नागरीप्रचारिणी सभाने विद्याभूषणजीको उनके ७५वें जयं पर्व पर सम्मानित करना निश्चित किया । सभाके लिए ऐसा आयोजन करना उचित ही था । मित्र परिचितोंको भी यह जान कर हृष होना स्वाभाविक कहा जाना चाहिए । उमंग मरे बाबूतर पीताम्बरवत्त बड्ढवालने समयसे कुछ पूछ ही विद्याभूषणजीको पत्र द्वारा इसकी सूचना पहुँचा दी । वस पुराहितजी का सरस निरमिमान हृदय इस मानमरे आयोजनके तुमुमभित्तनसे बिचरित हा उठा । जहाँ ऐसे अजनबी प्राप्तिके लिए अग्र्य उत्कण्ठित रहते हैं वहाँ विद्याभूषणजीको हुरहम्नी अर्धयने घेर लिया । मसा सरस्वतीके एकान्तमस्तिरमें उरामनामीन पुत्रारीकी यह विष्ण कैसे खिचकर होता और कैसे वह इस औपचारिकताक पीछे धाता जाता सेता वेता रहता ?

उन्होंने कगोर शपथ रखते हुए इस ध्यामोजनका तत्काल रद्द करनेके लिए अपना धम्वीकृतिमन्त्रण बुझाके साथ निश्च भेजा । उनके घरोंमें कहें तो पुरोहितजीने इस प्रस्तावको विनयके साथ दोन प्रार्थना करते हुए ठुकरा दिया । परन्तु सभा के अन्य सभी कार्योमें विद्याभूषणजीने सलग्नमनस्कतासे भाजीवन सहयोग लिया । गीताके म्थितप्रज्ञलक्षणोंसे विभूषित विद्याभूषणजीका विनय त्याग समभाव और सहिष्णुता बिरकाल तक अविस्मरणीय रहेंगे ।

अन्तमें एक विषयदर्शनकी झंकी प्रस्तुत करनेका सोम कसम सवरण नहीं कर पा रही है । बात अस्मिन् भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनके जयपुर अधिवेशनके प्रथम दिनकी है । एक छह फीट लम्बे धानानुवाहु तेजस्वी गौरवर्ण तुपारस्तातखतपुसरस्वतीप्रतिम बूझ पुरण जिन्होंने घुड़ीवार पायजामा मध्य श्वेत अवरस्ता गुसावी पगड़ी और कंधे पर सांगानेरी उत्तरीय पहना हुआ था सहारेके लिए हाथमें मूठदार छड़ी धामे हुए मक्के एकान्त कोनेमें घुपघाप भाकर बिराजमान हो गये । यह माननीय विद्याभूषणजी थे । सम्मेलन का सम्मर्द था । बहुत जन भा जा रहे थे । कोलाहल ख रहा था । सभी शब्देय श्रीपुरुपोत्तमदासजी टडन मध पर भाये । वह पुरोहितजीके मद्यसौरभके मधुदत थे परन्तु साक्षात्कार सुरमित श्वेत कमलके मध्य पाथिव व्यक्तित्वका अभी गही हुआ था । विद्याभूषणजीने भी टडनजीको सुना था देखा नहीं । मध जैसे ही टडनजीको पता चला कि विद्याभूषणजी भाये हुए हैं वह उनकी ओर झुतगतिसे मिसनोत्सुक होकर चले । फिर तो श्याम सभोने टडनजी और तुपारघौत विद्याभूषणजी एक-दूसरेसे इस प्रकार लिपट गये कि जैसे समान-उद्देश्यपधगामिनी ममुना-गगाकी धाराए अन्तश्छन्न सरस्वतीको लिये संगम पर एक हो गई हों ।

वह व्यक्तित्व वह विभूतिभूषित महासत्त्व अपनी जीवनयात्राके अन्तिम पवचिह्नोको साहित्यके राजमार्ग पर सुजनके मणिदीपकोंकी अक्षयपक्ति अक्षर स्नेहसे अगमग कर भव प्रस्थान कर गया है । सेप है उसकी अक्षरसम्बद्ध कीर्ति जो हमारे स्मृतिपुटों पर अमृतमहरियोंके क्षत-क्षत उमिभग तरमित कर रही है करती रहेगी । विद्याभूषणजी यदि अपने अमस्वेत्परिष्कृत उपक्रान्त ग्रन्थोंको (मीरा जयपुर राज्यका इतिहास प्रभृति) स्वयंकी भाँसोंसे मुद्रित प्रकाशित एवं सम्पन्न देख पाते तो उनसे अधिक सृष्टिलाभ साहित्यिक सहृदयोंको ही होता परन्तु अब तो उनकी पुण्य स्मृतिके काननमें ही ये सदाबहारी कुसुम खिलखिला कर विद्याभिनयभूषण पुरोहित हरिमारायणजीकी कीर्तिमजरियोंकी विकीर्ण करते रहेंगे । एवमस्तु ।

स्वर्गोय पुरोहित हरिनारायणजी, बी ए -

विद्याभूषण - ग्रन्थ - संग्रह - सूची

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कला	प्रिण्टिंगमस	पक्षसंख्या	विशेष विवरण आदि
(१)	शत्रुघ्नीके पुत्रकर सार्योका पद्ये		१८४६	३१७-३२१	
(११)	कबीरजीकी २६ साजियों पर टीका		"	३२१-३७३	
(१२)	कबीरजीके १२३ पद्यों पर टीका		"	३७३-३८३	
(१३)	आमरेबजोके २३ पद्यों पर टीका		"	३८३-३८४	
(१४)	रेवतके ३ पद्यों पर टीका		"	३८४-४४४	
(१५)	हरिदासजीके १२८ पद्यों पर टीका		"	४४४-४४५	
(१६)	मुकुन्द भारतीके २ पद्य तथा बलनाथीके ४ पद्य टीका सहित		"	४४५-४४६	
(१७)	पुत्रकर संग्रह— सबबानसि १२ प्रश्नोंके उत्तर, गरीबज गरीबकी भाष्य होकोकर सात पद्य, ४ शिष्या ३ गुण स्वभाव भवभाव दो पद्य ।		"	४४६-४४७	
(१८)	नामदेवजी के दिग्गजोपनिषदोंकी टीका (पदुक्तकोष; दक्षिणी पद्योंकी भाषा)		"	४४७-४४८	

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कृति	निर्माणसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण यदि
(१२)	सुरकर संग्रह— कविता प्रयोगविधीप्रमाण राजकोश कविता २ व ज्ञान पार्वत भाग २ कविता हलोक समग्रप्रमाण ब्रह्मसुक्ति २ सूर्य (बहुमूर्ति ४ मुख ४ देव १ पाद १ गुण १ शरीर) प्राक्तमोका प्रमाण शत्रुनाथी गौर कबीरवाणीमें) सगत संन्यास सनत्कुमार गौर ब्रह्मसूत्र तथा ज्ञानकोश काव्य (संस्कृतमें) जैतरामजीकी सौरभका कुर काजीलको कविता ४ वेदमें ब्रह्मास्त्र १ कल्प ब्रह्मसूत्रकी संख्या राजोबीको कविता रेखा मुक्तमाली कबीरोंका मेर मुक्तिपथि कास्तोमें गोपिके हलोक १	राजू व कबीर	१८४६ " " " "	४ भाग ४ भाग ४ भाग-४ २ ४ भाग ४११ भाग ४१२ भाग ४१२-४१४	

क्रमांक	ग्रन्थनाम	पानों	निर्गमितपत्र	पत्रसंख्या	विशेष विवरण धारि
	प्रायश्चित्त सूत्र ४		१८२		
	वीरकी गाथी		"		
	राम-नरकमहाभारतका श्लोक		"		
	रायोकी गाथी १		"		
	बैरवकी गाथी १		"		
	सुख रातु वीतराजकी वन				
	रघुन विनो				
	भायकल वर कणक करिता		"	४१२५	
	१४ विद्याके प्रायश्चित्तिक पत्रे			"	
	ध्यायी सम्प्रदाय धीर रातु				
	बन्धका धारि				
	२४ तिथि				
	सप्तश्लोकी योग		"	४१२५	
	बहु-श्लोकी भायकल				
	पञ्चाङ्गकी गाथ		"	"	
	इन्द्रलका पर शोक		"		
	नरसिंहनामा		"		
	काठिर तथा मोहितके नकल		"	४१२५	
	मुद्राविपणना		"	"	
	४ सूत्र		"		
	वर 'माली विन राबे राम'		"	४१२५	

विशेष विवरण

प्रमाण

वर्ग

संख्या

ग्राम

ग्राम संख्या
१०१ १३ ग्राम संख्या १०१३
ग्राम

ग्राम संख्या
ग्राम संख्या

(१०) ग्राम संख्या

ग्राम संख्या
ग्राम

(११) ग्राम संख्या

(१२) ग्राम संख्या (५२ ग्राम)

ग्राम

ग्राम संख्या

(१३) ग्राम संख्या (१३ ग्राम)

ग्राम संख्या

(१४) ग्राम संख्या

१०१३

"

५१३-५१३

५१३-५१३

५१३-५१३

५१३-५१३

५१३-५१३

ग्राम संख्या १०१३ ग्राम संख्या १०१३
ग्राम संख्या १०१३ ग्राम संख्या १०१३
ग्राम संख्या १०१३ ग्राम संख्या १०१३

ग्राम संख्या १०१३ ग्राम संख्या १०१३
ग्राम संख्या १०१३ ग्राम संख्या १०१३
ग्राम संख्या १०१३ ग्राम संख्या १०१३

ग्राम संख्या १०१३ ग्राम संख्या १०१३
ग्राम संख्या १०१३ ग्राम संख्या १०१३
ग्राम संख्या १०१३ ग्राम संख्या १०१३

ग्राम संख्या १०१३ ग्राम संख्या १०१३
ग्राम संख्या १०१३ ग्राम संख्या १०१३
ग्राम संख्या १०१३ ग्राम संख्या १०१३

ग्राम संख्या १०१३ ग्राम संख्या १०१३
ग्राम संख्या १०१३ ग्राम संख्या १०१३
ग्राम संख्या १०१३ ग्राम संख्या १०१३

क्रमांक	पञ्चनाम	कृपा	मिपिपत्र	पत्रसंख्या	निवेदन विवरण प्राप्ति
(२३) मानसमुद्र		मुख्यदास	१८२६	४७२-४६४	रचनाकाल-१७१ । २ उपकाशों में इसकी प्रतिलिपि हुई है । समस्त कृष्ण ३ ५ समस्त प्रतिलिपि ६ ।
(२४) रत्नचर्चिका कवित्त	(४ प्रश्न ४६ प्रश्न)	रत्नचर्चिका		४६४-३ ३	प्राप्त कृत्य का प्रयोग बहुमता से किया गया है ।
(२५) सर्वज्ञ शास्त्री (मोवावाली)		भोजवन		३ ३-३ ६	रचनाकाल-१८८३ । प्रयोग से स्वर और वादकाल-३३ में ३४ कृत्य का प्रयोग है ।
(२६) सुविशाल विद्यावती		मुख्यदास		३ ६-३१	
(२७) विवेक-विद्यावती				३१०-३११	
(३) शरद-विद्यावती				३११-३१३	
(३१) सर्वज्ञ (३४ प्रश्न ३४३ सर्वज्ञ)				३१३-३१४	
(३२) श्रीधर या बहुमानस राजाजी कथा				३१४-३१५	
				३१५-३१६	यह कृत्य पाठ कथाओं में प्रत्यक्ष हुआ है । यह शास्त्री की कथागत को कथा है ।
सूचना—					
(१) शास्त्री शास्त्री सुंदर शास्त्री ३१६१ प्रश्न ३१७		शास्त्री	१८२५	१-२१	विलोको प्रकाशकाल में कृत्यप्रकाशको सुंदर-प्रकाश में समीचीनता द्वारा निश्चित । यह पाठ सुंदर है ।
(२) शास्त्रीने यह सुंदर ३४ ४४ रात्र २७		"		२१०-३१३	सुंदर है ।
(३) शास्त्रीप्रकाशकी कथावली परावर्त । प्रयोग ३६२ शीला २४ शास्त्री २७		कथावली		३१३-३१४	सुंदर है ।
(४) विनीतनकी परावर्त सुंदर २८		पञ्चनाम		४६४-४६६	पञ्चनाम वीणाकी सुंदरप्रकाश में है ।

क्रमांक	शुद्धता	वर्ण	मिथिमास	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(२२) ज्ञानसमग्र		गुम्बरवात	१८४२	४७२-४८४	रक्षाभास-१७१ । २. बन्नासों में इन्की मुति हुई है । समस्त पुत्र ३ १ समस्त स्त्री १ ।
(२३) रक्षावर्णीका कविता (४ पृष्ठ ८२ पुनः)		रक्षावर्णी	"	४८४-४९३	प्रायः संपन्न पुत्र का प्रयोग बहुमता से किया गया है ।
(२४) सर्वज्ञ शास्त्री (जोधाबावरी)		भोजवास	"	४९३-४९८	रक्षाभास-१६८३ । लोकार से त्वर और अन्त्य-कर्म में २२ अक्षय पुत्र है ।
(२५) श्रुतिशेखर चित्ताम्बरी		गुम्बरवात		४९८-५०१	
(२६) विवेक-विमलम्बरी				५००-५०१	
(२७) शारद-चिन्ताम्बरी				५०१-५०३	
(२८) सप्तमा (३४ पृष्ठ ५३३ सर्वज्ञा)				५०३-५०८	
(२९) श्रीवर या कुम्भवास राजाकी कथा				५०८-५०९	यह पुत्र पाठ अन्नासों में पुत्र हुआ है । यह शत्रुकी को करामात को कथा है ।
सूचना—					
(१) राजा शाही मुंड शाही १५६२ पृष्ठ १०		राहु	१८४८	१-२१	शिली घक्करपकमें बन्नासवासीकी पुत्र-परम्परा में सन्तोषदास द्वारा लिखित । यह पाठ सुंदर है ।
(२) राजाकी पर मुंड पर ४२ पृष्ठ २७		"	"	२१०-२२३	पुनः ।
(३) राजाशाहीकी बन्नासवासी परम्परा । चौपाई ११२ पृष्ठ २४ शाही २७		बान्नासवात	"	२२३-२२८	
(४) शिलीशाही परम्परा पुनः २४		रक्षाभास		४२३-४२८	रक्षाभास वीणाकी पुनःपरम्परा में है ।

क्रमांक	विवरण	प्रमाण	विवरण	प्रमाण
१	१. गोपनीयता का प्रमाण	१०००	१. गोपनीयता का प्रमाण	१०००
२	२. गोपनीयता का प्रमाण	१०००	२. गोपनीयता का प्रमाण	१०००
३	३. गोपनीयता का प्रमाण	१०००	३. गोपनीयता का प्रमाण	१०००
४	४. गोपनीयता का प्रमाण	१०००	४. गोपनीयता का प्रमाण	१०००
५	५. गोपनीयता का प्रमाण	१०००	५. गोपनीयता का प्रमाण	१०००
६	६. गोपनीयता का प्रमाण	१०००	६. गोपनीयता का प्रमाण	१०००
७	७. गोपनीयता का प्रमाण	१०००	७. गोपनीयता का प्रमाण	१०००
८	८. गोपनीयता का प्रमाण	१०००	८. गोपनीयता का प्रमाण	१०००
९	९. गोपनीयता का प्रमाण	१०००	९. गोपनीयता का प्रमाण	१०००
१०	१०. गोपनीयता का प्रमाण	१०००	१०. गोपनीयता का प्रमाण	१०००

राजस्थान राज्यविद्याप्रतिष्ठान—विद्याभूषण-पाठशाला-मुंबई]

वर्ग	वर्गनामा	कर्ता	निर्दिष्टमस	परमसंख्या	विशेष विवरण आदि
(४)	(६) गुरुद्वीपे कादि कुल ६६७	समय		२६ २६२	
		बाजिदा		२७२	
		बालना		२६	
				२६१ २६२	
				२६३ २६४	
		बतखाल		२६२ २६३	
		रायो		२६६	
				२६७	
		गुरतो (गुलती)		२६८ २६९	
				२७० २७१	
				२७२ २७३	
				२७४ २७५	
				२७६ २७७	
				२७८ २७९	
				२८० २८१	
		देस		२८२	
		नामक		२८३ २८४	
		बनगोपाल		२८५ २८६	
		पीपा		२८७ २८८	

क्रमांक	व्यक्तनाम	कर्ता	निमित्तकाल	पत्रव्यवस्था	विशेष विवरण यादि
५	(४) बाबरीना	रामानन्द	१९२८	१ १-१ ७	अपराध विष्णुके सहूल भागसे से जाने हुए २८ नाम है ।
	(५) उमेश्वरीना	जनसेवक	"	१ ७-१४	
	(६) प्यारिष नाम (संस्कृत)			१४ -१४२	
	(७) रासचक्रवर्त्यजी	नरहराज	"	१४२-२ ७	
	(८) रामरत्नासोत्र	रामानन्द		२ ७-२१६	प्रारम्भिक १७ कुल वषोंसे
	(९) रामलीला	नरहराज		२१६-२२८	
	मुद्रा—४ इतिहास				
	(१) दीप (कुल सेरी घाबाव में गुल कर गयी)		१९१४	"	उपुर्ण ।
	(२) कुल कविता (नरहराज की भावनी)			"	
	(३) सुभाषनालीला सुभाष नामनी			"	
	(४) बाबुमाती	जनसेवक	१९१९	१-४१	
७	(५) प्रवर्धित	श्रीमन्महा रत्नकवि		४१-४८	इन्के कई पत्र भारत कीयन प्रेष' में १९१८ में छपे हैं । मुख्य १ घाबे । ये पत्र भावनी प्रचारितों तथा बाबुजी कीसे छपे हैं । इनमें जो पत्र छाप हैं उनके नाम ये हैं—
	(६) कर्मसंश्लेष	हिरराज	"	४८-७१	
	(७) भद्रविनाय		"	७१-१२८	
	(८) उवाचित		"		
	मुद्रा—२ इतिहास				१-६
	(१) प्रवर्धनाली (कीवर्धना)	सुभाष नामनी- किटकिट			

क्रमांक	उपबन्धनाम	वर्ग	निर्माणमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण पार्श्व
					बहिरङ्गीता गुणवत्तागतक भूपायगतक रत्नरत्नागतको, नवसंस्कारी गुणसंस्कारी बग विहाररत्नीता रंगविहाररत्नीता रत्नविहार पानवहविनीय रंगविनीय रंगविनीय गुण- सीमा रंगगुणगत मानरत्नीता रत्नगतता प्रेमगतता प्रेमार्थनि पानसिगार और भजन गतक भक्तनामागतको नामन भूवत्पुण्य कथा भजनकररत्नीता ।
(२) वैदिकगीता		प्रबन्धनाम	१८८६	७-१३	रत्नगीता १६८६ बहुत उत्तम काव्य है ।
(३) बाराहपत्रगतक				१३-२६	
(४) मन-विनीय				२६-३६	प्रमुख केवल ६१ छंद है ।
(५) नवहरीगीता		प्रभाषीनिर्णय	"	३६-४२	कुछ रघुवत् पद्य ।
गुरुका—१६ कृतिपदा				संख्या ४३१	
(१) शिवरात्रिगीता वाणी (पं.)		सिवावाक	१८८२	१-११	सि क मुकुरवाक रत्नरत्नगत-मुमुक्षु संपत्ता नाई शारा मन्त्र गुरुका ।
१ मुमुक्षुगीतागीत-८७ दोष्टे				"	
२ मुमुक्षुगीतपद्य ७ बीपाई				"	
३ नावार्थिगीतागीतपद्य १२१				"	
बीपाई				"	
४ विवाहगीतागीतपद्य २६ दोष्टे				"	
५ कण्ठगीता पद्येक पद्योमे ३४				"	
६ कविता				"	

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	निधियमय	पत्रसंख्या	विषय विवरण पारि
(क) (१) १	रघुराज काव्य	गोरखनाथ	१८८२	१७४५	
४	दीपावलीयोगदान	"	"	१७४-१७६	
२	भक्तभक्तानां काव्य			१७६-१७७	
६	वद ६			१७७-१७८	
७	गोपीकावली काव्य			१७८-१८	
८	सुन्दरीकावली काव्य		"	१८-१८१	
९	राजवंशकावली काव्य		"	१८२	
१	वाल्मीकीय महाभारतकावली काव्य	"	"	१८२-१८४	
(ख) (१) १	नामदेवजीका काव्य	नामदेव	१८४-१८७	१८४-१८७	
(२)	रघुनाथजीका काव्य	रघुनाथ	१८७-१८	१८७-१८	
(३)	दीपावली काव्य	दीपा	१८०-१८१	१८०-१८१	
(४)	भक्तभक्तानां काव्य	भक्तभक्तानां काव्य	१८१-१८२	१८१-१८२	
(क) (१) १	विद्याभूषण काव्य	"	"	१८२-१८३	
(२)	दीपावलीकाव्य	"	"	१८३-१८४	
(३)	रघुनाथजीका काव्य	रघुनाथ	१८४-१८५	१८४-१८५	
(४)	दीपावलीकाव्य	दीपा	१८५-१८६	१८५-१८६	
(५)	भक्तभक्तानां काव्य	भक्तभक्तानां काव्य	१८६-१८७	१८६-१८७	
(६)	वाल्मीकीय महाभारतकावली काव्य	वाल्मीकीय महाभारतकावली काव्य	१८७-१८८	१८७-१८८	
(७)	गोपीकावली काव्य	गोपीकावली काव्य	१८८-१८९	१८८-१८९	
(८)	सुन्दरीकावली काव्य	सुन्दरीकावली काव्य	१८९-१९०	१८९-१९०	
(९)	राजवंशकावली काव्य	राजवंशकावली काव्य	१९०-१९१	१९०-१९१	
(१०)	वाल्मीकीय महाभारतकावली काव्य	वाल्मीकीय महाभारतकावली काव्य	१९१-१९२	१९१-१९२	

श्रीराजी वरुण प्रोता भाषा अवली कथा ।

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	विक्रयमूल्य	पत्रपुष्पा	विशेष विवरण यादि
(क)					
(१४)	मुद्रासंसारकोषग्रन्थ	श्रीमन्महा रत्नाश्रमिण्य	१८८३	२२-२३६	
(१५)	अनुमतिरहितग्रन्थ	अनमोल		२३६-२४६	
(१६)	गुणवर्धनारामग्रन्थ	वार्तिक		२४६-२५६	
(१७)	विचारमाला वेदान्त	महाशय		२५६-२७१	रत्नाश्रम-में १७२६ (८ विद्यामंथे पुष्प) मि. क. भाष्यबहाल ८ विद्याम मि. क. भाष्यबहाल
(१८)	मोक्षमार्ग रत्नाश्री कथा	अनमोल		२७१-२८१	
(१९)	दानमाला	श्रीकृष्णदास		२८१-२८५	
(२०)	गुणवर्धनारामग्रन्थ	वार्तिक		२८५-२९१	
(२१)	अनुमतिरहितग्रन्थ (संग्रह)	वार्तिक		२९१-२९५	
(२२)	नरसीजीकी हृदयी	राजदास		२९५-२९८	
(२३)	पद्मकर दोहाग्रन्थ २३ दोहे	वार्तिक		२९८-३००	
(२४)	लालबाठकी चिन्तावली १६६ छंद	लालदास		३००-३०६	
(२५)	अनुमतिरहितग्रन्थ	अनमोल		३०६-३११	१६ विद्यामंथे पुष्प । रत्नाश्रम-१७३४ कागुण मुद्रि ६ मि. क. - मुद्राग्रन्थ रत्नाश्रमिण्य गोप वार्तिकमंथे ।
(२६)	महादेवनाया ७२१ दोहे	दासदास अष्टाश्रम- श्रम	१८८६	३११-३१६	महाभारते पद्मपर्वणि अर्धमुद्रितरत्नाश्रम ४ कागुणों में पुष्प । नोपी-मुद्रितरत्नाश्रम 'पुष्प तो दासों कोय मुष्प सं मुद्रित होती को छंद'
(२७)	परमेश्वर	अनमोल उपरोक्त		३१६-३२०	पर १ भगति मुद्रितो हो चीकी राह
(२८)	विद्यार्थिबली (एक मुद्रा विद्या- माला २१ कलमें)	मुद्राश्रम		३२०-३२६	
(२९)	वीरवीरिणी वर १	वीरवीरिणी		३२६-३३०	

क्रमांक	व्यक्तिनाम	वर्ग	निमित्तमात्र	पञ्चकथा	विशेष विवरण
(३) मुलान १			१८८६	४३-४३१	२ स्रोतमा विधानको 'अपेक्षाको कमी'को बढीरि म कटिपे कोषी सम्पूर्ण वसन्त मूल ३ सुपुकार आदेशमा माथे
१	पदका २ कृतिनी			सम्पूर्ण स २१६	
(१) विवेकविमलामणि				१-३	
(२) इन्द्रावती				२-३	
(३) अन्तराष्ट्रियी योग-मर				२-६	
(४) बाबु अरु				६-७	
(५) गोपीकण्ठ योग-मर				७-८	इसके कृतिनी नाम आत्मपरमसार मूल सुविज्ञ सिद्धा ६ बहू पदवृत्ति ६। (सं)
(६) पदपत्र				८-९	
(७) अन्तराष्ट्र				९-१०	
(८) पदपत्र नामा मुलान			१८४	१०-११	मि. क-इन्द्रावती नामावलीसहित आत्मपरमसार
(९) अन्तराष्ट्रियी बाप्री				११-१२	
(१०) अन्तराष्ट्र				१२-१३	
(११) पदपत्र				१३-१४	
(१२) विवेक विमल				१४-१५	
(१३) विवेकविमल				१ - १ - १	मि. क-इन्द्रावती नामावलीसहित
(१४) विवेकविमल				१ - १ - १	
(१५) अन्तराष्ट्रियी पदपत्र				१५-१६	

क्रमांक	ग्रामनाम	कच्चाई	निर्माणमय	पंचसंख्या	विवरण विवरण प्रादि
(क)	(१४) मुजर्तगाराजोपगम	सोमदास राजभक्तिमय	१५८४	२२०-२३६	
	(१५) अमृतलक्ष्मिराम	अननोपाल	"	२३६-२४२	
	(१६) मुण्डकिजारागामोपगम	बाबिर	"	२४२-२४४	
	(१७) विचारकाला देवग	सनाचदास	"	२४४-२७१	रजमाकाल-से १७२६ (८ विधायसे पुर्ण) लि. क. माचबदास
	(१८) सोधुरद राजकी कवा	अनाचदास	"	२७१-२८१	८ विधाय लि. क. माचबदास
	(१९) रामलीला	भीमजदास	"	२८१-२८२	
	(२०) मुण्डकिजारागामोपगम	बाबिर	"	२८२-२८१	
	(२१) अमृतगम (संपद)	मिथिन	"	२८१-२८२	
	(२२) नारसीजीकी हुथी	राजदास	"	२८२-२८८	
	(२३) अकर रोधुगुपगम २३ रोड़े	मिथिन	"	२८८-३००	
	(२४) जालदासकी विष्णुदेवी २२६ हुद	जालदास	"	३००-३०६	
	(२५) अ. कर्करिगम	अननोपाल	"	३०६-३३१	१२ विधायसे पुर्ण ।
	(२६) माण्डेभावा ७२१ रोड़े	खालदास अनाचदास	१८८६	३३१-४	रजमाकाल-१७३४ अमृतगुधि ४ लि. क. - मुकुंददास अनाचदासमिथिन गीब कारविगमसे ।
	(२७) बर्नोबदार	अनाचदास अरोराल	"	४००-४१८	सुधाभारते मकरवर्षिण बर्नोबकिरलबदार, ४ अमावसी में पुण ।
	(२८) विष्णुदेवी (राज मुठा किला- काल २१ कच्चे)	सुरदास	"	४१८-४२२	बोली-अनुवर्तमान "पुन तो माले कोय बल न हुकर होसी को घड़ी"
	(२९) भीरजीके घर २	भीरजीबाई	"	४२२-४३७	घर १ "अमलि हुदीनी हो भीजी राह"

क्रमांक	व्यक्तनाम	वर्ग	निगमन	वयस्कता	विशेष विवरण धारि
(३) मुरार १			१८८६	४१-४३१	२ 'सैं तो राम बिकसो' 'मुन्शी कहे तो बहोरि न कहियो' शोको समुझ यत्नाउ नुद २ मुन्शीर कारनिय माये
८ मुदका २ इतिहास				सकपत्र सं २११	
(१) विश्वेन्द्रचिन्तामणि	मुन्शीराम			१-३	
(२) इन्दुमारकोष	सत्ताराम			४-५	
(३) भस्वरीजीको योग-ग्रन्थ	कामू			१-६	
(४) पाय सैत्र	काम्यकित			१-७	
(५) गोदीकाहा कोम-ग्रन्थ	रामचरण			७-८	इसके कर्ताका नाम आतामरप्रसाद भूष मुन्शी लिखा है यह समुझ है। (सं)
(६) लघुपत्र				८-१२	
(७) भस्वरीजी	सत्ताराम			१२-१	
(८) रेणुका लोका मुरा	मेघाराम			१-११	
(९) लतामुराजीकी बाजी	सत्ताराम		१८४	२१-२६	लि. क-इन्द्राराम मानदासलिय आबकामये
(१०) बड़ा प्याल				८७-१२	
(११) दाद-रेणुका				१२-१३	
(१२) निम्न-निम्नार	लोकाचाम निरय शाल लिय			१३-१	
(१३) विस्तारवि	रामचरणदाग			१-१८	लि. क-मन्दीराम आबकामये
(१४) शूरिकार-नाल	प्यालदास			१२-१३२	
(१५) योगदीकी परकी	पद्मनाराय			१३२-१४३	

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	मिथिगमय	पञ्चकक्षा	नियोजित विवरण प्राप्ति
(१४)	गुणवर्धनसंश्लेषण	देवनारायण रत्नकराचार्य	१८८३	२२-२३६	रत्नकराचार्य-जं १७२६ (५ विद्यामसमें पुर्ण) मि. क. माधवराव ५ विद्याम मि. क. माधवराव
(१५)	संस्कृतशिल्पविद्या	अनन्दाचार्य		२३६-२४६	
(१६)	गुणवर्धनसंश्लेषण	बाबू		२४६-२५६	
(१७)	विद्याभूषण विद्या	अनन्दाचार्य		२५६-२६६	
(१८)	गुणवर्धनसंश्लेषण	अनन्दाचार्य		२६६-२७६	१६ विद्यामसमें पुर्ण । रत्नकराचार्य-१७३४ कापुष सुदि ३ मि. क. माधवराव अन्व-मण्डल-मुंबई कारिकावली
(१९)	गुणवर्धनसंश्लेषण	अनन्दाचार्य		२७६-२८६	
(२०)	गुणवर्धनसंश्लेषण	अनन्दाचार्य		२८६-२९६	
(२१)	गुणवर्धनसंश्लेषण	अनन्दाचार्य		२९६-३०६	
(२२)	गुणवर्धनसंश्लेषण	अनन्दाचार्य		३०६-३१६	४ कापुषों में पुर्ण । गोपी-गुणवर्धनसंश्लेषण 'गुण' हो जाने को पुन पुन न गुणवर्धन होनी को नहीं ५६ १ "अन्व-मण्डल" हो नीकी 'राव'
(२३)	गुणवर्धनसंश्लेषण	अनन्दाचार्य		३१६-३२६	
(२४)	गुणवर्धनसंश्लेषण	अनन्दाचार्य		३२६-३३६	
(२५)	गुणवर्धनसंश्लेषण	अनन्दाचार्य		३३६-३४६	
(२६)	गुणवर्धनसंश्लेषण	अनन्दाचार्य		३४६-३५६	४ कापुषों में पुर्ण । गोपी-गुणवर्धनसंश्लेषण 'गुण' हो जाने को पुन पुन न गुणवर्धन होनी को नहीं ५६ १ "अन्व-मण्डल" हो नीकी 'राव'
(२७)	गुणवर्धनसंश्लेषण	अनन्दाचार्य		३५६-३६६	
(२८)	गुणवर्धनसंश्लेषण	अनन्दाचार्य		३६६-३७६	
(२९)	गुणवर्धनसंश्लेषण	अनन्दाचार्य		३७६-३८६	
(३०)	गुणवर्धनसंश्लेषण	अनन्दाचार्य		३८६-३९६	४ कापुषों में पुर्ण । गोपी-गुणवर्धनसंश्लेषण 'गुण' हो जाने को पुन पुन न गुणवर्धन होनी को नहीं ५६ १ "अन्व-मण्डल" हो नीकी 'राव'
(३१)	गुणवर्धनसंश्लेषण	अनन्दाचार्य		३९६-४०६	
(३२)	गुणवर्धनसंश्लेषण	अनन्दाचार्य		४०६-४१६	
(३३)	गुणवर्धनसंश्लेषण	अनन्दाचार्य		४१६-४२६	

क्रमांक	व्यवसाय	वर्ग	निगमन	पत्रिका	विषय निबन्ध यादि
(१) मुरदा			१८८६	४१ - ४३१	२ में तो राम विद्यापीठ 'कर्मजो करो तो बहुरि न कृपियो' गोपी लक्ष्मण उगाध मुर ५ मुक्कल काराडिया साये
२ मरका २ इतिव				सकपत्र से २१६	
(१) विदेशविभागाभि				१-३	
(२) इकातरकोय				४-५	
(३) भक्तगोपीको योग्य				४-६	
(४) पाय रेश				६-७	
(५) गोपीकायका योग्य				७-८	इसके कर्ताका नाम आनन्दप्रसाद मूल मुक्तिमै लिया है यह समुद्र है। (सं)
(६) लक्ष्मण				८-१२	
(७) भक्तगोपी				१२-१३	
(८) रेशना लीका मुरदा				१०-११	
(९) लक्ष्मणगोपी बाकी			१८४	११-१६	नि. क - इकातराम भागवतश्रित्य आनन्दप्रसाद
(१०) कर्माभ्यास				८७-८८	
(११) राय रेशना				८८-८९	
(१२) निम्न-निम्न				८९-९०	
(१३) विस्तारवि				९०-९१	नि. क - पर्वतराम आनन्दप्रसाद
(१४) इतिव-मल				९१-९२	
(१५) पर्वतरामो वरक				९२-९३	

क्रमांक	व्यक्त्यास	वर्ग	निर्दिष्ट समय	व्यक्त्यास	निर्दिष्ट विवरण या वि
२	(१६) विनोदचन्द की परचई	प्रमाणवाक्य	१८४	१४२-४३	इसका भी वर्ग प्रमाणवाक्य ही हो ? (स)
	(१७) सिद्ध-अमलकी की परचई	बकल वा रघुनाथ		१४३-१४४	
	(१८) वीरपत्नी की परचई	प्रमाणवाक्य		१४४-२४	
	(१९) कृष्ण-अपिल या वि	सोबास		२४-२११	
	(२०) लकीरि लामिनि	सुखरवास		२११-२१६	
३	धुवका—२१ इतिहास				
	(१) परसरामजी की बाली	परसराम निवाचित	१८४७	१-४२	
	(२) गुणमालाचन्द की बाली	सिद्धायी		१-४	
	(३) बालिका	परसराम		४-८	हरिचन्द्रा की १४
	(४) बालिका			८-९	
	(५) लाल निवाचित १ बाली			९-२३	११३ पत्र
	(६) बालिका ३३ बाली			२३-२८	
	(७) बालिका ४ बाली			२८-८१	बिन्दु ३६ । आई प्रमाणवाक्यास निर्दिष्ट
	(८) हरि-चन्द्रा २७ पत्र				मूल वाक्यास परमाणवमये ।
	(९) लालनिवाचित ३३ बाली			८१-१२६	यन्त्रे लालनि ये बाले कासले पत्र ११ ।
	(१०) लालनिवाचित ३३ बाली			१२६-१३३	पुण्यमालाके वर्णनमें प्रमाण लालनिवाचे
	(११) गुणमाला-चन्द्रा-चन्द्रा २६ बाली			१३३-१४१	

[illegible]

[illegible]

ग्रन्थ	राजनाम	काल	निधियमक	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(१२)					
		आमानन्दजी		१५	१ पत्र १ राय ।
		दीपजी भक्त		१३१	"
		आदिबिन्दुजी भक्त		"	"
		रामानन्दजी		"	"
	"	आनन्दजी भक्त		"	"
	"	अनन्दी भक्त		"	"
	"	आनन्दिलोकाजी भक्त		"	"
		मरतिगुजी	१७४१-४३	"	"
		मुकन्दभारतीजी	१८१-१८२	"	"
		रूबर भक्त	१८३	"	"
		भावा भक्त	१८२-१८३	राय ४ पत्र १२ ।	"
	"	माधो आनन्द	१८३-१८४	राय ३ पत्र ११ ।	"
		मतिगुम्बर भक्त	१८५	राय १ पत्र १ ।	"
		महाराज पुष्पोत्तम	१८६	राय ४ पत्र ४—ये स्वाम्ने अजपुर (घाभेर) के महाराजा पुष्पोत्तम हैं ।	"
			१८६-१८७	मठप्राय के कवि । राय ६ पत्र ११ ।	"
		वरमानन्द	१८७-१८८	राय १२ पत्र ३१ मठप्रायके कवि ।	"
		गुरदास	१८८	राय २ पत्र २ ।	"
		पोवाको भक्त	१८९	राय १ पत्र १ ।	"
		बलनाजी	१८९-१९०	राय ११ पत्र ३६ ।	"
		मरीदरास शास्त्रिय	१९१-१९२	राय ३ पत्र ३० कोनाक मुकुन्दरासमहाराज- पुराण सिधोनाम श्रीनाथपरम्परापत्रे कोनाम- नाथक समानिबन्ध ।	"
		पुर्वोत्तम पोवा	१९७-२१	"	"
(१७)	भास्करिण्णा पुर्वोत्तमको पत्र				
	भाती १ ६				

क्रमांक	प्रत्येक भाग	कला	निर्दिष्ट समय	वर्ष संख्या	विद्युत विवरण कादि
(१९)	(३८) भाग्यवती के घर-राज १३ पर ७३	भागीवत भवन	१७४१-४३	२ १-२१३	पूछ २६२३ पर एक घर भोगलका छोड़
(२०)	(३९) कबीरजी के घर	कबीर		२१३-२१२	एक घर गुरदासका भी भिजा है (स) ।
(२१)	(४०) गुरदासजी के घर गुरदास	गुरदास		२६२३-२६३	बहुत बच्चे घर हैं । २६३३ पर घर पर वरस- रास भगवत छोड़ भिजोके भी घर हैं ।
(२२)	(४१) भाग्यवती का छोटा घर	भाग्यव		२६२४	
(२३)	(४२) भाग्यवती का घर छोटा २८ भाग	भाग्यवत		२६३-२६३	कोविंदलालपुत्राके
(२४)	(४३) भाग्यवती के घर	भाग्यवत		२६३-२६३	भागीवत के लकने भूतसे रक्तवतीका भाग भिजा है पर वह गुरदासकी रक्ता है । छात्रों की भाग्यवतलकने लों लिकी ल १७४१ देखा भिजा है ।
(२५)	(४४) गुरदासजी के घर	गुरदास		२६३	गुरदासकी घर बहुत बच्चे हैं ।
(२६)	(४५) भाग्यवती के घर	भाग्यवत		२६३-२६३	इसके घरमें इति श्रीरक्तवतीकी लाली गुरदास समझा ल १७४१ देखा लाले कावर बादे भिजिना ल दिन लसे भिजो प्रति स्वासी भागीवतकी ल भिजो देखा संघ है । (स)

क्रमांक	विवरण	वर्ग	निविद्यमान	पत्रकख्या	विशेष विवरण आदि
(१२)	(५७) राजस्थानके प्रमुख वन राज ३ वर १२	राज्य	१७४१-४३	२२ ३१२-३१३	पत्रक पूर्ण है। आगे कुछ वन भी हैं।
	(५८) लकड़कार आरक काल २११	बनारसीवाल		२६१-३१२	
	(५९) बाजिराजी वरिष्ठ वन ३	बाजिराजी		३१४-३१५	
	(६०) वनारसीवालके वन राज ७	बनारसीवाल		३१५-३१६	वन उत्तम है। अत्याधिक पत्तन बहुत बढ़िया है अन्य वन भी एक से एक बढ़िया हैं।
	(६१) प्रमुख लकड़कारके वन राज ४	(१) नरसी (२) गुर (३) गुरवाल		३१६	य वन अत्यधिक वनारसीवाला आदि।
	(६२) बनीरवाली का, अत्या	बनीर		३१६-३१७	
	(६३) बनीरवाली का वनीर लाली	"		३१७	राजस्थान है।
	बनीरवाली में	"			
	(६४) बनीरवाली का वनीर	"		३१८	
	(६५) बनीरवाली का वनीर	"		३१८-३१९	
	(६६) बनीरवाली का वनीर	"		३१९-३२०	
	(६७) लकड़कार गुर (अत्याधिक १)	"		३२०	राजस्थान ११ छंद।
	(६८) बनीरवाली	"		३२०-३२१	बनीरवाली का वन ४ बनीरवाली छंद।
	(६९) राजस्थान-बनीरवाली का वनीर ४१	(१) लाल (२) बनीर (३) वनीर		३२१-३२२	पृष्ठ ३२१-३२२ पर संयुक्त राजस्थान पत्रकख्या इस प्रकार लिखी है—
	(७०) प्रमुख लकड़कारके वन	"		३२२-३२३	बनीरवाली का लाली-७१

क्रमांक	राज्यपाल	कर्ता	मिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण यदि
(१२)	बद	(२) कल्याण	१७४१-४६	६२६-६६	राष्ट्रपतिजी साहसी १९२८।
	"	(३) सुखानन्द	"		बोम्बे (पोलिश) की छावनी १९१
	"	(४) परमानन्द	"		काशी कायलकी छावनी २७।
	"	(५) विद्यापति	"		यमुनेक-गार्गीजीके छाव ६।
		(६) विद्यादास	"		बल-नोरकाय ४२।
		(७) बीमदास	"	"	पोरकबाबकी छावनी २१।
	"	(८) रत्नदास	"	"	गोरकनाथजीकाबोब १२६।
	"	(९) रत्नदास	"	"	गोरकनाथजीके बद २४।
	"	(१०) केवली	"	"	पोरकनाथजीके पंज १२।
	"	(११) पीवा	"	"	राष्ट्रपतिजीके बद ३३२।
	"	(१२) कल्याणदास	"	"	बदोरीजीके बद ३८१।
		(१३) कल्याणदास	"	"	भास्वरीजीके बद ३८१।
	"	(१४) माधोदास	"	"	रत्नासजीके बद ३२।
	"	(१५) मन्मथदास	"	"	कुटकर २२।
	"	(१६) बरही	"	"	गुबीनगवालीकी छावनी १६।
	"	(१७) गोपाळ	"	"	छावणीकी बोम्बेको बदोरी—
					साहसी २४५४।
					बद ११२५।
					छावनी ७१२।
					मन्मथ बदोरीके लेखी १२८८२।
					नोट—इस पुस्तकमें दो बाण्ड संलग्न मिले हैं—

क्रमांक	परमनाम	कर्ता	निर्दिष्टमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण यादि
१३	मुरका जिले— राजबजीकी साही साकी कबिल सर्वीया १४ दरिल छोरे लुख डाय छरे हुए ।	राजब हाथुकिरय	१७४३	१३१	पुस्तक मात्तपुरेसे पुनरेष्टित कम्पाउण्डकोसे बेकाय करि ३ से १२७४को प्राप्त । प्राचीन लिपि । कागजका दीपक कासा हुआ मत्ता पुरेसे पर कम्बरके कागज पर लेखा १७३२ छोरे १७४३ सिका है । इसको सिंहायकी बाल की पुरानी डी है । कागज की पुराना है । साकी छोरे परोंको किरा (मुना) है । यह कालेकी बाल एक समय बाल परी की बर्तक इस समयकी छोरे की मुख पुस्तकसे साकी छेरी हुई है । किया सकार हिल्का समान छोरे कोसेके लकड़कीकी छो सिंहायक को पुरानेपत्तका प्रभाव है । हूना हुआ (कागज) साकिसे ३२ पत्र लगी है । कीचसे पत्र कटित है ।
१४	मुरका— (१) हाथुयालो साकी ३९ पत्र (२) कबीरजीकी साकी २२ पत्र (३) मिया बाजीरजीकी साकी १८ पत्र (४) कबीरजीकी लनेकी ४ छठपरी (५) सज्जनपुण्डरा यादि हरियालकी ३ पत्र (६) बीनबेकाल	बाबू कबीर बाजीर कबीर हरियाल	१७४३	३३-०२ ७२-७६ ८९-१२ १३-११८	११२का पत्र लगी है । यस बहुत कोर्क है । इसका मरम्मत होनेसे वाहिले विवरण लगी मरा का सकता ।

क्रमांक	ग्रामनाम	कक्षा	निर्वाचनस्थ	पञ्चसंख्या	विवरण विवरण आदि
(१४)	(७) सोनहरौदे भाग ११५	राजस्थान	राजस्थान	११५	१४५ की पञ्च नहीं है । १४५ की पञ्च नहीं है । १४५ की पञ्च नहीं है । १४५ की पञ्च नहीं है । १४५ की पञ्च नहीं है । १४५ की पञ्च नहीं है । १४५ की पञ्च नहीं है । १४५ की पञ्च नहीं है । १४५ की पञ्च नहीं है । १४५ की पञ्च नहीं है । १४५ की पञ्च नहीं है । १४५ की पञ्च नहीं है । १४५ की पञ्च नहीं है । १४५ की पञ्च नहीं है ।
	(८) बायावली			११५-११५	
	(९) बायावली			११५-११५	
	(१०) बायावली			११५-११५	
	(११) बायावली			११५-११५	
	(१२) बायावली			११५-११५	
	(१३) बायावली			११५-११५	
	(१४) बायावली			११५-११५	
	(१५) बायावली			११५-११५	
	(१६) बायावली			११५-११५	
	(१७) बायावली			११५-११५	
	(१८) बायावली			११५-११५	
	(१९) बायावली			११५-११५	
	(२०) बायावली			११५-११५	
१५	गुरका -	राजस्थान	राजस्थान	१-११५	१४५ की पञ्च नहीं है । १४५ की पञ्च नहीं है । १४५ की पञ्च नहीं है । १४५ की पञ्च नहीं है । १४५ की पञ्च नहीं है । १४५ की पञ्च नहीं है । १४५ की पञ्च नहीं है । १४५ की पञ्च नहीं है । १४५ की पञ्च नहीं है । १४५ की पञ्च नहीं है । १४५ की पञ्च नहीं है । १४५ की पञ्च नहीं है । १४५ की पञ्च नहीं है । १४५ की पञ्च नहीं है ।
	(१) राजस्थान की भागी १० संघ			१-११५	
	(२) राजस्थान की भागी १० संघ			१-११५	
१६	गुरका -	राजस्थान	राजस्थान	१-११५	१४५ की पञ्च नहीं है । १४५ की पञ्च नहीं है । १४५ की पञ्च नहीं है । १४५ की पञ्च नहीं है । १४५ की पञ्च नहीं है । १४५ की पञ्च नहीं है । १४५ की पञ्च नहीं है । १४५ की पञ्च नहीं है । १४५ की पञ्च नहीं है । १४५ की पञ्च नहीं है । १४५ की पञ्च नहीं है । १४५ की पञ्च नहीं है । १४५ की पञ्च नहीं है । १४५ की पञ्च नहीं है ।
	(१) राजस्थान की भागी १० संघ			१-११५	

क्रमांक	परप्राप्त	वर्ण	निमित्तमात्र	पञ्चसूत्र	विशेष विवरण यादि
(१६)	(२) शास्त्रोक्त पद २७ रात्र ४१४ पद		१७१८	२८-१६१	मुख्य स्मरण चौर किताबली । सम्पूर्ण ।
	(३) कबीरजी की लाठी का ३			१६१-१६२	
	(४) प्र. बकरि २७७ छंद	बकगोपाल		१६२-१७८	
	(५) प्र. गुरुद्वारि			१७८-१८	
	(६) दोषीकावर्तन १४१ छंद	बोयबाग		१८ - १८६	
१७	बकरा—		१८ २	१-२१३	भरतपुर के ग्यारहकुमार बीप्रतापसिंह के निमित्त से १७२४ में रत्नोपनिषि नामक ग्रन्थ की रचना की । पंडित पंडीतसिंहजी के पास तथा किता भरतपुर में इस ग्रन्थ की प्रतियां देखी थीं । यह प्रति पंडित पंडीतसिंहजी सूर्य भान बकौल भरतपुरवासियों की प्रतिसे को त. १८२४ की है पताही नहीं । यह किता बकौल तुलनकी भजन है । भाषा प्राचीन माकुर-गुजराती-विशाल-मिश्रित । दुब (बन्धु) माकगिरिपदों पर्यंत भूमि तप(सिध)बाध कवीन मात्मार्य । संकाशें निका गया ।
	(१) शास्त्रोक्त लाठी				
	(२) शास्त्रोक्त लाठी			२१३-२२४	
	(३) शास्त्रोक्त पद	बकगोपाल		२२४-४ ६	
	(४) शास्त्रोक्त लाठी-बकराई	सोमनाथ		१८२	
१८	रत्नोपनिषि		१९९२	८	
	विष्णुपदित (बकराजी कथा)	बक गुरुपति			
२	राजकीर्ति-बर्तन यादि	देवीबाग	१९९३	२७	

क्रमांक	व्यवसाय	वर्ष	मिपिपमय	पथरुका	विशेष विवरण पारि
(२२)	(१९) लुट्ट कलिल पारि	मिस्कर कलिलस लवार्ड	१७७२	१३-१७	इसमें लवार्ड प्रजापतिविरचित कमेन्टि-मल्लकारके मोठ लवार्डस है ।
	(२०) लालमोला	प्रजापतिविर		१-१	
	(२१) होमद्वारे कलिल ६	कुलवास		१०-१३	
	(२२) मुरलीविहार	मानसकी ?		१३-२१	
	(२३) लवार्डिप्युमपुष्प सेठे	लवार्ड प्रजापतिविर		२१-२५	
	(२४) लवार्डिप्युमपुष्प सेठे				रकमलाल-१७४६
२३	(१) मीनिकला		१६	१-१६	यह पुटका पुन व्याम्करालमो बाबिप्रा बालीका है । इसमें ६ लम्ब मुस्कर मिपिमें लिखे हुए हैं परन्तु पार्थीको कोइने काकर केमुकुप कर दिखे हैं ।
	(२) लवार्ड			१६-१७	
	(३) प्रजापति			१७-२२	
	(४) विपुलकला			२६-३७	
	(५) लवार्डिप्युमपुष्प			३७-४६	
	(६) मुरलीविहार			४६-५५	
२४	(७) लवार्डिप्युमपुष्प			५५-५८	
	(८) लालको रेखा			५८-६२	
	(९) लवार्डिप्युमपुष्प			६२-६६	
	(१०) लवार्डिप्युमपुष्प			६६-७०	
	(११) लवार्डिप्युमपुष्प			७०-७४	
	(१२) लवार्डिप्युमपुष्प			७४-७८	
२५	(१) लवार्डिप्युमपुष्प	लवार्ड प्रजापतिविर लवार्डिप्युमपुष्प	१७७४	७८	यह पुटका पुनारी पार्थीकोके प्राप्ति हुआ । मिपि मुस्कर है ।
	(२) लवार्डिप्युमपुष्प	लवार्डिप्युमपुष्प	१७७४	७८	
२६	(१) लवार्डिप्युमपुष्प	लवार्डिप्युमपुष्प	१७७४	७८	
	(२) लवार्डिप्युमपुष्प	लवार्डिप्युमपुष्प	१७७४	७८	

क्रमांक	पद्यनाम	कथा	विनिर्दिष्टमन्त्र	पद्यसंख्या	विशेष विवरण आदि
१६	मन्त्रा—				
(१)	मोक्षिनीवराय			१-२	
(२)	नन्दासरी कवित	मुद्रवराय		२-३	
(३)	कल्याणतोषी	मायोराय		१-५	
(४)	मुद्रानिगार	मुद्रर कवि वाराहे		१-६	
(५)	मोक्षिनीवरी	लकाई प्रतापसिंह	१ मन्त्र	१-१३	
(६)	१ मारुतवरी			१३-२४	
(७)	भैरवमन्त्रवरी	"		२४-३५	
(८)	वायु ग्राम	देव कवि		३५-३६	
(९)	राजमोक्षिनीवरी	उद्योदरराय		३६-३८	कथो राम मन्त्रोम तौ इह भूय मोक्षिनी वन्दे । विजयपदय वलकस्तद्विद भाषा करो उमेव ।
(१०)	वन्देकाव्य मन्त्रवरी	मन्त्रवराय		३८-५७	रजभाकास-१ मन्त्र
(११)	वायव्यमोक्षिनीवरी	उद्योदरराय		५७-६२	" १ मन्त्र
(१२)	कामरूप	लकाई प्रतापसिंह		६२-६४	इसके पद्यमें २५ पृष्ठ वर उरग मीन मीन
(१३)	मन्त्रमन्त्रा	"		६४-६६	इत्यादि कवितका कोटक है । विजय काव्य है ।
(१४)	राम कवित	वराह		२५	
		पद्मनाभ			
		देव			
		वृद्ध			
		ठाकुर			
		मान			
		कविनिवास			
		देवनाथ			

क्रमांक	शब्दभाग	करी	निमित्तमत्र	पत्रपत्रिका	विशेष विवरण यादि
(२६)	(१२) कर्कशपुष्पदन्त (१६) सर्वपात्रादौ (१७) सुष्ठु अस्मिन्	पद्याकार श्रीधरजय		२६-१ १ १ १-१ २ १ १-१ ७	लक्षणकृते न्यायकरी ।
२७	मुद्रका— (१) कर्कशपुष्पदन्त (लाकी) पत्र यादि (२) सुष्ठु पत्र लघु	पद्य नामदीय विद्याभित्तिका मीरौ	१२वीं " "	१-२२ २२-७३	
		"	"	"	
		"	"	"	
		"	"	"	
		"	"	"	
२८	मुद्रका— (१) कर्कशपुष्पदन्त (२) लक्ष्मीनारायण कथा	मुद्रकार ब्रह्मना मोरकनाथ यादि विष्णुनाथ	" "	" "	इत गुरुकेसे मोठे प्रकार सेककेसे हावके है । लक्ष्मीनारायण कथासे ३ कथाये प्रकाश कर्तुक है ।
२९	मुद्रका— (१) लक्ष्मीनारायण कथा	पद्यकारमोक्ष		२ ४	मोठे प्रकार है । भाषा सरल है ।
३	मुद्रका— (१) लक्ष्मीनारायण कथा	विष्णुनाथ	१८वीं	२-१७	नि. ४ सम्पूर्ण । प्रारम्भ २ पत्र प्रती है ।

क्रमांक	वर्णन	वर्ग	निमित्तक	पत्रसंख्या	विशेष विवरण
(१)	(१) बट्टी पहाड़ा (२) नजीमखाना की कवायद गुरुदा प्रमाण— (१) उपर्युक्त	राजस्थान	१८७२ १८८१	१-४ १-२४ ६४	मौलि-इत्येक पृष्ठ पर बीसमें पट्टी पहाड़े और ऊपर भीचे प्रास्ताविक बोधे मिले हैं । (स) पंथका निर्माणसंबन्ध बट्टी दिया है । पंथकाएँ घपना निवासस्थान पाँच इयत्ता निरीज इलाका हीन मानका प्रदेक मिला है । इनके मिलाकर आज मजदूरकाय का ।
(२)	बट्टा— (१) राजाजयसिंह बोधे ४७ (२) रोहतासी बोधे ८२	रघुनाथ रामसते		१-१२ १२-१२	संभवता ये पहाड़ा रघुनाथसिंह रोहतासी हैं । इनका निवासस्थान बट्टाइन और गोरख- पुरके पास बट्टी वा । प्रतिके मतमें "बति ब्री पहाड़ाएँ सतेनु इन रोहतासी संयुक्तम्" ऐसा मिला है । भी रामसतेका विवरण मिलावेदु विमोक्षमें दिया है ।
(३)	गुरुदा— (१) मौलिखराल लखव लखव ६ (२) बट्टाइन-कविता (३) विमलचरो लखव ४ (४) मौलि-विमल (१५६ मौलि व समके काय)	देवबाराण " "	१८३४ ई १-३ १-३ १-३	साहित्यसुयुक्तोंमें पवित्र रामसहित निकले इनको देवबाराणसे मिला है । उनीसे प्रति मिति ब्री है । यह बट्टाइन कवि पठननाथजी गणपति भारतीके बंधनमें प्राप्त हुई है । स १८२३में	

क्रमांक	प्रश्ननाम	कर्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण यादि
(२१)					सकल कराई है। संख्या ४६ से ६३ तक प्रसक्त पुरतकसे मही है। बड़े कागसी बसों है। अन्तर्से दोहोरे बुकबरम्परा इस प्रकार है—राजाभाय्य राजभाय्य बुकबाय कम्बारी बापबाय बिमोदबाय प्रमत्ताबाय ।
१४	पुस्तक—				
(१) गीतारत्नी	प्रमत्ताबाय		१७१२	२४	यह जीर्ण पुस्तक है। खीर संवत् १७१२ का सिक्का हुआ है। अन्तर्से सिक्का है—संवत् १७१२ बड़े बाले १२५ महाभाऊसिंह
(२) ग्रीष्म	राजुबाय		"	६	प्रमत्त-माते-भुक्तपणे कबोरबा १३ पत्र-बातरे डिप्युपुरावें स्वासी विरावावाली-
(३) शाहजादी	राजबाय		"	"	सिक्का स्वासी माओबासकी तत्सिक्का बन्दा-
(४) अल्लिसिर्ग			"	"	बगेभासिक प्रमत्ताबें पुण्य संवत् खीरासो-
(५) अक्किदासीना	कबोर		"	"	बम्बल ।
(६) कबीरबाबा म			"	"	मोट-बट मुद्रका प्रमत्त जीर्ण है। खीर
(७) कबीरबाबी रत्नी (बर्तनी)			"	"	पत्र लक्षणे है। प्रमत्त खीरपुरेदिलबाकी मुबोरके
(८) कबीरबाबी सुपरी			"	"	प्रमत्तार ही छत्रिपेकि नाम यहाँ चित्रित कर
(९) कबीरबाबी तपस्वी			"	"	दिये है। पत्रोंकी संख्या इनकी प्रमत्त होनेके
(१०) कबीरबाबी बारापरी			"	"	बाद ही कराई का लक्ष्मी है। (मं)
(११) कबीरबाबी पञ्चपरी			"	"	
(१२) कबीरबाबी बीपरी			"	"	
(१३) अक्षयपूरुषा			"	"	
(१४) शालीबाय			"	"	
(१५) कबीरबाबी लक्ष्मी व दीप २७			"	"	

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कला	निमित्तपत्र	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(३४)	(१६) आनन्दजीका घर	नामदेव	१७१२		
	(१७) आनन्दजीकी मातो	देवास			
	(१८) देवासजीका घर	हरिदास			
	(१९) हरिदासजीका घर			२ ७-२६६	
	(२०) हरिदासजीकी मातो				
	(२१) आनन्दजीका घर	आनन्द	"	"	
	(२२) आनन्दजीकी मातो	वीणा		"	
	(२३) वीणाजीका घर	तोत्री		"	
	(२४) तोत्रीजीका घर				
	(२५) तोत्रीजीकी बेटी		"	"	
	(२६) आनन्दजीका घर	त्रिलोक्य			
	(२७) आनन्दजीका घर	सिद्धपत्र			
	(२८) आनन्दजीका घर	बीजास			
	(२९) बीजासजीका घर	बेनी	"	"	
	(३०) राजाजीका घर	राजाजी		"	
	(३१) राजाजीका घर	मणिगुह			
	(३२) राजाजीका घर	कमल			
	(३३) राजाजीका घर	भुवन		३३६ से	
	(३४) राजाजीका घर	सम्राट	"	"	
	(३५) राजाजीका घर	मुसाभा	"	"	

इसकी ३ पत्ती आर्यपुस्तकालय की १ पत्ती की
इस पत्रों की आदिमें है ।

प्रमाण	श्रवणार्थ	कर्म	निमित्तमन्त्र	पञ्चसंख्या	विशेष विवरण यादि
(११)					नक्त्य कराई है। संख्या ४६ से ६२ तक प्रत्यक्ष पुस्तकमें नहीं है। बड़े कामकी बातें हैं। प्रत्यक्ष बौद्धोंमें मुख्यतया इत प्रचार है—राजस्थान जलस्थानम्, कुम्भवाह पम्पहारी घण्टावाह विजोवहास घण्टावाह ।
३४ गुरुका—					
(१) भीमराजकी	घण्टावाह	१७१२	२४		यह बीज गुरुका है और नक्त्य १७१२का जिक्र हुआ है। प्रथम जिक्र है—नक्त्य १७१२ बड़े कामके १३० पञ्चाङ्गाङ्कीजिक्र
(२) भूषण	राजस्थान	"	"		काम्युप-भास्कर-भूषणपते कबीरपरी १३ उप-
(३) राजवासी	राजस्थान	"	"		घण्टे सिद्धपुस्तकमें स्वामी विराजवाहकी-
(४) अलसिनिम्ब	राजस्थान	"	"		जिक्र स्वामी माधोवाहकी सप्तसिद्ध भूषण-
(५) अलसिनिम्ब	कबीर	"	"		नक्त्याङ्कीज घण्टावाह भूमि भक्त्य कबीरपरी-
(६) कबीरकी वाह	"	"	"		कवलि ।
(७) कबीरकी रत्नी (कबीरकी)	"	"	"		मोट-यह गुरुका प्रत्यक्ष बीज है और
(८) कबीरकी सुपरी	"	"	"		यह सङ्कल्प है प्रता भीपुरोहितकी सुपरीके
(९) कबीरकी सप्तरी	"	"	"		प्रमाणार ही प्रतिमादि नाम यही प्रतिष्ठित कर
(१०) कबीरकी वाहवाही	"	"	"		किये हैं। कबीरकी संख्या इसकी परम्परा होनेके
(११) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		बाद ही लगाने का संकल्प है। (न)
(१२) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(१३) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(१४) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(१५) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(१६) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(१७) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(१८) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(१९) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(२०) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(२१) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(२२) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(२३) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(२४) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(२५) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(२६) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(२७) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(२८) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(२९) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(३०) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(३१) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(३२) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(३३) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(३४) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(३५) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(३६) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(३७) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(३८) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(३९) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(४०) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(४१) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(४२) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(४३) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(४४) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(४५) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(४६) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(४७) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(४८) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(४९) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(५०) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(५१) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(५२) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(५३) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(५४) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(५५) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(५६) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(५७) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(५८) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(५९) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(६०) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(६१) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(६२) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(६३) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(६४) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(६५) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(६६) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(६७) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(६८) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(६९) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(७०) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(७१) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(७२) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(७३) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(७४) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(७५) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(७६) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(७७) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(७८) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(७९) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(८०) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(८१) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(८२) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(८३) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(८४) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(८५) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(८६) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(८७) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(८८) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(८९) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(९०) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(९१) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(९२) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(९३) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(९४) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(९५) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(९६) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(९७) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(९८) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(९९) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		
(१००) कबीरकी घण्टावाही	"	"	"		

क्रमांक	व्यक्ति	वर्ग	विषय	वर्ग	विषय
(१४)	(१५) नामदेवजीरा पर	नामदेव	१७१५		
(१७)	नामदेवजीरा मातो	"	"		
(१८)	नामदेवजीरा बर	देवास			
(१९)	नामदेवजीरा बर	हुरियाल			
(२०)	नामदेवजीरा मातो				
(२१)	नामदेवजीरा बर	नामदेव			
(२२)	नामदेवजीरा मातो				
(२३)	नामदेवजीरा बर	वीणा			
(२४)	नामदेवजीरा मातो	हुरियाल			
(२५)	नामदेवजीरा बर				
(२६)	नामदेवजीरा मातो				
(२७)	नामदेवजीरा बर				
(२८)	नामदेवजीरा मातो				
(२९)	नामदेवजीरा बर				
(३०)	नामदेवजीरा मातो				
(३१)	नामदेवजीरा बर				
(३२)	नामदेवजीरा मातो				
(३३)	नामदेवजीरा बर				
(३४)	नामदेवजीरा मातो				
(३५)	नामदेवजीरा बर				
(३६)	नामदेवजीरा मातो				

इसकी १ वरी, आर्यविद्यालय और १ वरी की
इस वरीके आर्यविद्यालय है ।

११५ से

क्रमांक	ग्रन्थनामा	अर्ण	निर्दिष्टमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(३४)	(३७) पुष्पात्मिका पर	पुष्पात्मिका	१७१२		
	(३८) ललितिका पर	ललितिका	"		
	(३९) परसरामिका पर	परसरामिका	"		
	(४०) बरखारमसी साक्षी	"	"		
	(४१) सारिका पर	सारिका	"		
	(४२) लीला पर	लीलात्मिका	"		
	(४३) कामद्विद्या रासलिका पर	कामदास	"		
	(४४) भाषिका पर	भाषा	"		
	(४५) अरुणी मयलिका पर	अरुणी	"		
	(४६) बोरिलदासिका पर	बोरिलदास	"		
	(४७) वीरकुका पर	वीरकुका	"		
	(४८) सीमको साक्षी	सीम	"		
	(४९) दय्यारकी पोखरी	दय्यार	"		
	(५०) दय्यारिका पर	"	"		
	(५१) दय्यारकी रातो	"	"		
	(५२) सीमिका पर	सीम	"		
	(५३) बरखारमसी देवमयिका	बरखारमसी	"		
	(५४) बरखारमसी पर	"	"		
	(५५) सलारामिका पर	सलाराम	"		
	(५६) बीरका पर	बीर	"		
	(५७) बरखारमसी पर	बरखार	"		

क्रम ।	क्रमक्रम	वर्ग	विनिमय	वर्षसंख्या	विशेष विवरण यादि
(३४)	(२८) मृगशिराका वर	मृगशिरा	१७१५		
	(२९) वनाका वर	वना मल्ल			
	(३०) जयदेवकी पञ्चवरी	जयदेव कदि			
	(३१) लक्ष्मणका वर	लक्ष्मणका			
	(३२) व्यासका वर	व्यास			
	(३३) शोभाका वर	शोभा			
	(३४) भाविका वर	भाविक			
	(३५) लोकोका वर	लोको			
	(३६) पानिका वर	पानिक			
	(३७) सुवैराका वर	सुवैराका			
	(३८) वसुधका वर	वसुध	"		
	(३९) मुद्रका वर	मुद्रा	"		
	(४०) रत्नका वर	रत्नका	"		
	(४१) मृत्का वर	मृत्का	"		
	(४२) मृत्पत्नी	मृत्पत्नी	"		
	(४३) वरमागपराका वर	वरमागपराका	"		
	(४४) भावोजयमाका वर	भावोजयमाका	"		
	(४५) वरका वर	वरका	"		
	(४६) मागशानको लागी	मागशानको (सीकवाका)	"	५-३१०	
	(४७) मागशानका वर	"	"		
	(४८) शास्त्राणि सर्वदा	रत्नका	"		

क्रमांक	व्यवस्था	वर्ग	निश्चित मूल्य	पत्र संख्या	विशेष विवरण यदि
(१४)	(१२८) बरतको घर	बरत	१७१५	११९को	
	(१२९) भरतको घर	भरत	"		
	(१३०) भैरवदेवका घर	भैरव देव	"		
	(१३१) बालदेवका घर	बालदेव	"		
	(१३२) बालदेवका घर	बालदेव	"		
	(१३३) बालदेवका घर	बालदेव	"		
	(१३४) बालदेवका घर	बालदेव	"		
	(१३५) बालदेवका घर	बालदेव	"		
	(१३६) बालदेवका घर	बालदेव	"		
	(१३७) बालदेवका घर	बालदेव	"		
	(१३८) बालदेवका घर	बालदेव	"		
	(१३९) बालदेवका घर	बालदेव	"		
	(१४०) बालदेवका घर	बालदेव	"		
	(१४१) बालदेवका घर	बालदेव	"		
	(१४२) बालदेवका घर	बालदेव	"		
	(१४३) बालदेवका घर	बालदेव	"		
	(१४४) बालदेवका घर	बालदेव	"		
	(१४५) बालदेवका घर	बालदेव	"		
	(१४६) बालदेवका घर	बालदेव	"		
	(१४७) बालदेवका घर	बालदेव	"		
	(१४८) बालदेवका घर	बालदेव	"		
	(१४९) बालदेवका घर	बालदेव	"		
	(१५०) बालदेवका घर	बालदेव	"		

क्रमांक	व्यवसाय	वर्ग	निविदांक	पत्रावकाश	विशेष विवरण प्रादि
(१४)	(७६) रणपका विपदाया	रणपका	१७१२		
	(७७) रणपका विपदाया	पदाय			
	(७८) रणपका विपदाया	बालविपदा			
	(७९) रणपका विपदाया	रणपका (१)			
	(८०) रणपका विपदाया	रणपका विपदा			
	(८१) रणपका विपदाया	रणपका विपदा			
	(८२) रणपका विपदाया	रणपका विपदा			
	(८३) रणपका विपदाया	रणपका विपदा			
	(८४) रणपका विपदाया	रणपका विपदा			
	(८५) रणपका विपदाया	रणपका विपदा			
	(८६) रणपका विपदाया	रणपका विपदा			
	(८७) रणपका विपदाया	रणपका विपदा			
	(८८) रणपका विपदाया	रणपका विपदा			
	(८९) रणपका विपदाया	रणपका विपदा			
	(९०) रणपका विपदाया	रणपका विपदा			
	(९१) रणपका विपदाया	रणपका विपदा			
	(९२) रणपका विपदाया	रणपका विपदा			
	(९३) रणपका विपदाया	रणपका विपदा			
	(९४) रणपका विपदाया	रणपका विपदा			
	(९५) रणपका विपदाया	रणपका विपदा			
	(९६) रणपका विपदाया	रणपका विपदा			
	(९७) रणपका विपदाया	रणपका विपदा			
	(९८) रणपका विपदाया	रणपका विपदा			
	(९९) रणपका विपदाया	रणपका विपदा			
	(१००) रणपका विपदाया	रणपका विपदा			

क्रमांक	व्यवसाय	वर्ग	निर्दिष्ट मूल्य	पञ्चमिया	निर्दिष्ट विवरण यदि
(१५)	(२६) बरालो घर	वर्ग	१७१२	३३९६१	
(१६)	(२७) नरलको घर	नरल		"	
(१७)	(२८) भैरु सेकफाका घर	भैरु सेकफा		"	
(१८)	(२९) शोभनीका घर	शोभनीका		"	
(१९)	(३०) पुनोराजका घर	पुनोराज (राजा जोधपुरको)		३३९-३७०	
(२०)	(३१) कपुलीका घर	कपुली		३३७	
(२१)	(३२) कुलराजका घर	कुलराज		३३७	
(२२)	(३३) नाकभरा घर	नाकभ		३३७	
(२३)	(३४) रीपाका घर	रीपा		"	
(२४)	(३५) गोब्यारामका घर	गोब्याराम		"	
(२५)	(३६) कालानरको घर	कालानर		"	
(२६)	(३७) गुराको घर	गुरा		३३६	
(२७)	(३८) बाम्नीको घर	बाम्नी		"	
(२८)	(३९) श्रीशिवका घर	श्रीशिव		"	
(२९)	(४०) सज्जाराको घर	सज्जारा		"	
(३०)	(४१) ननको घर	ननराज		"	
(३१)	(४२) पीसाको घर	पीसा		३४	
(३२)	(४३) सोझाको घर	सोझा (बाहुलिय)		"	
(३३)	(४४) गजराजका घर	गजराज		"	
(३४)	(४५) काजी कारनको माती	काजी कारन (पञ्चमाती)		३४-३४६	
(३५)	(४६) काजी मधुकरका घर	काजी मधुकर		३४६-३४७	

क्रमांक	प्रश्ननाम	कर्ता	निश्चितमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण यादि
(१४)	(१२) प्रोफ बसुबरीका घर	प्रोफ बसुबरी	१७२३	१४७वां	
	(१२१) प्रोफ करीबुदिन	प्रोफ करीबुदिन		१४७-१४८	
	(१२२) प्रोफ करीबुदिन	प्रोफ करीबुदिन		१४७-१४८	
	(१२३) प्रोफ करीबुदिन	प्रोफ करीबुदिन		१४७-१४८	
	(१२४) प्रोफ करीबुदिन	प्रोफ करीबुदिन		१४७-१४८	
	(१२५) प्रोफ करीबुदिन	प्रोफ करीबुदिन		१४७-१४८	
	(१२६) प्रोफ करीबुदिन	प्रोफ करीबुदिन		१४७-१४८	
	(१२७) प्रोफ करीबुदिन	प्रोफ करीबुदिन		१४७-१४८	
	(१२८) प्रोफ करीबुदिन	प्रोफ करीबुदिन		१४७-१४८	
	(१२९) प्रोफ करीबुदिन	प्रोफ करीबुदिन		१४७-१४८	
	(१३०) प्रोफ करीबुदिन	प्रोफ करीबुदिन		१४७-१४८	
	(१३१) प्रोफ करीबुदिन	प्रोफ करीबुदिन		१४७-१४८	
	(१३२) प्रोफ करीबुदिन	प्रोफ करीबुदिन		१४७-१४८	
	(१३३) प्रोफ करीबुदिन	प्रोफ करीबुदिन		१४७-१४८	
	(१३४) प्रोफ करीबुदिन	प्रोफ करीबुदिन		१४७-१४८	
	(१३५) प्रोफ करीबुदिन	प्रोफ करीबुदिन		१४७-१४८	
	(१३६) प्रोफ करीबुदिन	प्रोफ करीबुदिन		१४७-१४८	
	(१३७) प्रोफ करीबुदिन	प्रोफ करीबुदिन		१४७-१४८	
	(१३८) प्रोफ करीबुदिन	प्रोफ करीबुदिन		१४७-१४८	
	(१३९) प्रोफ करीबुदिन	प्रोफ करीबुदिन		१४७-१४८	
	(१४०) प्रोफ करीबुदिन	प्रोफ करीबुदिन		१४७-१४८	

क्रमांक	व्यवसाय	कला	निमित्तमय	परिचय	विशेष विवरण यदि
(१४)	(११६) कावचयोग (कावचयोगसंसार) गोरखनाथ		१७१५	१७६-१८	इसमें १८ छन्द हैं वे बड़े प्रमाण के हैं ।
	(११७) गोरखनाथी (१७७ बरिगई)		"	१८०-१८६	
	(११८) अरुणोदय का सार (राजा-राजीवराज)		"	१८६-१८७	
	(११९) अरुणोदय का सार	"	"	१८७-१८८	
	(१२०) हनुमानजी का वर चोर भजन	हनुमान	"	१८८-१८९	ये कवचों की भी हैं ।
	(१२१) हनुमानजी का वर	"	"	१८९-१९०	
	(१२२) गोपीचन्द्रजी का वर	गोपीचन्द्र राजा	"	१९०	
	(१२३) गोपीचन्द्रजी का वर	"	"	"	
	(१२४) लाली कवचों का वर	कवचों	"	"	बहुत ओरदार वचन हैं ।
	(१२५) कवचों का वर	"	"	१९१	
	(१२६) हनुमानजी का वर	हनुमान	"	"	
	(१२७) हनुमानजी का वर	"	"	"	
	(१२८) अरुणोदय का सार	अरुणोदय	"	"	१९१-१९२
	(१२९) भाग्यज्योति का सार	भाग्यज्योति	"	"	
	(१३०) अरुणोदय का सार	अरुणोदय	"	"	
	(१३१) अरुणोदय का सार	अरुणोदय	"	"	
	(१३२) अरुणोदय का सार	अरुणोदय	"	"	१९२-१९३
	(१३३) अरुणोदय का सार	अरुणोदय	"	"	
	(१३४) अरुणोदय का सार	अरुणोदय	"	"	
	(१३५) अरुणोदय का सार	अरुणोदय	"	"	
	(१३६) अरुणोदय का सार	अरुणोदय	"	"	१९३-१९४
	(१३७) अरुणोदय का सार	अरुणोदय	"	"	
	(१३८) अरुणोदय का सार	अरुणोदय	"	"	
	(१३९) अरुणोदय का सार	अरुणोदय	"	"	
	(१४०) अरुणोदय का सार	अरुणोदय	"	"	१९४-१९५
	(१४१) अरुणोदय का सार	अरुणोदय	"	"	
	(१४२) अरुणोदय का सार	अरुणोदय	"	"	
	(१४३) अरुणोदय का सार	अरुणोदय	"	"	
	(१४४) अरुणोदय का सार	अरुणोदय	"	"	१९५-१९६
	(१४५) अरुणोदय का सार	अरुणोदय	"	"	
	(१४६) अरुणोदय का सार	अरुणोदय	"	"	
	(१४७) अरुणोदय का सार	अरुणोदय	"	"	
	(१४८) अरुणोदय का सार	अरुणोदय	"	"	१९६-१९७
	(१४९) अरुणोदय का सार	अरुणोदय	"	"	
	(१५०) अरुणोदय का सार	अरुणोदय	"	"	
	(१५१) अरुणोदय का सार	अरुणोदय	"	"	

क्रमांक	पञ्चनाम	वर्ग	निर्दिष्टसम	पञ्चसंख्या	विशेष विवरण यादि
(१४)	(१२०) दोल गढ़ावलीका घर	प्रेम गढ़ावली	१७१२	१४७७	
	(१२१) प्रेम करिनाथे आली	प्रेम करिगुरीन		१४७८-१४८८	
	(१२२) गोरनाथजीका घर	गोरकनाथ	"	१४८८-१४९९	
	(१२३) गोरनाथजीकी तिथि	"	"	१४९९	
	(१२४) नरनाथजी	"	"	१४९९-१५००	
	(१२५) काकरजी	"	"	१५००-१५०५	
	(१२६) प्रहल्लि तिलोक भाया	"	"	१५०५-१५१५	
	(१२७) प्रभुनाथजी	"	"	१५१५	
	(१२८) विद्यारत्न काय	"	"	१५१५-१५२५	
	(१२९) ज्ञानपीथी	"	"	१५२५-१५३५	
	(१३०) गोरनाथजीका घर	"	"	१५३५-१५४५	
	(१३१) ज्ञानपीथी	"	"	१५४५	
	(१३२) प्रभुनाथ	"	"	"	
	(१३३) गोरनाथजीका घर	"	"	१५४५	
	(१३४) गोरनाथ अष्टकार	"	"	१५४५	
	(१३५) गोरनाथजीका घर	"	"	१५४५-१५५५	
	(१३६) गढ़ावली-गोरनाथ	"	"	१५५५-१५६५	
	(१३७) गढ़ावली-गढ़ावली	"	"	१५६५-१५७५	
	(१३८) ज्ञानपीथी	"	"	१५७५-१५८५	

पञ्चमे गरी शैव्य गुरुशोरक-गुरुका जगति ।

पञ्चमे ९ पञ्च है । प्रत्येक के पञ्चमे 'पञ्चमी' गुरु शैव्य गुरुका जगति गोरक जगति गुरु है ।

क्रमांक	समाचार	काल	निमित्तमात्र	पत्रिका	विशेष विवरण यदि
(१४)	(१२२) कलकत्ता/कलकत्ता/कलकत्ता	विराट	१०१५	१०२-१५	
(१५)	(१२३) गोरखा/गोरखा/गोरखा	"	"	१०३-१५	
(१६)	(१२४) भद्रपुर/भद्रपुर/भद्रपुर	"	"	१०४-१५	
(१७)	(१२५) भद्रपुर/भद्रपुर/भद्रपुर	"	"	१०५-१५	
(१८)	(१२६) भद्रपुर/भद्रपुर/भद्रपुर	"	"	१०६-१५	
(१९)	(१२७) भद्रपुर/भद्रपुर/भद्रपुर	"	"	१०७-१५	
(२०)	(१२८) भद्रपुर/भद्रपुर/भद्रपुर	"	"	१०८-१५	
(२१)	(१२९) भद्रपुर/भद्रपुर/भद्रपुर	"	"	१०९-१५	
(२२)	(१३०) भद्रपुर/भद्रपुर/भद्रपुर	"	"	११०-१५	
(२३)	(१३१) भद्रपुर/भद्रपुर/भद्रपुर	"	"	१११-१५	
(२४)	(१३२) भद्रपुर/भद्रपुर/भद्रपुर	"	"	११२-१५	
(२५)	(१३३) भद्रपुर/भद्रपुर/भद्रपुर	"	"	११३-१५	
(२६)	(१३४) भद्रपुर/भद्रपुर/भद्रपुर	"	"	११४-१५	
(२७)	(१३५) भद्रपुर/भद्रपुर/भद्रपुर	"	"	११५-१५	
(२८)	(१३६) भद्रपुर/भद्रपुर/भद्रपुर	"	"	११६-१५	
(२९)	(१३७) भद्रपुर/भद्रपुर/भद्रपुर	"	"	११७-१५	
(३०)	(१३८) भद्रपुर/भद्रपुर/भद्रपुर	"	"	११८-१५	
(३१)	(१३९) भद्रपुर/भद्रपुर/भद्रपुर	"	"	११९-१५	
(३२)	(१४०) भद्रपुर/भद्रपुर/भद्रपुर	"	"	१२०-१५	
(३३)	(१४१) भद्रपुर/भद्रपुर/भद्रपुर	"	"	१२१-१५	
(३४)	(१४२) भद्रपुर/भद्रपुर/भद्रपुर	"	"	१२२-१५	
(३५)	(१४३) भद्रपुर/भद्रपुर/भद्रपुर	"	"	१२३-१५	
(३६)	(१४४) भद्रपुर/भद्रपुर/भद्रपुर	"	"	१२४-१५	
(३७)	(१४५) भद्रपुर/भद्रपुर/भद्रपुर	"	"	१२५-१५	
(३८)	(१४६) भद्रपुर/भद्रपुर/भद्रपुर	"	"	१२६-१५	
(३९)	(१४७) भद्रपुर/भद्रपुर/भद्रपुर	"	"	१२७-१५	
(४०)	(१४८) भद्रपुर/भद्रपुर/भद्रपुर	"	"	१२८-१५	
(४१)	(१४९) भद्रपुर/भद्रपुर/भद्रपुर	"	"	१२९-१५	
(४२)	(१५०) भद्रपुर/भद्रपुर/भद्रपुर	"	"	१३०-१५	

[illegible]

क्रमांक	कार्यक्रम	रुपाना	निर्माणकाल	गणसंख्या	विशेष विवरण यादि
(१२)	(१०२) बट्टामार्गपुराणेनगर (२ एकर)	पुणेनाथ भुवनाथ	१७१२	४१३-४१४	घर-आनी उपरेवाभरी बाटो ।
	(१०६) चण्डिकादेवीभारतानीमोडगाव (२ एकर)	"	"	४१४वा	उपरेममली योगकी पुढार बाटो ।
	(१०७) ब्राम्हणानीमोडगाव (१३ एकर)	"	"	४१४-४१५	"
	(१०८) अर्वातुपुडगाव (१४ एकर)	पुणेनाथ	"	४१५वा	उपवाकोटिकी बाटो दे ।
	(१०९) निरंजननिर्वाणवने (१३ एकर)	"	"	४१५-४१६	"
	(११०) चण्डिकागाव (१२ एकर)	"	"	४१६वा	योगीकी गावानी
	(१११) भैरवागाव (१७ एकर)	"	"	४१६-४१७	विष्णुसंस्कृतभाषानिधित ।
	(११२) नान्दगावरीरामावलीम गाव (१२ एकर)	"	"	४१७-४१८	"
	(११३) ब्राम्हणानीमोडगाव (१२ एकर)	"	"	४१८-४१९	"
	(११४) नान्दगावनीमोडगाव (२० एकर)	"	"	४१९-४२०	"
	(११५) ब्राम्हणानीमोडगाव (२० एकर)	"	"	४२०-४२१	"
	(११६) ब्राम्हणानीमोडगाव (२० एकर)	"	"	४२१-४२२	"
	(११७) ब्राम्हणानीमोडगाव (२० एकर)	"	"	४२२-४२३	"

[illegible]

क्रमांक	कर्मनाम	शर्तः	भिरिक्तमय	पञ्चमं क्रमा	विशेष विवरण यादि
(१४)	(११७) वनपक्षीय	कक्षीर	१७१२	४८८-४८९	शोहे-नीपादि सरस छेक द्वितीयके पद हैं।
	(११८) मृगजलमिश्राणा	विषां बाहिज		४८९-४९०	हेयो-मिश्रवर्णविशेष वृत्त २४२ तथा १ ४५।
(११९)	मृगपरिवेषाणा एव २९			४९०-४९१	
(२)	(१) मृगजीर्णवशात् एव ३२			४९१-४९२	वाहिसे-भाष्य सीप तथा २४३ मुक्तो तत्काले मोह
(२२१)	(२) मृगजीर्णवशात् एव ४५			४९२-४९३	वाहिसे-हृदको हृदको कुमासो डारो मिरको मोह
(२२२)	मृगजीर्णवशात् एव १९	"	"	४९३-४९४	
(२२३)	मृगजीर्णवशात् एव ५७			४९४-४९५	
(२२४)	मृगजीर्णवशात् एव ३३४		"	४९५-५००	शोभा मोरठा शोभापदो वाहिसे मयस्य वृत्तय साहित्यका पद्य हैं। विद्यारो वाहिसे भाषाको वाद दिनाता हैं। मेषको पराकाष्ठाके भाष्योति मरुतुर भाषाको सुवसा मोर भाष्योरो मूलि विषां वाहिसेका एव विषासे मुक्त भी नही विषा हैं।
(२३२)	मृगजीर्णवशात् एव २२		"	५००-५०१	मृग मरुतुर एव हैं। वाहिसे भी हैं।
(२३५)	मृगजीर्णवशात् एव ३			५०१-५०२	

क्रमांक	कर्मनाम	कर्म	निमित्तमय	वचनसंख्या	विशेष विवरण यादि
(१४)	(१४७) पुण्ड्रिकचक्षुमी एवम् १० (१४८) पुण्ड्रिकचक्षुमी एवम् १७	मिठा याजिक	१७१५	५ ७४१ ५ ७-५११	प्रायः दोहा एवम् प्रयुक्त होता है। पुनर्गन्ध नामाको लक्ष्य है।
	(१४९) वरजन्मो (राग मीरी) मरुहार नाम यादि			५११-५१२	
	(१५०) वचनमामो एवम् १५		"	५१२-५१३	
	(१५१) वचन एवम् १५			५१३-५१४	
	(१५२) पुनर्गन्धचक्षुमी एवम् २४३	"		५१४-५१५	अनुत्त रोषक कथा है। अन्तर्गन्ध चक्षुमी है।
	(१५३) पुनर्गन्धचक्षुमी एवम्			५१५-५१६	गण लया ५२५ पद्य है। अन्तर्गन्ध चक्षुमी है।
	(१५४) निरञ्जनायुगलपद्य			५१६-५१७	अन्तर्गन्ध चक्षुमी कथा मीरीका कथाया प्रयोग होता है। अन्तर्गन्ध नाम मीरी विद्या है। अन्तर्गन्ध (मार्गचक्षुमी) ऐसा मित्रा है।
	(१५५) निरञ्जनायुगलपद्य			५१७-५१८	अन्तर्गन्ध चक्षुमी है।
	(१५६) निरञ्जनायुगलपद्य			५१८-५१९	
	(१५७) निरञ्जनायुगलपद्य			५१९-५२०	
	(१५८) निरञ्जनायुगलपद्य			५२०-५२१	
	(१५९) निरञ्जनायुगलपद्य			५२१-५२२	
	(१६०) निरञ्जनायुगलपद्य			५२२-५२३	
	(१६१) निरञ्जनायुगलपद्य			५२३-५२४	
	(१६२) निरञ्जनायुगलपद्य			५२४-५२५	

क्रमांक	व्यवसाय	कार्य	निर्माणमय	पञ्चसंख्या	विशेष विवरण आदि
(१४)	(१४१) गुम्बरगलीके घर (१४२) मैत्रादी देताबनी (१४३) हरिमयूनीकी देताबनी घर ३६ (१४४) छिन्नके घर १ घर (१४५) कुकलील (१४६) गुरु कलिल घर १६	गुम्बरगास मैत्रावास काहीरी हरिमयूनी मैत्रिवास गुरला कारण (१) लाल गुम्बरगलीक (२) लालवास (३) माथी (४) काण्ड (५) पल्लवी (६) काबिद (७) माथोलामि (८) कलि नद (९) हरिमयूनी परमवास गुरुगाथाय " मोहिनवास	१७१ " " "	(१६-२२७ २२७-२३५ २३५-२४६ २४६-२५ २५ वां २५०-२६१	घरमाथे १ कपटवालाका घर भी छि ।
(१४७)	(१४७) लीलापदरात्मको (बीपार्थ ४५) गुरुगाथाको घर (१४८) निर्वाणकोण्ड गुरुकोको (१४९) वरनालागण्ड लोको १२ (१५०) गुरुकोको भीला (गुरुकोको) घर २५	(१४७) लीलापदरात्मको (बीपार्थ ४५) गुरुगाथाको घर (१४८) निर्वाणकोण्ड गुरुकोको (१४९) वरनालागण्ड लोको १२ (१५०) गुरुकोको भीला (गुरुकोको) घर २५	" " "	२६१-२६४ २६४वां २६४-२६७ २६७-२६८	विशेष संकेतले घोष-पत्र छि ।

क्रमांक	व्ययवर्णन	वर्ग	निमित्तवस्तु	वस्तुसंख्या	विशेष विवरण
(१४)	(२२१) कर्मविद्यापीठ (२२२) भारतीजीका लोक पुस्तक (२२३) राजपट्टनम कल्ल पत्र ७० (२२४) कोटिपट्टनमको कला (२२५) नागदेवीको वस्त्र (२२६) जिलापट्टनमको वस्त्र	योगदान रत्न अग्रजपट्टनम अग्रजपट्टनम	१०१ " " " "	२१५-२१६ २१६-२१७ २१७-२१८ २१८-२१९ २१९-२२० २२०-२२१	विशेष संस्तुतका प्रत्यक्ष है। रत्न-१९५२ संस्तुत है। नोट-यह पुस्तक संस्तुत १०१ व्ययवा इससे पूर्वका भिन्ना हुआ अतीत होता है अतः कि बीकानेर नगरपालिकाके प्रत्यक्ष आगतपुस्तक समाप्ति पर भिन्ना हुआ है। प्रत्यक्ष को संस्तुत १०१२को प्रत्यक्ष भिन्ना गई है यह पुस्तक स्वयंके प्रत्यक्ष नगरपालिका भिन्ना हुई अतः होती है। (सं)
१२	गुरुका (१) विद्यापीठान्न १ १ पत्र (२) नगरपालिका वीर पत्र (३) विद्यापीठान्न (४) अतिथिभोजन (५) १२ वस्त्र	अग्रजपट्टनम योगदान योगदान अग्रजपट्टनम अग्रजपट्टनम	१० १० १० १० १०	१-१० १-१० १-१० १-१० १-१०	प्रत्यक्ष है। इसमें दोषा बीकानेर प्रत्यक्ष पत्र है। नगरपालिका १११ प्रत्यक्ष प्रत्यक्ष १५८ प्रत्यक्ष है। राजपट्टनम-राजपट्टनम-राजपट्टनम प्रत्यक्ष । कि -मन्त्रालय राजपट्टनम-राजपट्टनम पुरोहितमन्त्रालय राजपट्टनम-राजपट्टनम

क्रमांक	इच्छाया	वर्ग	निर्दिष्ट	वर्गवर्ष	विशेष विवरण
(१२)	(१) मातृ प्रेमप्रीति यादि (२) राजकीयिका	केवलवर्ष	१७७४ १८७७	२-१७७४ १-१७७४	मि. क.—पुरोहित रामराम संयोगेयस्य ।
१३	कुटुम्ब— गोता (भावाभ्यास)	इच्छाया	१८७७	७	मि. क.—बाबुल रामककन भारतीस्य केवल वर्षाभ्यासते । अहं प्रकाशे लिखी है ।
१४	कुटुम्ब— (१) गोता (भावाभ्यास)	मध्यवर्ष	१८७७	१-१७७७	१८ वर्ष वयस्य । ए. का.—मं १७७७ दीपावली । मि. क.—रत्नसुख मातृवर्षाभ्यास । प्रति वर्षे है ।
१५	(२) सुखि स्वोद्योगावली गोता (भावाभ्यास)	मध्यवर्ष	१८७७	१७७७-१७७७	मृत्यु है । १ प्रत्याप्रीति प्रकाश है । मोट—इत्ये स्तोत्र किं विनी-पद्या वादि विद्या है । दीपावली स्तोत्र वयस्य है । सेवायाम् सर्वो सुखिकिया अष्टुरनिवासीके मिने इत्त प्रकाशकी रचना है । कदाचत्तुर दीपावलीका मध्यवर्ष वा । यह मृत्युवर्ष वयस्य वा ।
१६	गोता (भावाभ्यास)	अष्टवर्ष	१८७७	१७७७	मि. क.—दीपावली इच्छायाभ्यास मय वयस्य वयस्य है । मृत्यु व वयस्य है ।
१७	(१) गोता (भावाभ्यास) (२) कोटिप्राथम्य	अष्टवर्ष	१८७७	१७७७	१७७७-१७७७

क्रमांक	राजस्थान	कला	मितिप्रमाण	पत्रावस्था	विषय विवरण आदि
४०	सिंह (वर्तमान) की कला	गोपालराज कविता	१९२२	२२	२.५५-५६ १९२५ । सि. क. - अष्टाष्टाभाषा कोशी समाजसमय विद्यालय मुम्बई ।
४१	गुरुजी-अनीयराज (राजस्थानी)	गुरुजी	२ बी. ए.	१-३८	इस गुरुकेसे उसको और समाजकी प्रतिष्ठा कर है । बन्ने गानियों की भावनाएं आदि है ।
४२	(१) राजस्थानी आदि	गुरुजी	१८२७	७१-११५	इसकी भावनाओं के व्यापक बर्णन है । नोट-इस गुरुकेसे कोमुनेटिज्मकी मुक्ती परामर्श कृति है नही मिलती । देव कर प्रतिष्ठा की गई है । (स.)
	(२) गुरुभाषित	"	"	१४७-१४८	
	(३) राजस्थानी भाषा	राजस्थानी	"	४२-४८	
	(४) राजस्थानी भाषा	राजस्थानी	"	४८-५२	
	(५) राजस्थानी भाषा (पुस्तक)		"	१७१-१८५	
	(६) राजस्थानी भाषा (पुस्तक)		"	१८	
	(७) राजस्थानी भाषा (पुस्तक)		"	४१-४५	
४३	राजस्थानी भाषा	गुरुभाषित	१९७	१५	यह 'प्रतिष्ठा' नामक पुस्तक है जिसमें सारा पुस्तकस्थानी समाज है । सारा समाज को राजस्थानी भाषा में लिखित कर व को राजस्थानी भाषा में लिखित १९१७ को है । यह समाज समाज विद्यार्थी को स्पष्टता देता है और यह गुरु को गुरु है, तथापि यह उस्ताद की कला है तो राजस्थानी भाषा है ।

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	निर्गमय	पत्रांख्या	विशेष विवरण आदि
४६	(१) लक्ष्मण-विरचित-पिङ्गल	शुचिरसकवि	१९७२	११३	र.का-१८७। कहीं-कहीं पर भ्रष्टित है। एवं कविराज कुसुम दामिनीके बसक स्थान आगतको सं १८१६ की पुस्तकसे प्रतिनिधी कृत है।
४७	(२) एतेकार्कनमाला मञ्जरी प्रतापसिंह-विद्याभूषण १ ११ पृष्ठ	नन्ददास एतेक कवि	१८९९ १९८३	११४-१२७ १२८	कहीं-कहीं इससे स्थान प्रयुक्त है। लि.क-नोरीचन्द्रमार्ग। बेला गोरोक्षकरकोकी पुस्तकसे नकल कराई।
४८	नेहुरङ्ग कव २१६	राजराजा भुवसिंह	१८२	८२	र.का-सं १७८४। यह पुस्तक कविराजा गुरारीदासकी प्रयागकी पुस्तकसे नकल कराई।
४९	अलखीरचारा	एतेक कवि	२ बी.प्र.	२७	यह पुस्तक पूर्ण नहीं मिली। (सं)
५०	भरनविमोद	कवि जान	१९		३२ कवितको पुस्तक है। परन्तु इसमें पूर्ण ११ कवित नहीं हैं। प्रति कोपे-कीच एवं भुवसिंह है। अन्तर्गुरुके गदाय कवि जान कृत नायिकावेद और कोरका एम्बोवद एवं है। (ईरकोरका पुस्तकालय।)
					नोट—इसमें पाँच छहेलियोंकी चारता और मुक्तामो विष्णुपंजर प्रबन्धनामो पुन वल्गुलिनामो आदि छहियोंके भी कुछ पत्र है। कुछ पत्र आदि भी मिले हुए हैं। (सं)

क्रमांक	व्यवस्थापक	कला	निमित्तक	पत्रसंख्या	विशेष विवरण यादि
२१	(१) गुजरवाल (२) हरिवालजीकी बाकी (३) " (४) प्रमुखकायस्थोंत (५) बलिवालजीकी	गुजरवाल हरिवाल " राजवाल	१२वीं " "	१-४० १-१२ १-११ १४-११६ १४-१२	(प्रमुख) इस पत्रके पत्र पुरोहितजीकी सुचीमें ७५ संख्या दी है और उसके तामने 'प्रमुख' संख्या संग्रह पत्रके 'बलिवाल' लिखा है परन्तु इसमें बहु नहीं है। इसमें जो मुद्रित पत्र मिले हैं वे यहाँ प्रकट कर दिये गये हैं। (सं)
२२	राजपाली	कवि बाल	१२२२	१२३	र.का-तान् १ ४२ द्विबारी। १९२१ विष्णो सम्बन्ध। १८८६ की प्रतिलिपिमुद्रित। सि क-बली पुरखबान् भूभूमिपत्रे। इस प्रतिका निविकार हुआरीमस भीमास है। यह पत्र ६ दिनामें रखा गया था। (सं)
२३	गुरका-	राज	१२वीं प	४२	प्रमुख व कीर्ण प्रतिलिपि है। सम्बन्ध पोषाकवाताजीसे प्राप्त।
२४	(१) राजपाल (२) गुजरवाल	गुजरवाल पत्रके कवि	" १२वीं प	गुजरवाल २४	इसमें पुरोहितवाताजीका सम्बन्धपत्र भी है पत्र पत्र है।
२५	गुजरवाल	गुजरवाल	१२७२	२	१९२१ की प्रतिलिपिमुद्रित।

क्याङ्ग	उपनाम	वर्ग	निर्णय	पत्रकका	विशेष विवरण पात्र
२६ भोवाची		वीरभक्तभक्तिक	१९८८	१८	सं १९८६को प्रतिष्ठे प्रतिनिधित्व । निष्क-वीरभक्तानु आर्मा कर्तुम् (वीर) निष्काली। निष्काली(वीर)से हो करभक्तभक्तिक नाम विद्ये है (१) पुच्छ २ ३ सं ३८४ पर । इसके द्वारा रचित ग्रन्थका नाम 'वीर' निष्काल है । इसका अर्थ १९८१ को रचनाकाल से २७१ विद्या है । इससे भक्तभक्तिकका उत्पत्ति पुच्छ ७४५ सं ७८ पर है । ये भक्तभक्तिक-सम्प्रदायके हैं । इसके नाम (१) पुच्छ पर (२) नामों मिले हैं । रचनाकाल सं १८ विष्काली । विष्काली निष्काल है कि 'वीर' पुस्तकमें है । यह गीत पुरोहितको द्वारा शुरूके पर हो निकाल दिया है । (सं) नाम कारकका पुरावा शुरूका १ ५६ पंक्ति में है ।
२७ गुरका--	(१) विष्कालीको नाम (२) नामपाला (इत्यादिनाम)		१९८८	१८	गुरु भक्तिक । गीताका पद्यकार पद्यीत होता है । इसके बाद पद्यका है । निष्क-वीरभक्तिक । यह कथा पद्यकारके सम्बन्ध है । निष्काल पद्यीत कीर्तिसे सम्बन्ध है । (सं)
२८ गुरका--	(१) रचितभक्तिक		१८८३	१४	निष्क-वीरभक्तिक नामगुरावले ।

क्रमांक	उपबन्धनाम	कर्ता	मितिप्रमाण	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(२८)	(०) राजा जगद्वी ज्ञान	मधुसूदनदास	१८३६	२६	मि.क. बागा चौबटो बयसगीरी हसन- [विद्या] नवरत्नमयी श्री चारबेके पालका मृतका १३×६ अनुलका है। अनेक राग रागिनिर्घोष रहित।
	(३) परमजोहो व्यापको	मधुसूदन (मोदबुलसी- निवासी)	१८४२	१२२	अनुपं ।
	(४) प्र बर्तन	परमानन्ददास	"	६	मोद-इस मृदकेसे घट्टित ५ अंगुलिके घट्टितरहित
	(६) ललीचरनी की कथा		"	४	घट्टी-मृदासे घुट्टकर मोठे घादि भी है। एक घावजलीकी पत्रल भी है।
२९	पं.रंगीन (भाषा)	अनमुकुन्द	१८११	२२	पुले बने। मेकक (रूपविता ?)की मिली। बैराम्मि प्रगत १३-१२ १६ ४ ई ।
३०	राहुअकलीभावरची	अनगोपास	१८८३	४८	मि.क.-ज्योतिषी मुन्नाबिहारीदास बजपुर। अनुपं । गोपीचंदजीकी मोस लीगो १) में।
३१	विहारी मतलई (परासादि-प्रकरणकवय)	विहारी	१८वीं सा		ता ६ १२ ३६ ।
३२	नरका -				
	(१) कविश्या	केसवदास	१८४२-४३ ७		अनुप. चौबे प्रभावसे कुछ घाये तक (१६४६ के पत्र तक)
	(२) भीताभाषामुखार	आनन्ददास		६-३४	केवल १२ अष्टावका अनुवाद ।
	(३) विष्णुल (अनुप)			३६-४३	इसके घाणे १ मोरोंका पद भरकासका पद नवा मधुसूदन मानसिह मिर्जा राजाकर्मिह मधुसूदनकुमार अवतारिहके प्रसारितकरक अविल भी है। इससे ५ पत्रोंसे भीहजारा पयोहिारी (गमतावासे)का स्तोत्र भी है जो अनुपं है। (सं)

क्रमांक	पुस्तकनाम	कर्ता	निर्गमिषय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण यादि
११	दंष्ट्रकथा (दीर्घातिरोदनाका)	दामाशराय	१७७७	६२	अध्यासके महाराजा साबाई अतासिंहजी याकासे रचित । कि. क. -सहाय्यक कादम्बर हास्य कीमती-नामकीय याचिर (पुण्या की वस्ती) के समस्त अयपुण्ये मिश्रित । त्याच देवकीसोई की देवकी पुरोहित-संकीर्तन ग्रन्थ । हेही काव्य वर पत्नी स्थायीकी मित्री ।
१२	विजयपत्रिका	कुलवीरराय	१८१२	८३	कि. क. -साय. बोचो कीरीमिवासी । एक संक्षेप कीर्तिकाई, की पोलीकाईकी है । अंशूरी काव्य वर मित्री ।
१३	हज्जमुसिरे एतुद वय			३	की पुरोहितकी कथा करते थे कि यह सोतीकाई
१४	अर्धविद्यापत्रिका			२३	की पोमिनी की । बहु उलकी अवेष्टा कीमती
१५	बदला— (१) बचोस्की काकी (१ सं०)	राजकाशकी	१८७०		की । (सं.)
		बचोर	१८७०		कडे पुण्या बचोसि १ डि १ ७ काव्य एक ।
					देवी काव्य वर बोचो-सा बुरका ।
					अधुने । काव्य हुआ कीर्तन पुस्तका । १ अंशुल
					साचो (समकीरस) बला नहीं है ।
					आदि के ८३ वय मुद्रित है जो ग्रन्थ नहीं है ।
					पत्रों पर संख्या दर्शित नहीं है । वय हास्य
					कीर्तन है कि पूरे ही कीर्तन हो जाते हैं । अतः इस
					प्रति का विवरण पुरोहितकी की मुंबी के
					अनुसार ही लिख दिया गया है । (७)
	(२) इतिहासकी काकी ७	हिरराय	२०		

[illegible]

क्रमांक	सूचक	काल	मिति/विवरण	पत्रांक	विवरण/विचार
(१७)	(२२) महाराष्ट्र-गोरखपुर		१७वीं अ.		२१ अंक है। प्रत्येक प्रत्येक नाम 'आम' की प्रत्येक प्रत्येक है।
(२३)	राज-गोरखपुर		"		प्रत्येक प्रत्येक है।
(२४)	राज-गोरखपुर				प्रत्येक प्रत्येक है।
(२५)	राज-गोरखपुर				प्रत्येक प्रत्येक है।
(२६)	राज-गोरखपुर				प्रत्येक प्रत्येक है।
(२७)	राज-गोरखपुर				प्रत्येक प्रत्येक है।
(२८)	राज-गोरखपुर				प्रत्येक प्रत्येक है।
(२९)	राज-गोरखपुर				प्रत्येक प्रत्येक है।
(३०)	राज-गोरखपुर				प्रत्येक प्रत्येक है।
(३१)	राज-गोरखपुर				प्रत्येक प्रत्येक है।
(३२)	राज-गोरखपुर				प्रत्येक प्रत्येक है।
(३३)	राज-गोरखपुर				प्रत्येक प्रत्येक है।
(३४)	राज-गोरखपुर				प्रत्येक प्रत्येक है।
(३५)	राज-गोरखपुर				प्रत्येक प्रत्येक है।
(३६)	राज-गोरखपुर				प्रत्येक प्रत्येक है।
(३७)	राज-गोरखपुर				प्रत्येक प्रत्येक है।
(३८)	राज-गोरखपुर				प्रत्येक प्रत्येक है।
(३९)	राज-गोरखपुर				प्रत्येक प्रत्येक है।
(४०)	राज-गोरखपुर				प्रत्येक प्रत्येक है।
(४१)	राज-गोरखपुर				प्रत्येक प्रत्येक है।
(४२)	राज-गोरखपुर				प्रत्येक प्रत्येक है।
(४३)	राज-गोरखपुर				प्रत्येक प्रत्येक है।
(४४)	राज-गोरखपुर				प्रत्येक प्रत्येक है।
(४५)	राज-गोरखपुर				प्रत्येक प्रत्येक है।
(४६)	राज-गोरखपुर				प्रत्येक प्रत्येक है।
(४७)	राज-गोरखपुर				प्रत्येक प्रत्येक है।
(४८)	राज-गोरखपुर				प्रत्येक प्रत्येक है।
(४९)	राज-गोरखपुर				प्रत्येक प्रत्येक है।
(५०)	राज-गोरखपुर				प्रत्येक प्रत्येक है।

क्रमांक	पदनाम	वर्ग	निर्दिष्ट मूल्य	वर्षांक	विशेष विवरण यदि
(१८)	(६) राष्ट्रपति कार्यालय (२५७१ भाग) काठमाडौं	काठमाडौं	१८४६	१-२	संगठन र पुस्तकालयको व्यवस्थापनमा लागेको छ ।
	(७) राष्ट्रपति कार्यालय	काठमाडौं		२ ०-१९६	राष्ट्रपति कार्यालयको व्यवस्थापनमा लागेको छ ।
	(८) आचार्य कार्यालय	काठमाडौं		१९६-४ ६	पुस्तकालयको व्यवस्थापनमा लागेको छ ।
	(९) आचार्य कार्यालय	काठमाडौं		४ ६-४९५	पुस्तकालयको व्यवस्थापनमा लागेको छ ।
	(१०) राष्ट्रपति कार्यालय	काठमाडौं		४९५-४९७	पुस्तकालयको व्यवस्थापनमा लागेको छ ।
	(११) राष्ट्रपति कार्यालय	काठमाडौं		४९७-४९८	पुस्तकालयको व्यवस्थापनमा लागेको छ ।
	(१२) राष्ट्रपति कार्यालय	काठमाडौं		४९८-४९९	पुस्तकालयको व्यवस्थापनमा लागेको छ ।
	(१३) राष्ट्रपति कार्यालय	काठमाडौं		४९९-५००	पुस्तकालयको व्यवस्थापनमा लागेको छ ।
	(१४) राष्ट्रपति कार्यालय	काठमाडौं		५००-५०१	पुस्तकालयको व्यवस्थापनमा लागेको छ ।
	(१५) राष्ट्रपति कार्यालय	काठमाडौं		५०१-५०२	पुस्तकालयको व्यवस्थापनमा लागेको छ ।
	(१६) राष्ट्रपति कार्यालय	काठमाडौं		५०२-५०३	पुस्तकालयको व्यवस्थापनमा लागेको छ ।
	(१७) राष्ट्रपति कार्यालय	काठमाडौं		५०३-५०४	पुस्तकालयको व्यवस्थापनमा लागेको छ ।
	(१८) राष्ट्रपति कार्यालय	काठमाडौं		५०४-५०५	पुस्तकालयको व्यवस्थापनमा लागेको छ ।
	(१९) राष्ट्रपति कार्यालय	काठमाडौं		५०५-५०६	पुस्तकालयको व्यवस्थापनमा लागेको छ ।
	(२०) राष्ट्रपति कार्यालय	काठमाडौं		५०६-५०७	पुस्तकालयको व्यवस्थापनमा लागेको छ ।
	(२१) राष्ट्रपति कार्यालय	काठमाडौं		५०७-५०८	पुस्तकालयको व्यवस्थापनमा लागेको छ ।
	(२२) राष्ट्रपति कार्यालय	काठमाडौं		५०८-५०९	पुस्तकालयको व्यवस्थापनमा लागेको छ ।
	(२३) राष्ट्रपति कार्यालय	काठमाडौं		५०९-५१०	पुस्तकालयको व्यवस्थापनमा लागेको छ ।

यसरी राष्ट्रपति कार्यालयको व्यवस्थापनमा लागेको छ । (स)

[illegible]

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	निधिमूल्य	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
७	गुरुका— राष्ट्रवाणी	राष्ट्र	१८७८	५८६	छोटा गुरुका नाम बौट आशामकी बूटीका ४ संयुक्त बीड़ा और दास संयुक्त नामा है। मि. क.—बीकरीवास जयल-नागा सेनास बीकी आशामास यह रक्तार्थकर। पत्रक्ये अकरोसे मिली हुई जिसमें निम्नलिखित साधिका वर्णन है गुरुका पाना मरी है साधो- ११ × ७॥ संयुक्त।
७१	बीकीरप्रीतिविद्या (ग्रन्थ)		२ बी	२	छटा गुरुका सुखासा गुरुका संपुरा। लक्षि- ६ × ५॥ संयुक्त। संयुक्ती कायकका पता।
७२	गीताभूषणस्य		११-१८		
७३	गुरुका— (१) रामचरितकोटि पर ब मज्ज १२३ वर (२) गुरुतराजकीके पर (३) गीरीका पर १	रामचरण गुरुतराज मीरा	१८३१	६८ ६६-७७ अनकी	गुरुका सकल छीरका साधो ६ × ६ संयुक्त है मोक्षमहात्म्यकी विद्या गुरुका। आकरो से ब विद्यारो राम आभीकी गोरक गुबीकी राज'।
	(४) पवित्रलक्ष्मीसंग्रह २६ पत्र (५) नाकापत्र ३७ पत्र (६) नापुनलक्ष्मीसंग्रह (लक्ष्मी- संग्रह) ३३ पत्र (७) सेनाभूषण पर ब रेखा	रामचरण " " " " मेरीम	"	७६-७९ ८२-८६ ८६-९० ८६-९३	२३ पृष्ठकी पीठ पर एक कोष्ठक है जो संभवतः प्रथमकोष्ठक है। यह मूल प्रतिके आकरा मिका गुरुका प्रतीक होता है।

राजपञ्चाय शाब्दविचारनिवृत्तान्न — (विद्याभूषण पात्र नंदह-भूषी)

अध्याय	शब्दार्थ	वर्ण	मिति	निमित्तक	पञ्चसूत्र	विशेष विवरण
(१३)	(क) म (ली)जीके वर व पात्र वरवर्द्ध	नरतो	१८४१	१८-१२७		
	वर	मुसुतोवाल				
	"	पात्रु हुतेन				
	"	पात्रात्तर्कवि				
	"	भोर				
	"	वाततानि				
	"	रत्नपेठ				
	"	पात्रमहास				
	"	कपरात				
	"	वपना				
	"	बाहु				
	"	अपरीग				
	"	अपरीग				
	"	नागरीवाल				
	"	वसन्त				
	"	वपतावर				
	"	रत्नकसमहो				
	"	रामचरम				
	"	भारतीगम				
	"	वपारात				
	"	वात				

क्रमांक	व्यवसाय	कर्ता	निर्माणमय	पञ्चसंख्या	विशेष विवरण आदि
(७१)	(अ) घर	सुरदास बलराम विष्णुदास सद्गुणदास काजीमहुसैन सुरम्यास भाभीरव हरिदास परमलाल जगन्मोही बाबिर अपीकादास रायचरण " " " " " " सूरदास लेखीनारायण मीरवी	१६२१	१२७-१३ १३७-१३८ १३८-१३९ १३९-१४० १४०-१४ १४ -१४५ १४५-१४७ १४७-१४८ १४८-१४७	उपरोक्त है।
	(६) सुरमसिमा देव काल (१) भाग्यदास ७२ काल (११) विद्यालक्ष्मीदास १२७ काल (१२) जगन्मोहीदास २७ काल (१३) जगन्मोहीदास ३ काल (१४) विद्यालक्ष्मीदास २५ काल (१५) जगन्मोहीदास ३३ काल (१६) जगन्मोहीदास ३४ काल (१७) जगन्मोहीदास ३४ काल				

अध्याय	अवधान	कर्ता	विवरणम्	पत्रसंख्या	विवरणं विवरणं आदि
(११)	(१७) परमपुरुष	भरती	१६३१	१७१-१७७	
	"	मुक्तानन्द	"	"	
	"	ब्रह्मसागर			
	"	मीरा			
	"	गुरुदास			
	"	गुरुतराम			
	(१८) नानकजीको ३२ पत्र			१७७-१८३	मि ३-अथरीगाराम हाबरसम्ये ।
७४	पुरुषा—				
	(१) राघुदासको (५७)	राघुजी	१८७०	१-१७६	बड़ा पुरुष । मुनिरसे बिरज्जीव रामगोपालजीम सेवा या ता ७-४ २७को सोभरसे सामु साबरीवालजी ।
	(२) बगोत्तोको जाली (४३ पत्र)	बगोर		१७१-२ ७	
	८१६ जाली				
	(३) बगोरजीका पत्र ४४३		"	२ ७-२७६	
	(४) लक्ष्मणपुत्रा (राम पुत्रा)			२७७७	
	(५) बाबरी			२७७-२७८	
	(६) लालरीरामको ७ पत्र			२७८-२७	
	(७) लालरी बड़ी ८ पत्र			२७९-२८३	
	(८) दुलीरामको २ बड़े पत्र		"	२८३-२८४	
	(९) लालरीलालगोरामको ८ पत्र			२८४-२८७	
	(१०) बागुपुत्री १३ पत्र	"	"	२८७-२८८	
	(११) लालरीरामको ४ पत्र	"	"	२८८-२८९	प्रात मे-‘बागु बगोर नामदेवी’ ।

क्रमांक	वस्तुनाम	कला	भित्तिपुष्प	पुष्पकला	विशेष विवरण यदि
(७४)	(१२) ताम्रवलीके पर १५८ पर	ताम्रवली	१८५०-११२		
	(१३) रेशातलीके पर ८४ पर	रेशात	११२-१२६		
	(१४) रेशातलीकी साक्षी ४ साक्षी		१२७५		
	(१५) हुलियातलीके पर १ १ पर	हुलियात निरंजनी	१२७-१४३		
	(१६) हुलियातलीकी साक्षी ४	हुलियात	१४४		
	(१७) झुगा पर (पाग माक ३ फलारे)	"	१४४-१४५		
	(१८) बाण्डुली १२ फल		१४५-१४६		
	(१९) बलवरीरनेको १ पर		१४६-१४७		
	(२०) कुन्नी १८ फल	बालक	१४७-१४८		एक मङ्गल ।
	(२१) बालकलीके पर ४		१४८		एक मङ्गल ।
	(२२) घनपुष्पीया पुष्प		१४९-१४९		
	(२३) बलवलीका पर	बलवली	१४९		
	(२४) बाण्डुलीका पर २७	बाण्डुली	१४९-१५०		
	(२५) बाण्डुलीकी साक्षी ६ मङ्गल		१५०		
	(२६) घनपुष्पीया १४ फल	मरीचकाल (बाण्डुली)	१५१-१५२		घनपुष्प इत प्रत्यक्षा नाम प्रत्यक्षमन्त्र
	(२७) मरीचकालके पर १ पर		१५ - १७		लिखा है ।
	(२८) मरीचकालकी साक्षी ४५ फल		१७०-१७३		
	(२९) मरीचकाल काक्षीके पर २	मरीचकाल काक्षी	१७२		
	२ फल				

क्रमाङ्क	सूचकवाक्य	कला	विशिष्टाव	वसन्तद्वय	विशेष विवरण धारि
(७४)	(३) रामानन्दजीका घर (३ घर रामानन्द २ राम)	रामानन्द	१८वीं व	१७२-१७३	
(७५)	(३१) गुणानन्दजीका घर (१ घर गुणानन्द १ राम)	गुणानन्द		१७३वीं	
(७६)	(३२) चानानन्दजीका घर १ चानानन्द	चानानन्द		१७३-१७४	
(७७)	(३३) हनुमानन्दका घर ४ घर ३ राम	हनुमानन्द		१७४वीं	
(७८)	(३४) पद्माजीका घर (२ राम २ घर) पद्मा	पद्मा		१७४-१७७	
(७९)	(३५) शैवजीका घर १ शैवजी	शैवजी		१७७वीं	
(८०)	(३६) शैवजीका घर १७ व राम ७ वीं शैवजी	वीं शैवजी		१७७-१७८	
(८१)	(३७) वीणजीको साली १ "	"		१७८-१८०	
(८२)	(३८) लोभजीका घर ७ लोभजी	लोभजी		१८०-१८२	
(८३)	(३९) परमजीका घर ७ परमजी	परमजी		१८२-१८५	
(८४)	(४०) बरनजीको साली ३ बरनजी	बरनजी		१८५	
(८५)	(४१) लक्ष्मीका घर २ लक्ष्मी	लक्ष्मी	"	"	
(८६)	(४२) अम्बजीका घर १ अम्बजी	अम्बजी	"	"	
(८७)	(४३) ज्ञानविमोदका घर १ ज्ञानविमोद	ज्ञानविमोद	"	"	
(८८)	(४४) योगजीको अम्बजी ४ घर योगजी	योगजी	"	"	
(८९)	(४५) बहुरामजीको अम्बजी ३ घर बहुराम	बहुराम	"	"	
(९०)	(४६) शैवजीको विष्णुजीको शैवजी	शैवजी	"	"	
(९१)	(४७) कालीकायको साली काली	काली	"	"	

क्रमांक	वस्तुनाम	कला	मिरिगमस	पत्रसंख्या	विषय विवरण आदि
(७४)	(४८) एक कठोरको शाही, (शाही ७१ र पर)	करीब खेल	१ नवीम	१८८-१८९	
	(४९) शाही मयूरकोका पर न शाही २४ पर शाही ३	मयूरको	"	१८९-१९०	
	(५०) दोष आदरीका पर ३	मादरीको	"	१९०-१९१	
	(५१) प्रियोकनकोका पर ३	प्रियोकन	"	१९१-१९२	
	(५२) सोमकीका पर ४	सोमकी	"	१९२-१९३	पुनरावली भाषासे ।
	(५३) बन्धव महिमा शाही	बन्धुबन्ध	"	१९३-१९४	
	(५४) नरको मेहुलाका पर ३	नरकी	"	१९४-५	
	(५५) श्रीमकीका पर १	श्रीमकी	"	५ वीं	मारवाही भाषासे ।
	(५६) ब्रह्मापरकीका पर २	ब्रह्मापर	"	"	
	(५७) श्रीमकीका पर १	श्रीमकी	"	"	पुनरावली भाषासे ।
	(५८) मकीप्रकीका पर १	मकीप्र	"	"	
	(५९) श्रीमकीका पर १ बड़ा	श्रीमकी	"	५ ७-५ १	
	(६०) देवीरासकीका पर २	देवीरास	"	५ १-५ ३	मोकरहस्य; उत्तम ।
	(६१) शिवकलकीका पर ३	शिवकल	"	५ ३-५ ५	बखरानी भाषासे योगरहस्य है ।
	(६२) श्रीमकीका पर १	श्रीमकी	"	५ ५वीं	योगरहस्य ।
	(६३) योगिन्दरावकीका पर १	योगिन्दराव	"	५ ५-५ ६	
	(६४) नरगिन्दरावकीका पर १	नरगिन्दराव	"	५ ५वीं	
	(६५) मुकुन्दनारतीका पर २	मुकुन्दनारती	"	"	यह मिला कडीरी मन्त्रमूर्त है ।
	(६६) लक्ष्मणरावकीका पर १	लक्ष्मणराव	"	"	
	(६७) विद्यारावकीका पर १	विद्याराव	"	५ ५ ५ ६	

क्रमांक	राज्यनाम	वर्ग	अधिकृत	पदसंख्या	उपलब्ध है।
(७४)	(१७) मेनडीका घर ३	मेनडी	१७वीं प	४ १७	उपलब्ध है।
	(१८) मारीडीका घर १	मारीडी		"	
	(१९) बाराबोडिकीका घर १	बाराबोडिकी		"	
	(२०) मापडीका घर १	मापडी		४०१-४ ७	
	(२१) चम्पूरडीका घर ४	चम्पूरडी		४ ०७	
	(२२) भुवडीका घर ३	भुवडी		४ ७-४ ७	
	(२३) लोहडीका घर २	लोहडी		४ ७	
	(२४) बोरडीका घर १	बोरडी		४ ७	
	(२५) बीरडीका घर २	बीरडी		४ ७	
	(२६) चारवाडीका घर १	चारवाडी			
	(२७) चारवाडीका घर १	चारवाडी			
	(२८) चारवाडीका घर १	चारवाडी			
	(२९) चारवाडीका घर १	चारवाडी			
	(३०) चारवाडीका घर १	चारवाडी			
	(३१) चारवाडीका घर १	चारवाडी			
	(३२) चारवाडीका घर १	चारवाडी			
	(३३) चारवाडीका घर १	चारवाडी			
	(३४) चारवाडीका घर १	चारवाडी			
	(३५) चारवाडीका घर १	चारवाडी			
	(३६) चारवाडीका घर १	चारवाडी			
	(३७) चारवाडीका घर १	चारवाडी			
	(३८) चारवाडीका घर १	चारवाडी			
	(३९) चारवाडीका घर १	चारवाडी			
	(४०) चारवाडीका घर १	चारवाडी			

क्रमांक	कृपापात्र	कर्ता	मितिप्रमाण	प्रमाणिका	विशेष विवरण आदि
(७४)	(७७) सप्तवारण्य (७८) पञ्चमिहिन्य (८०) प्रायश्चित्तोपन्य (८१) शिक्षादर्शनोपन्य (व्यापिका) (८२) अष्टावक्रोपन्य (८३) मरुत (मिहिन्य) बोध (व्यापिका) (८४) मरुत-गोरक्षोपन्यसार कुल ११३ (८५) प्रायश्चित्तोपन्य (८६) रोमावक्रोपन्य (८७) शागोपन्य (कुल ३४ व्यापि- नित) (८८) काष्ठोपन्य (८९) व्यापिनिम्ब (९०) गोपयकपोली कुल ३ (९१) ब्रह्मोपन्य-मिरुत-व्यापि (९२) (९३) (९४) (९५) व्यापिनिम्बोपन्य बोधो २३ (९६) व्यापिनिम्बोपन्य बोधो ५५ (९७) व्यापिनिम्बोपन्य बोधो ३२ कुल	गोरक्षनाथ " " " " ब्रह्मनाथ गुणीनाथ व्यापिनी व्यापिनी	१८वीं " " " " ब्रह्मनाथ गुणीनाथ व्यापिनी व्यापिनी	१९३७-१९३८ १९३८-१९३९ १९३९-१९४० १९४०-१९४१ १९४१-१९४२ १९४२-१९४३ १९४३-१९४४ १९४४-१९४५ १९४५-१९४६ १९४६-१९४७ १९४७-१९४८ १९४८-१९४९ १९४९-१९५० १९५०-१९५१ १९५१-१९५२ १९५२-१९५३ १९५३-१९५४	विशेष विवरण आदि महम्मदशाह गोरक्षनाथ । महम्मद शाहनाथ गोरक्षनाथ ।

क्रमांक	व्यक्ति-नाम	वर्ष	निमित्तक	पदसंख्या	विशेष विवरण यदि
(७४)	(१३) लक्ष्मी	अरवरी	१८वीं व	४९९-४९७	सो राग ।
	(१४) मोरोचरको पारो १८ पुत्र	अमरकोपाव		४९७८१	
	(१५) अमरकोपावको पुत्रो			४९८-४९८	
	१९ पुत्र			४९८८१	
	(१६) हाभोपावको पारो पारो ७			"	
	(१७) हाभोपावको पुत्र १			"	
	(१८) मोरोचरको पुत्रो ७	मोरोचरकोपाव	"	४९८-४९७	
	(१९) अमरकोपावको पुत्रो ७	अमरकोपाव	"	४९८	
	(२०) लक्ष्मीको पुत्र १	लक्ष्मीकोपाव	"	"	
	(२१) अमरकोपावको पारो ८	हृदयकोपाव	"	४९८-४९८	
	(२२) अमरकोपावको पुत्र १	"	"	४९८	
	(२३) अमरकोपावको पुत्र १	माधवकोपाव	"	"	
	(२४) अमरकोपावको पुत्रो १	माधवकोपाव	"	४९८-४९८	
	(२५) अमरकोपावको पुत्रो १	माधवकोपाव	"	४९८	
	(२६) अमरकोपावको पुत्रो १	माधवकोपाव	"	"	
	(२७) अमरकोपावको पुत्रो १	माधवकोपाव	"	४९८-४९८	
	(२८) अमरकोपावको पुत्रो १	माधवकोपाव	"	४९८	
	(२९) अमरकोपावको पुत्रो १	माधवकोपाव	"	"	
	(३०) अमरकोपावको पुत्रो १	माधवकोपाव	"	४९८-४९८	
	(३१) अमरकोपावको पुत्रो १	माधवकोपाव	"	४९८	
	(३२) अमरकोपावको पुत्रो १	माधवकोपाव	"	"	
	(३३) अमरकोपावको पुत्रो १	माधवकोपाव	"	४९८-४९८	
	(३४) अमरकोपावको पुत्रो १	माधवकोपाव	"	४९८	
	(३५) अमरकोपावको पुत्रो १	माधवकोपाव	"	"	
	(३६) अमरकोपावको पुत्रो १	माधवकोपाव	"	४९८-४९८	
	(३७) अमरकोपावको पुत्रो १	माधवकोपाव	"	४९८	
	(३८) अमरकोपावको पुत्रो १	माधवकोपाव	"	"	
	(३९) अमरकोपावको पुत्रो १	माधवकोपाव	"	४९८-४९८	
	(४०) अमरकोपावको पुत्रो १	माधवकोपाव	"	४९८	
	(४१) अमरकोपावको पुत्रो १	माधवकोपाव	"	"	
	(४२) अमरकोपावको पुत्रो १	माधवकोपाव	"	४९८-४९८	
	(४३) अमरकोपावको पुत्रो १	माधवकोपाव	"	४९८	
	(४४) अमरकोपावको पुत्रो १	माधवकोपाव	"	"	
	(४५) अमरकोपावको पुत्रो १	माधवकोपाव	"	४९८-४९८	
	(४६) अमरकोपावको पुत्रो १	माधवकोपाव	"	४९८	
	(४७) अमरकोपावको पुत्रो १	माधवकोपाव	"	"	
	(४८) अमरकोपावको पुत्रो १	माधवकोपाव	"	४९८-४९८	
	(४९) अमरकोपावको पुत्रो १	माधवकोपाव	"	४९८	
	(५०) अमरकोपावको पुत्रो १	माधवकोपाव	"	"	

क्रमांक	प्रत्येकाल	कार्य	निर्दिष्टमन्त्र	पञ्चसूत्र	विशेष विवरण यादि
(७४)	(१२४) देवनागरीकी सूची ४	देवनागरी	१०००.४४	४०४०	इसके प्राद्वर्षे "बीरासी पक्षी" की भाषा में या समीची कथा" लिखा है ।
	(१२५) देवनागरीकी सूची १५	पुष्पनीय	"	४०४०-४०४०	
	(१२६) देवनागरीकी सूची १५	गोरकनाथ	"	४०४०	
	(१२७) देवनागरीकी सूची १५	कनकनाथ	"	४०४०-४०४०	
	(१२८) देवनागरीकी सूची १५	"	"	४०४०-४०४०	आर्य कृषि का एक प्रमाण ।
	(१२९) देवनागरीकी सूची १५	"	"	४०४०-४०४०	
	(१३०) देवनागरीकी सूची १५	"	"	४०४०-४०४०	
	(१३१) देवनागरीकी सूची १५	"	"	४०४०-४०४०	
	(१३२) देवनागरीकी सूची १५	"	"	४०४०-४०४०	पक्ष जलस्य है ।
	(१३३) देवनागरीकी सूची १५	"	"	४०४०-४०४०	
	(१३४) देवनागरीकी सूची १५	"	"	४०४०-४०४०	
	(१३५) देवनागरीकी सूची १५	"	"	४०४०-४०४०	
	(१३६) देवनागरीकी सूची १५	"	"	४०४०-४०४०	आर्य कृषि का एक प्रमाण ।
	(१३७) देवनागरीकी सूची १५	"	"	४०४०-४०४०	
	(१३८) देवनागरीकी सूची १५	"	"	४०४०-४०४०	
	(१३९) देवनागरीकी सूची १५	"	"	४०४०-४०४०	
	(१४०) देवनागरीकी सूची १५	"	"	४०४०-४०४०	पक्ष जलस्य है ।
	(१४१) देवनागरीकी सूची १५	"	"	४०४०-४०४०	
	(१४२) देवनागरीकी सूची १५	"	"	४०४०-४०४०	
	(१४३) देवनागरीकी सूची १५	"	"	४०४०-४०४०	

क्र.सं.	व्यक्तिनाम	वर्ग	प्रविष्टिमास	पत्रसंख्या	विद्यार्थ विवरण यादि
(७४)	(१८) जैनजीकी माता २ (१९) जैनजीके लवैया २४ (२०) जैनजीका कन्या १ पद (२१) दीमाजीका पद ३४ (२२) मातः । मरुट (मि.री)	जैनजी	१८वीं प	२३९-२४७ २४७-२५८ २५८ २५८-२५९ २५९-२६०	राज्यजीकी स्तुति है । सब १ साली है ।
	(१) पुत्रम (२) बाला (३) जगजीवन (४) मरुट	जैनजी	"	२६०-२६१ २६१-२६२ २६२-२६३	
	मरुट	जैनजी	"	२६३-२६४ २६४-२६५ २६५-२६६	उत्तम है । गुण शत्रुतिष्ठ याया याया २ ।
	जैनजी	जैनजी	"	२६६-२६७ २६७-२६८ २६८-२६९	विराटका पद है । कई संन है ।
	जैनजी	जैनजी	"	२६९-२७० २७०-२७१ २७१-२७२	राज्यजीके बीजम-विराट सत्यत याये लवैया है । राजम बाजीमें भी देतो ।

[illegible]

क्रमांक	विवरण	कला	सिद्धान्त	पत्रावली	विशेष विवरण यदि
(५७)	() बारहवाली १३ पाठ्य	भुरलीवाल	१६वीं पृ २-२६		प्रत्येक पाठ्यके अन्तर्गत 'या' से भगत भुरलीवाल कवि आदि यह अन्तरा शीमन्तसे लिखा हुआ है और भीमालका दुकड़ा आता है।
(१)	बारहवाली १२ पाठ्य	अन्तर्गत	"	२६-२८	आवाह मातसे बेट लकड़ा बनन है।
(४)	बारहवाली १३ कवि	अन्तर्गत	"	२८-३३	कवितोमें कविता दायी है।
(५)	बारहवाली १३ कविता पाठ्य	अन्तर्गत	"	३३-४३	गोपनीयम दृष्टि निमलका बनन है।
(६)	बारहवाली १२ दोहे तथा १२ अनुक्त पाठ्य	अन्तर्गत	"	४३-५	पत्नी द्वारा अतुरादि पतिसे बारह मास तक विलम्ब कर बिदेय समझसे रोक रखनेका वर्णन है।
(७)	बारहवाली १३ कविता	अन्तर्गत	"	५-२४	साधारण रचना है।
(८)	" १२ पाठ्य	अन्तर्गत	"	२४-३८	कविता शीम घोर किरण है।
(९)	"	अन्तर्गत	"	३८-६३	यह प्रकृत्य बारहवाली है। भिषिकार भिष है। (८)
७८	गुरुवा—				शीमक प्राणा हुआ घोर अन्तर्गत है।
(१)	अन्तर्गत १३ कवि (अन्तर्गत-अन्तर्गत) गुरुवा २	अन्तर्गत	"	१-४३	अन्तर्गत। अन्तर्गत शीमक प्राणा हुआ अन्तर्गत गुरुवा; २ × २ अन्तर्गत अन्तर्गत साधारण रचनामें अन्तर्गत आन।
(२)	अन्तर्गत १३ कवि ३३ कवि २; अन्तर्गत ४	"	"	४३-७३	
(३)	अन्तर्गत ४	"	"	"	
(४)	अन्तर्गत ४	"	"	"	

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	निर्गमिताम	पुष्पसंख्या	विशेष विवरण यादि
(७४)	(१) कविप्रिया (चतुर्थ)	केदारदास	१९४०	१२-६६	किरी मयुराकाले कोबेकीसि प्रायः नीमके बालेमें । बमड़े का बला । कई पद्ये नहीं । मि. क.—कन्यापदासराय पारीक पुरोहिताका । मि. ल्हा—दा/समर । इसीके प्रमाणें कर्णसिंह तथा कर्णसिंहकी प्रशस्ति पर कुछ संभव है । (सं.)
८१	हुनोररातो (१) स्वरोपय (२) रसकौमुद (राजसम्राटकेल) समस्या प्रबंध प्रथम प्रकाश २२ रोहें ।	महेश कवि रत्नराजि	१९४७ १९४२	४८ १-२ १-२५	मि. क.—गोपीकांत दया
८२	(३) बामें पत्थिक मुक्ताय १८८ मोहें (४) कविताप्रस ७१ कविता (५) कुम्हारकौमुद (हितोपदेशकपद्यमुक्ता)	रत्नराजि हाराकाभाकपद्यु केरवि (बामें कवि उपनाम) गुरभर	१९४४	१-४ १-१३ १-१५७	चतुर्थ । मयुराक पृथ्वीसिंह कवगुरके सिध १ २८ संभवमें रचित । रत्नाकाल १९४१ संवत् । यह प्रति मन्त्र- किमोर प्रेससे छपी हुई मुद्राककी भक्त है । यह बहुत सुन्दर भाष्य है । रीति-मयुराक रत्नाकसिंहकीका यह विविध प्रकारसे बिन्द है । कोकपुर-मरीच कवगुर-मयुराक रामसिंहका बय मोर मोड़ा इतिहास भी इसमें बिल्ल है । रोचक मनोहर, रसोने सुन्दर है ।

क्रमांक	व्यक्ति	पद	विवरण	विवरण
२३	(१) प्रमुख	प्रमुख	१-२३	१-२३
२४	(२) द्वितीय	द्वितीय	२४-२६	२४-२६
२५	(३) तृतीय	तृतीय	२७-२८	२७-२८
२६	(४) चतुर्थ	चतुर्थ	२९-३०	२९-३०
२७	(५) पंचम	पंचम	३१-३२	३१-३२
२८	(६) षष्ठ	षष्ठ	३३-३४	३३-३४
२९	(७) सप्तम	सप्तम	३५-३६	३५-३६
३०	(८) अष्टम	अष्टम	३७-३८	३७-३८
३१	(९) नवम	नवम	३९-४०	३९-४०
३२	(१०) दशम	दशम	४१-४२	४१-४२
३३	(११) एकादश	एकादश	४३-४४	४३-४४
३४	(१२) द्वादश	द्वादश	४५-४६	४५-४६
३५	(१३) त्रयोदश	त्रयोदश	४७-४८	४७-४८
३६	(१४) चतुर्दश	चतुर्दश	४९-५०	४९-५०
३७	(१५) पञ्चदश	पञ्चदश	५१-५२	५१-५२
३८	(१६) षोडश	षोडश	५३-५४	५३-५४
३९	(१७) सप्तदश	सप्तदश	५५-५६	५५-५६
४०	(१८) अष्टादश	अष्टादश	५७-५८	५७-५८
४१	(१९) उन्नादश	उन्नादश	५९-६०	५९-६०
४२	(२०) विंश	विंश	६१-६२	६१-६२
४३	(२१) त्रिंश	त्रिंश	६३-६४	६३-६४
४४	(२२) चत्वारिंश	चत्वारिंश	६५-६६	६५-६६
४५	(२३) पञ्चविंश	पञ्चविंश	६७-६८	६७-६८
४६	(२४) षट्त्रिंश	षट्त्रिंश	६९-७०	६९-७०
४७	(२५) सप्तत्रिंश	सप्तत्रिंश	७१-७२	७१-७२
४८	(२६) अष्टत्रिंश	अष्टत्रिंश	७३-७४	७३-७४
४९	(२७) नवत्रिंश	नवत्रिंश	७५-७६	७५-७६
५०	(२८) दशत्रिंश	दशत्रिंश	७७-७८	७७-७८
५१	(२९) एकादशत्रिंश	एकादशत्रिंश	७९-८०	७९-८०
५२	(३०) द्वादशत्रिंश	द्वादशत्रिंश	८१-८२	८१-८२
५३	(३१) त्रयोदशत्रिंश	त्रयोदशत्रिंश	८३-८४	८३-८४
५४	(३२) चतुर्दशत्रिंश	चतुर्दशत्रिंश	८५-८६	८५-८६
५५	(३३) पञ्चदशत्रिंश	पञ्चदशत्रिंश	८७-८८	८७-८८
५६	(३४) षट्त्रिंशत्रिंश	षट्त्रिंशत्रिंश	८९-९०	८९-९०
५७	(३५) सप्तत्रिंशत्रिंश	सप्तत्रिंशत्रिंश	९१-९२	९१-९२
५८	(३६) अष्टत्रिंशत्रिंश	अष्टत्रिंशत्रिंश	९३-९४	९३-९४
५९	(३७) नवत्रिंशत्रिंश	नवत्रिंशत्रिंश	९५-९६	९५-९६
६०	(३८) दशत्रिंशत्रिंश	दशत्रिंशत्रिंश	९७-९८	९७-९८
६१	(३९) एकादशत्रिंशत्रिंश	एकादशत्रिंशत्रिंश	९९-१००	९९-१००
६२	(४०) द्वादशत्रिंशत्रिंश	द्वादशत्रिंशत्रिंश	१०१-१०२	१०१-१०२
६३	(४१) त्रयोदशत्रिंशत्रिंश	त्रयोदशत्रिंशत्रिंश	१०३-१०४	१०३-१०४
६४	(४२) चतुर्दशत्रिंशत्रिंश	चतुर्दशत्रिंशत्रिंश	१०५-१०६	१०५-१०६
६५	(४३) पञ्चदशत्रिंशत्रिंश	पञ्चदशत्रिंशत्रिंश	१०७-१०८	१०७-१०८
६६	(४४) षट्त्रिंशत्रिंशत्रिंश	षट्त्रिंशत्रिंशत्रिंश	१०९-११०	१०९-११०
६७	(४५) सप्तत्रिंशत्रिंशत्रिंश	सप्तत्रिंशत्रिंशत्रिंश	१११-११२	१११-११२
६८	(४६) अष्टत्रिंशत्रिंशत्रिंश	अष्टत्रिंशत्रिंशत्रिंश	११३-११४	११३-११४
६९	(४७) नवत्रिंशत्रिंशत्रिंश	नवत्रिंशत्रिंशत्रिंश	११५-११६	११५-११६
७०	(४८) दशत्रिंशत्रिंशत्रिंश	दशत्रिंशत्रिंशत्रिंश	११७-११८	११७-११८
७१	(४९) एकादशत्रिंशत्रिंशत्रिंश	एकादशत्रिंशत्रिंशत्रिंश	११९-१२०	११९-१२०
७२	(५०) द्वादशत्रिंशत्रिंशत्रिंश	द्वादशत्रिंशत्रिंशत्रिंश	१२१-१२२	१२१-१२२
७३	(५१) त्रयोदशत्रिंशत्रिंशत्रिंश	त्रयोदशत्रिंशत्रिंशत्रिंश	१२३-१२४	१२३-१२४
७४	(५२) चतुर्दशत्रिंशत्रिंशत्रिंश	चतुर्दशत्रिंशत्रिंशत्रिंश	१२५-१२६	१२५-१२६
७५	(५३) पञ्चदशत्रिंशत्रिंशत्रिंश	पञ्चदशत्रिंशत्रिंशत्रिंश	१२७-१२८	१२७-१२

अध्याय	ग्रन्थभाषा	कला	क्रियविषय	परिचय	विशेष विवरण
(१)	(१) मधुमास्तीकवा	अनुप्रास	१७७७	१-२१	इस पुस्तके के माहिरके १९ पत्रोंमें विनयपर आभासे संख्या लगी है। रायचामा एवं रसविकारा नामक दो इतिहास मिलित हैं। रायचामा का विवरण १ है तथा रसविकारा २७७७ है। (२) लि. का रेखीवास अमय चरेलाचरी पोकीसे प्रसिद्धीकृत। लि. का रेखीवास कायक (२)
(२)	मोक्षबोधक	अनुप्रास	"	२९-१२	
(३)	भाषावतल-कामिपुस्तकी कवा	प्रास	"	१३-१२३	
(४)	नेलमाला	वाचीर	"	१२४-१२७	
(५)	रघुवंश सारंका पारि		"	१२७-१२९	
(६)	दोला-भाष्यकी भी बात जोपर्य	पुस्तकालय	१५	१६-२१४	२. का १६७७ र. र. का लेखनपर लि. का संग
(७)	वीरराजपानामास्ती	विद्वत्पुस्तकालय	"	१७-२१४	रामसौध 'पुस्तकालय'
(८)	भ्यामवती	इला	१७२६	१-४	
(९)	मधुर-गुरेके कविता		"	२-६	
(१०)	रघुवंशकविता	कवकवि मङ्गल यद कवीर	"	८-१२	७ व १ की पत्र आभासे।
(११)	कवितादि (मिथिलसंस्कृत-प्रासादिक इत्यादि)	भरती कवि	"	१३-१८	
(१२)	कविता एवं गूढा	प्रत्येक कवि	"	१८-२	
(१३)	कुल-भूषण	वरदास	"	२१-२३	
(१४)	हरिदासकविता	अनुप्रास	"	२४-२६	

क्रमांक	व्यवस्थापक	वर्ग	निविदा मूल्य	परतत्त्व	विशेष विवरण
(२१)	(क) न्यायकोठी मीना (ख) चण्डिकाको भागदल (ग) पक्षी भाग (घ) धीरावतीको (ङ) रत्नाकर (च) कोशील पक्षार कवि (छ) इन्द्रावतीको कविता गुण (ज) कविता तथा होराकोपी कवि ३ गुण	महाभारतको भागदलको देवदत्त धीरावतीको चण्डिकाको चण्डिका (भावावस्था)	१७२६ २९५ २९५ २९५ २९५ २९५ २९५ २९५	२९५ २९५ २९५ २९५ २९५ २९५ २९५ २९५	कुल १७६ वटा है। हीरावती कविताको प्रारम्भिक पद्यांश— 'आवरे' केसरी प्यारे सुरति' तिहारो जिन देखते 'बहिरी' रंग 'धीरावती' काग है। (ल)
	(११) इन्द्रा तथा चण्डिका कवि (१२) गुण भाग दल (म) नि (म) भूमीको पदांश (१३) कविता कावि (१४) कविता १२ (१५) कविता १२	साई कवि मुद्रावती कावि रत्नाकर चण्डिका	२९५ २९५ २९५ २९५	२९५ २९५ २९५ २९५	वे कविता चण्डिका कविताको द्वारा रचित है। इसमें पद्यांशको प्रभाव देवदत्त-देवदत्तको काठमाडौं काठमाडौं कविता है। चण्डिका भूमी (नेत्र) के कविता है। (ल)

क्रमांक	प्रकरणम्	कला	लिपिसमाप्त	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(२१)	(२१) हीमाली कविता (अनुसूचकरीके अन्त)	यत्नेक कवि	१७२६	१७-७	इसमें 'अकित्त मीन' उपलब्ध तथा पहले प्रास्ताविक दोहे एवं विद्यारीकविके एक दो दोहों पर पद्यटीका है । (सं)
	(२२) कवित्त प्रयागविलोकी	कवि वीरल	"	७०-७१	अन्तर्गत काव्य ।
	(२३) सरीया अन्त्य आदि		"	७१-७४	
	(२४) अनुमानतो	अनुसूचकरीके	"	१-३४	मि रत्ना—मिरजपुर साहूदेवजी कीकावली- पठनार्थ ।
२२	(१) अनुमानतो	"	१८२२		मि क.—मनसाराम पोंड
	(२) विजोपदेक जावा	"	"	३४-३६	"
	(३) रत्नावलीकी भारता	विष्णु वर्मा काव्य कवि	१८२६	२७-१४२	" रत्ना—सं १९२१ दिसरी १ १४ । यह प्रतिनिधि १८२३को प्रसिद्धे लिखोक्त है ।
२३	अनुमानतो	अनुसूचकरीके	सन् १८३२	१७४	इसी पुस्तकमें ३५ एकुद पत्र पोर हैं जो मनसाराम अन्तक द्वारा प्रेषकरीके कपले लिखे हुए हैं । (सं)
			२ जुल		१ ३ पत्र एक कवित्त है ।
२४	(१) हुवीर रातो (१ कवित्त नीमाली मधुरादि प्रयाग- वलीकी विद्विद्या अनुसूचकरीकी अन्ती आदि)		१८वीं द	१-१	
	(२) नीमाली मधुराज्जुमार रत्न- चंद मनेपुत्रराजोतरों	भुवराज	"	१०-१७	
	(३) कवित्त		"	१७-२७	राज हुपू आदिके सम्बन्धमें ।

क्रमांक	व्यवस्था	कार्य	निर्दिष्ट मूल्य	पर्याप्तता	विशेष विवरण यादि
(१ २)	(१) सर्वेक्षण (अर्थीय)	सुन्दर रास	१२२१	४६	लि. क.—आचार्यस्य मुद्रादि निर्दिष्ट ।
	(४) सार्वभौम		१६ ६	१-१५	रासवर्गस्य निर्दिष्ट ।
	(५) कर्म		१६ ६	३५-५५	"
	(६) विपणन-अन्तर्गत-आचार्यस्य		२ बी. क.	११	
	सूचीक				
१ ३	विपणन-अन्तर्गत-सर्वेक्षण	"	१६ बी. क.	३	लि. क.—मुद्रा ।
१ ४	विपणन-अन्तर्गत-आचार्यस्य सूचीक		१६ बी. क.	१	द. का. योग द्वारा व्याकरण भू. संवत् मास
१ ५	(१) सर्वेक्षण-अन्तर्गत (समुद्र-सर्वेक्षण) सवर्ग		१६ बी. क. (१)	१	उत्तर । अष्टु निर्दिष्ट निर्दिष्टिनि बार मुद्रा
					रक्तो रक्त रक्तसार १३॥
१ ६	(२) समुद्र-सर्वेक्षण	"	१६ बी. क.	१	
	(३) सर्वेक्षण-अन्तर्गत-सर्वेक्षण		२ बी. क.	२	
	(४) सर्वेक्षण १ (सर्वेक्षण)		१६ बी. क.	१-५	रक्त पुरोहितकीने केवल 'रक्त-कर्म' लिखा
	(५) सर्वेक्षण-अन्तर्गत-सर्वेक्षण		"	३-४	३ । (५)
	(६) सर्वेक्षण-अन्तर्गत-सर्वेक्षण		"	२-५	
	(७) सर्वेक्षण-अन्तर्गत-सर्वेक्षण		"	१५	
	(८) सर्वेक्षण-अन्तर्गत-सर्वेक्षण		"	७५	
	(९) सर्वेक्षण-अन्तर्गत-सर्वेक्षण		"	७-८	
	(१०) सर्वेक्षण-अन्तर्गत-सर्वेक्षण		"	८-११	

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
११४	(१) विश्वरूपसप्तसहस्रनाम- दीक्षासहित	श्री विश्वरूपसप्त	१६८१	४४	कविता-२५ १७७१। अक्ष १८६७को प्रतिसे लिपीकृत। लि. ४-पयोध्याप्रसाद कपुर्वेदी।
	(२) विद्यासाहित्यसंग्रह	विद्यासाहित्य कवि		१६	लि. ४-पयोध्याप्रसाद कपुर्वेदी। अ. १७७७को प्रतिसे लिपीकृत।
	(३) मुरलिकृत	मुरल कवि	१६८६	१२	लि. ४-पयोध्याप्रसाद कपुर्वेदी। सं. १६४७को प्रतिसे लिपीकृत।
११५	सप्तसहस्रनाम (विश्वरूपसप्तसहस्रदीक्षा)	श्री मयूरी	२ बी. सा.	२४	अनु. १। रचनाकाल १७६४।
११७	श्रीकृष्णविलास	कविद्वयोपकृत		१६७	लि. ४-पयोध्याप्रसाद कपुर्वेदी। सं. १६४७को प्रतिसे लिपीकृत।
११८	श्रीवैष्णवनाम	राजपुरवासकी	१६८७	१४३	लि. ४-पयोध्याप्रसाद कपुर्वेदी। सं. १६४७को प्रतिसे लिपीकृत।
११९	श्रीवैष्णवनाम	श्री राजपुरवासकी	१६८३	२४	लि. ४-पयोध्याप्रसाद कपुर्वेदी। सं. १६४७को प्रतिसे लिपीकृत।
१२०	श्रीवैष्णवनाम	मयपुरासु रजपुरासु कवि	२ २	२६	लि. ४-पयोध्याप्रसाद कपुर्वेदी। सं. १६४७को प्रतिसे लिपीकृत।
१२१	श्रीवैष्णवनाम	श्रीवैष्णव विद्या			र. ४-१७४३। अनु. १११ लिपिकृत। कोलाह कपुर्वेदी द्वारा लिपिकृत १६४७को प्रतिसे लिपीकृत। लि. ४-पयोध्याप्रसाद कपुर्वेदी कपुर्वेदी। पत्रसंख्या ३७ तक मयपुरासु कपुर्वेदी लिपिकृत।

क्रमांक	व्यक्ति	वर्ग	निमित्त	पञ्चमस्या	विशेष विवरण
१२	अध्यापक (वहरी) आचार्य	कविहर उदय	२ बोरा	२४	पण १३८ कुल है। नि.क.—गोपीकाव्य उर्मा कपूर (?)
१३	आचार्य (गोपबन्धु)	रत्नकुमार		२६	र.का.—१७७९ (१७ ६ ७) नि.क.—गोपी काव्य उर्मा (?)
१४	एकवर्गीय आचार्य	रत्नकुमार		१२	नि.क.—गोपीकाव्य उर्मा। इसमें कुल पण १३२ है। १३१में पणमें रचनाकाल इस प्रकार दिया है—सम्मत हर रिक्त लम्बो अपगत राग भव संक। काम लक्ष्मी पण गुण माला करी पणक ॥१३१॥ इस दोहे पर पण नोट लिखा है—“इस दोहेका घट पाठ नहीं मिला है पण्य पणिके सम्मतसे। यद्यपि सम्मतलक्ष्मीका राज्यकास विक्रम संवत् १७८ तो १८ ९ तकका है। यदि हर रिक्तसे ७३ लिया जाय तो १७७३का संवत् माला आना उपपन्न होता है और पण्य पाठ मिलनेसे यही माला नाम भी निकल सकता है। इस लक्ष्मी तो है ही। नि.क.—गोपीकाव्य उर्मा कपूर।
१५	अध्यापक—एकवर्गीय आचार्य	बापूठ उदय कवि		२६	
१६	द्वितीय अध्यापक (विद्यार्थी) पण्य	कविभाषा पुराणी (विद्यार्थी लक्ष्मी) द्वितीय)		४	
१७	(१) एकवर्गीय आचार्य	रत्नकुमार (नामो) वा.का.प.		१-१२	पण्य

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	निर्दिष्टमूल्य	पुस्तकस्था	निकटव्य निवारण धारि
	(२) राज प्रवेशद्वारीको इच्छा	विष्णुदीवान मरुदु	२ बी. ए.	१३-१८ सेक	नि.क - आर्योपाय बुद्धा ।
	(३) राज प्रवेशद्वारीको इच्छा	आचार्य बुद्धा		१८-२४ "	अनु.क - अनामिका २३३३ (१) से इत
१२७	प्रवेशद्वारीको कथा	नीतिमरु कवि	१२५	१२	पुरातनका प्रवेशद्वारी से प्रत्यक्ष है (स)
१२८	"	राजभक्त	१२८६	४२ सेक	र.का - १८३३ । नि.क - अनामिका कोसी
१२९	(१) सेनाको धारि (नीतिमरु के)	कवि कुलपतिमरु	१२२५	५	मुद्रास्थान है ।
१३०	(२) कुलपति निधायी अनामिका	कवि कुलपतिमरु	२ बी. ए.	१३-१८ सेक	र.का - १८३३ । नि.क - अनामिका कोसी
१३१	नीतिमरु	कवि कुलपतिमरु	१२८२	३	अनु.क - अनामिका कोसी
१३२	मुद्रास्थानको विद्याना	कवि कुलपतिमरु	१३-१८ सेक	१३-१८ सेक	नि.क - अनामिका कोसी
१३३	रत्नामरु	कवि कुलपतिमरु	१२८७	४२	अनु.क - अनामिका कोसी
१३४	अनामिका कोसी	कवि कुलपतिमरु	१२८७	४२	नि.क - अनामिका कोसी
१३५	अनामिका कोसी	कवि कुलपतिमरु	१२८७	४२	नि.क - अनामिका कोसी
१३६	अनामिका कोसी	कवि कुलपतिमरु	१२८७	४२	नि.क - अनामिका कोसी
१३७	अनामिका कोसी	कवि कुलपतिमरु	१२८७	४२	नि.क - अनामिका कोसी

क्रमांक	प्रत्ययनाम	कला	सिद्धिप्रमाण	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(११८)	बाह्यमाली	नोली-अलवाकलीको	विद्युत्प्रभु	१	
(११९)	कुबरो-संय-विद्युत्	प्रभात	२	४	
(१२०)	वर्णकी				
(१२१)	रायलीको			२	
(१२२)	अभिषा सलीकी	अभिषा सली	१	१	
(१२३)	विद्युत्कीकी	आत्मसुख	२	२	
(१२४)				३	
(१२५)	अलीकी	अलवाकली	३	३	
(१२६)	अली अलीकी	अली	२	२	
(१२७)	अली अलीकी	अली	३	३	
(१२८)	अली अलीकी	अली	३	३	
(१२९)	अली अलीकी	अली	३	३	
(१३०)	अली अलीकी	अली	३	३	
(१३१)	अली अलीकी	अली	३	३	
(१३२)	अली अलीकी	अली	३	३	
(१३३)	अली अलीकी	अली	३	३	
(१३४)	अली अलीकी	अली	३	३	
(१३५)	अली अलीकी	अली	३	३	
(१३६)	अली अलीकी	अली	३	३	
(१३७)	अली अलीकी	अली	३	३	
(१३८)	अली अलीकी	अली	३	३	
(१३९)	अली अलीकी	अली	३	३	
(१४०)	अली अलीकी	अली	३	३	
(१४१)	अली अलीकी	अली	३	३	
(१४२)	अली अलीकी	अली	३	३	
(१४३)	अली अलीकी	अली	३	३	
(१४४)	अली अलीकी	अली	३	३	
(१४५)	अली अलीकी	अली	३	३	
(१४६)	अली अलीकी	अली	३	३	
(१४७)	अली अलीकी	अली	३	३	
(१४८)	अली अलीकी	अली	३	३	
(१४९)	अली अलीकी	अली	३	३	
(१५०)	अली अलीकी	अली	३	३	

क्रमांक	प्राप्तकाल	कला	निमित्तसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(११८)	(१)	मुरलीदासजीकी	२ बी. हा	३	
(११९)	"	मुरलीदास	"	१	
(१२०)	"	बिरहुकी	"	२	
(१२१)	"	कविकाशीराय	"	२	
(१२२)	"	मनको	"	२	
(१२३)	"	रघु	"	४	
(१२४)	"	जासदास	"	२	
(१२५)	"	अरविश भाग्य	"	२	श्रीसत्यदेवरायाकृत
(१२६)	"	जासदासीदेवी भाग्यदम्प	"	२	
(१२७)	"	श्रीदासाई	"	१	
(१२८)	"	कुलसप्त	"	३	
(१२९)	"	पुष्पोबाकजी	"	२	
(१३०)	"	कासदास स्वामी	"	१	छन्दोविनयकवयल
(१३१)	"	श्रीगुरुदेवदासजी	१६.६६	४७	
(१३२)	"	(स्वामी लकी)	१६.६६	२	मि.क.—भावाभासर्मा श्रीमृगिवासी बंगला
(१३३)	"	देवविष्णु मंडनकवि	१६.६६	२३ देख	सातासप्तक
(१३४)	"	हृदितेजकविश्रु गाराय	२ बी. हा	६	१. का.—१.८७९।
(१३५)	"	नाम कवि	"	२	मि.क.—श्रीपीचंद (१)
(१३६)	"	कवि महेष	१६.६६	११	२. का.—१.८४२।
(१३७)	"	हृदीरायक	१६.६६	४८ देख	मि.क.—श्रीपीचंद छर्मा

क्रमांक	सम्प्रदाय	कर्म	निमित्तमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण पारि
(१२४)	मन्दरब्रह्म (कवितारूप)	१ कवय्या २ परसराम ३ ब्रह्म । ४ मोहन ५ कोटी ६ कुम्भ ७ रामदास ८ नाटक ९ ब्रह्म १० ब्रह्म ११ ब्रह्म १२ ब्रह्म १३ ब्रह्म १४ ब्रह्म १५ ब्रह्म १६ ब्रह्म १७ ब्रह्म १८ ब्रह्म १९ ब्रह्म २० ब्रह्म २१ ब्रह्म २२ ब्रह्म २३ ब्रह्म २४ ब्रह्म २५ ब्रह्म २६ ब्रह्म २७ ब्रह्म २८ ब्रह्म २९ ब्रह्म ३० ब्रह्म	१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३०	२२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५०	मिनिक्ता पोपोजन कर्म पोप कवय्या मिनिक्ता है । (सं)

क्रमांक	व्यक्ति	वर्ग	निविदा	पत्राचार	विशेष विवरण
(१२४)	गणतन्त्र (विविध)				
११	समस्त		२	११५३	
१२	मुद्रा			१७	
१३	समस्त			१८	
१४	समस्त । १३ अमान			१९	
१५	समस्त			२०	
१६	समस्त			२१	
१७	समस्त			२२	
१८	समस्त			२३	
१९	समस्त			२४	
२०	समस्त			२५	
२१	समस्त			२६	
२२	समस्त			२७	
२३	समस्त			२८	
२४	समस्त			२९	
२५	समस्त			३०	
२६	समस्त			३१	
२७	समस्त			३२	
२८	समस्त			३३	
२९	समस्त			३४	
३०	समस्त			३५	
३१	समस्त			३६	
३२	समस्त			३७	
३३	समस्त			३८	
३४	समस्त			३९	
३५	समस्त			४०	
३६	समस्त			४१	
३७	समस्त			४२	
३८	समस्त			४३	
३९	समस्त			४४	
४०	समस्त			४५	
४१	समस्त			४६	
४२	समस्त			४७	
४३	समस्त			४८	
४४	समस्त			४९	
४५	समस्त			५०	
४६	समस्त			५१	
४७	समस्त			५२	
४८	समस्त			५३	
४९	समस्त			५४	
५०	समस्त			५५	
५१	समस्त			५६	
५२	समस्त			५७	
५३	समस्त			५८	
५४	समस्त			५९	
५५	समस्त			६०	
५६	समस्त			६१	
५७	समस्त			६२	
५८	समस्त			६३	
५९	समस्त			६४	
६०	समस्त			६५	
६१	समस्त			६६	
६२	समस्त			६७	
६३	समस्त			६८	
६४	समस्त			६९	
६५	समस्त			७०	
६६	समस्त			७१	
६७	समस्त			७२	
६८	समस्त			७३	
६९	समस्त			७४	
७०	समस्त			७५	
७१	समस्त			७६	
७२	समस्त			७७	
७३	समस्त			७८	
७४	समस्त			७९	
७५	समस्त			८०	
७६	समस्त			८१	
७७	समस्त			८२	
७८	समस्त			८३	
७९	समस्त			८४	
८०	समस्त			८५	
८१	समस्त			८६	
८२	समस्त			८७	
८३	समस्त			८८	
८४	समस्त			८९	
८५	समस्त			९०	
८६	समस्त			९१	
८७	समस्त			९२	
८८	समस्त			९३	
८९	समस्त			९४	
९०	समस्त			९५	
९१	समस्त			९६	
९२	समस्त			९७	
९३	समस्त			९८	
९४	समस्त			९९	
९५	समस्त			१००	

क्रमांक	प्राप्तनाम	कर्म	निर्दिष्टमात्र	पत्रसंख्या	विशेष विवरण धारि
(१२४)	भूपतिबहादुर (कविदासचक्र)	१२ महीनादि १६ पुर्ण २७ कविदास २८ भाग्य २९ भक्त ३० विनाय ३१ प्रवर्ण ३२ कान्ति ३३ भूमि ३४ शैल ३५ भाग्य ३६ पुनीत ३७ कान्ति ३८ भक्त ३९ विनाय ४० पुनीत ४१ भक्त ४२ विनाय ४३ पुनीत ४४ भक्त ४५ विनाय ४६ पुनीत ४७ भक्त ४८ विनाय ४९ पुनीत ५० भक्त ५१ विनाय ५२ पुनीत ५३ भक्त ५४ विनाय ५५ पुनीत ५६ भक्त ५७ विनाय ५८ पुनीत ५९ भक्त ६० विनाय ६१ पुनीत ६२ भक्त ६३ विनाय ६४ पुनीत ६५ भक्त ६६ विनाय ६७ पुनीत ६८ भक्त ६९ विनाय ७० पुनीत ७१ भक्त ७२ विनाय ७३ पुनीत ७४ भक्त ७५ विनाय ७६ पुनीत ७७ भक्त ७८ विनाय ७९ पुनीत ८० भक्त ८१ विनाय ८२ पुनीत ८३ भक्त ८४ विनाय ८५ पुनीत ८६ भक्त ८७ विनाय ८८ पुनीत ८९ भक्त ९० विनाय ९१ पुनीत ९२ भक्त ९३ विनाय ९४ पुनीत ९५ भक्त ९६ विनाय ९७ पुनीत ९८ भक्त ९९ विनाय १०० पुनीत	१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००	१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००	

क्रमांक	राज्यक्रम	कला	निर्णयक्रम	वर्षसंख्या	विशेष विवरण यादि
(१२४)	अन्यसंख्याया (कविनामपर)				
	अ २ मुद्रिया । अ ३ पोराय		१	१५६ बदे	
	अ ४ अमरा । अ ५ पोर्बिद		"	१५७ "	
	अ ६ अराय		"	१५८ "	
	अ ७ मुनकोराय		"	"	
	अ ८ राय		"	१५९	
	अ ९ रेवति । २ अ		"	१६० "	
	अ १० अरेय		"	१६१	
	अ ११ सोरदि		"	१६२ "	
	अ १२ उय		"	१६३ "	
	अ १३ रसतिया		"	१६४ "	
	अ १४ लाया		"	१६५ "	
	अ १५ बीजरा । २७ राय				
	अ १६ रेतय				यह नाम दुवारा थाया है जो कवित्त्या १३ वर चर्चित है ।
	अ १७ अमरा		"	१६७	
	अ १८ अरा । १ सोर		"	१६८ "	
	अ १९ अरोर		"	"	
	अ २० अयय		"	१७० "	
	अ २१ अय		"		
	अ २२ रमिता (रसतिया पुष्ट १७६ ब)		"	१७४ "	रसतिया कवि से २४वे वर भी थाया है । (सं)
	अ २३ अयय		"	१७५ "	

[illegible]

राज्यपाल आचार्यद्वारा प्रत्यक्ष — विद्याभूषण गणेशजीजी

क्र.सं.	गणनाम	कतई	निमित्तमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण यदि
(१२४)	गुरुपंचाङ्ग (कलितार्थवत्)				
	१२६ भाषाईय	२	१	२४६५	
	१२७ कथाम	"	"	२४६६	
	१२८ भाष	"	"	२४७०	
	१२९ श्रीमान् पु. हाई	"	"	२४८०	
	१३० यजुज	"	"	२४९३	
	१३१ यजुज	"	"	२४९४	
	१३२ परमार्थ	"	"	२४९५	
	१३३ कर्मवृत्ति	"	"	२४९६	
	१३४ यजु	"	"	२४९७	
	१३५ यजु	"	"	२४९८	
	१३६ ताल	"	"	२४९९	
	१३७ ज्ञानिका	"	"	२५००	
	१३८ यजु	"	"	२५०१	
	१३९ भाषाईय	"	"	२५०२	
	१४० भर्तृहरि	"	"	२५०३	
	१४१ भर्तृहरि	"	"	२५०४	
	१४२ भर्तृहरि	"	"	२५०५	
	१४३ यजुज	"	"	२५०६	
	१४४ यजु	"	"	२५०७	
	१४५ ज्ञानिका	"	"	२५०८	
	१४६ यजु	"	"	२५०९	
	१४७ यजु	"	"	२५१०	
	१४८ यजु	"	"	२५११	
	१४९ यजु	"	"	२५१२	
	१५० यजु	"	"	२५१३	
	१५१ यजु	"	"	२५१४	
	१५२ यजु	"	"	२५१५	
	१५३ यजु	"	"	२५१६	
	१५४ यजु	"	"	२५१७	
	१५५ यजु	"	"	२५१८	
	१५६ यजु	"	"	२५१९	

यह नाम भी कति संख्या पर भी दक्षित
है । (मं)

यह नाम भी ७५ एवं १२३ में दक्षित ही हो
सकता है ।

क्रमांक	वर्णन	वर्ग	निर्माणसमय	पुस्तकसंख्या	विशेष विवरण आदि
१२८	भोगीसाल (कपलसाल ?)	१२८९	१३५	१३५	प्रायः बर्षोंमें कपलसाल की ही अधिक मात्रा निर्मा ब्रिटिशोंपर होती है जल्द इसीकी यह कृति हो। भोगीसाल तो इस प्रक्रिया निमित्त कार हो सकता है जबका कपलसाल उत्तम उपवास हो। नि. क.—मोरीचरसाल। मन्ति-साल जंजेलबासली १२३५ संस्कार की प्रतिलिपि मिली है। कपलसाल। (सं.)
१२९	राजस्थान	१-७	१-७	१-७	नि. क.—मोरीचरसाल जर्मा गीत कपलसाल।
१३०	राजस्थान	१-८	१-८	१-८	
१३१	राजस्थान	१-९	१-९	१-९	
१३२	राजस्थान	१-१०	१-१०	१-१०	
१३३	राजस्थान	१-११	१-११	१-११	
१३४	राजस्थान	१-१२	१-१२	१-१२	
१३५	राजस्थान	१-१३	१-१३	१-१३	
१३६	राजस्थान	१-१४	१-१४	१-१४	
१३७	राजस्थान	१-१५	१-१५	१-१५	
१३८	राजस्थान	१-१६	१-१६	१-१६	
१३९	राजस्थान	१-१७	१-१७	१-१७	
१४०	राजस्थान	१-१८	१-१८	१-१८	
१४१	राजस्थान	१-१९	१-१९	१-१९	
१४२	राजस्थान	१-२०	१-२०	१-२०	
१४३	राजस्थान	१-२१	१-२१	१-२१	
१४४	राजस्थान	१-२२	१-२२	१-२२	
१४५	राजस्थान	१-२३	१-२३	१-२३	
१४६	राजस्थान	१-२४	१-२४	१-२४	
१४७	राजस्थान	१-२५	१-२५	१-२५	
१४८	राजस्थान	१-२६	१-२६	१-२६	
१४९	राजस्थान	१-२७	१-२७	१-२७	
१५०	राजस्थान	१-२८	१-२८	१-२८	
१५१	राजस्थान	१-२९	१-२९	१-२९	
१५२	राजस्थान	१-३०	१-३०	१-३०	
१५३	राजस्थान	१-३१	१-३१	१-३१	
१५४	राजस्थान	१-३२	१-३२	१-३२	
१५५	राजस्थान	१-३३	१-३३	१-३३	
१५६	राजस्थान	१-३४	१-३४	१-३४	
१५७	राजस्थान	१-३५	१-३५	१-३५	
१५८	राजस्थान	१-३६	१-३६	१-३६	
१५९	राजस्थान	१-३७	१-३७	१-३७	
१६०	राजस्थान	१-३८	१-३८	१-३८	
१६१	राजस्थान	१-३९	१-३९	१-३९	
१६२	राजस्थान	१-४०	१-४०	१-४०	
१६३	राजस्थान	१-४१	१-४१	१-४१	
१६४	राजस्थान	१-४२	१-४२	१-४२	
१६५	राजस्थान	१-४३	१-४३	१-४३	
१६६	राजस्थान	१-४४	१-४४	१-४४	
१६७	राजस्थान	१-४५	१-४५	१-४५	
१६८	राजस्थान	१-४६	१-४६	१-४६	
१६९	राजस्थान	१-४७	१-४७	१-४७	
१७०	राजस्थान	१-४८	१-४८	१-४८	
१७१	राजस्थान	१-४९	१-४९	१-४९	
१७२	राजस्थान	१-५०	१-५०	१-५०	
१७३	राजस्थान	१-५१	१-५१	१-५१	
१७४	राजस्थान	१-५२	१-५२	१-५२	
१७५	राजस्थान	१-५३	१-५३	१-५३	
१७६	राजस्थान	१-५४	१-५४	१-५४	
१७७	राजस्थान	१-५५	१-५५	१-५५	
१७८	राजस्थान	१-५६	१-५६	१-५६	
१७९	राजस्थान	१-५७	१-५७	१-५७	
१८०	राजस्थान	१-५८	१-५८	१-५८	
१८१	राजस्थान	१-५९	१-५९	१-५९	
१८२	राजस्थान	१-६०	१-६०	१-६०	
१८३	राजस्थान	१-६१	१-६१	१-६१	
१८४	राजस्थान	१-६२	१-६२	१-६२	
१८५	राजस्थान	१-६३	१-६३	१-६३	
१८६	राजस्थान	१-६४	१-६४	१-६४	
१८७	राजस्थान	१-६५	१-६५	१-६५	
१८८	राजस्थान	१-६६	१-६६	१-६६	
१८९	राजस्थान	१-६७	१-६७	१-६७	
१९०	राजस्थान	१-६८	१-६८	१-६८	
१९१	राजस्थान	१-६९	१-६९	१-६९	
१९२	राजस्थान	१-७०	१-७०	१-७०	
१९३	राजस्थान	१-७१	१-७१	१-७१	
१९४	राजस्थान	१-७२	१-७२	१-७२	
१९५	राजस्थान	१-७३	१-७३	१-७३	
१९६	राजस्थान	१-७४	१-७४	१-७४	
१९७	राजस्थान	१-७५	१-७५	१-७५	
१९८	राजस्थान	१-७६	१-७६	१-७६	
१९९	राजस्थान	१-७७	१-७७	१-७७	
२००	राजस्थान	१-७८	१-७८	१-७८	

क्रमांक	संयोजक	कर्ता	निरूपितक	पत्रसंख्या	विशेष विवरण प्राप्ति
१०	राज्यपालिका अन्धको पत्र	टोडराम	२२वीं क.	२६	नि.क—प्राथमिक प्रार्थना ।
१०१	राज्यपालिका	रत्नसार (४ रामरत्न)	"	७	"
१०२	राज्यपालिका	हरिदास	"	३	"
१०३	विद्यालयिका	प्रान्तपालका कामगार	"	६	"
१०४	राज्यपालिका	पुनर्वास	"	२	"
१०५	पुनर्वासकी सहायिका	किशोरदास	"	२	"
१०६	राज्यपालिका (राज्यपाल)	राज्यपालिका	"	३	"
१०७	राज्यपालिका अन्धको राज्यपाल	राज्यपालिका	"	३	"
१०८	राज्यपालिका (१)	राज्यपालिका	"	३	"
१०९	(१)	"	"	३	"
११०	राज्यपालिका	राज्यपालिका अन्धको	"	३	"
१११	राज्यपालिका	राज्यपालिका	"	३	"
११२	राज्यपालिका (अन्धको राज्यपाल)	राज्यपालिका	"	३	"
११३	राज्यपालिका	राज्यपालिका	"	३	"
११४	राज्यपालिका	राज्यपालिका	"	३	"
११५	राज्यपालिका अन्धको राज्यपालिका	राज्यपालिका	"	३	"
११६	(राज्यपालिका)	राज्यपालिका	"	३	"
११७	राज्यपालिका अन्धको राज्यपालिका	राज्यपालिका	"	३	"
११८	राज्यपालिका अन्धको राज्यपालिका	राज्यपालिका	"	३	"

नि.क—प्राथमिक प्रार्थना । राज्यपालिका ।

[illegible]

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कृषी	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण यादि
१२४	विष्णुबोध व्याख्यान	काशीनाथ	१८६१	११	लि. क. - रामनाथ झाजी मणोरुपुरनिकासी ।
१२५	"	हरिदासनाथ निरंजनी	१८४८	४	र. का. - १७८२५ । स्वातन्त्र्योत्सवा । लि. क. -
१२६	पद्मराजावली	श्रीधरशिवजी	१८४८	२३	बनारसबास निरंजनी माधुपुरनय्ये ।
१२७	देवबोलेकरचरित्र	पद्मराज गजनिधि	१८१७	४१	र. का. - १६६२ । लि. क. - मुकुन्द । इस वर्षसे
१२८	विष्णुसुखप्रयोग (मंजिल)		१८४१ स.	६	स्वर्गाविकानु बानादेवी सो दिवि लिखित है
१२९	बनारसकाव्यम् (पद्मराजभावाभुषार सतिम्)	श्रीधरभावाभुषारी	२ श्री स	१२	श्रीर पाकायिका लिखित कथन है । (सं.)
२	पद्मनाभाजीनी उल्लास	श्रीधरभावाभुषारी	१८७२	८	इससे पहले हुए एक पत्रसे अनुवादक प
२ १	रानी बहिनबातादि २४ बोध	श्रीधरभावाभुषारी	१८७२	१	तत्पुत्राद लिख है ?
२ २	विजयशिवकथा	कवि नरसिंह	१८७३	२३	लि. क. - श्रीधरभावाभुषारी पुरोहित ।
२ ३	हरिदासिनी (कविभावाभुषारनाथ)	श्रीधरभावाभुषारी	१८७३	१२ + ११	"
२ ४	पद्मराजावली	श्रीधरभावाभुषारी	२ श्री स	४	लि. क. - श्री गणेश श्री हरिभावाभुषारी पुरो
२ ५	पद्मराजावली	श्रीधरभावाभुषारी	२ श्री स	४	हितको पठनाथ ।
२ ६	पद्मराजावली	श्रीधरभावाभुषारी	२ श्री स	४	लि. क. - २१२४ है राजपुत्रपत्रसे मुची
२ ७	पद्मराजावली	श्रीधरभावाभुषारी	२ श्री स	४	देवीप्रतापकी द्वारा बहुत जूझ है
२ ८	पद्मराजावली	श्रीधरभावाभुषारी	२ श्री स	४	बनारसकाव्य कीवलीका लिखितकथन
२ ९	पद्मराजावली	श्रीधरभावाभुषारी	२ श्री स	४	पद्मराजावली

क्रमांक	प्रश्नप्रश्ना	कला	निमित्तमय	परमस्या	विषय विवरण प्रादि
२६	सैन्यपद (सैन्यपद) संबन्धी ज्ञानस्य		२ बी. ए.	३	
२७	ओट्ट जोग ही रोमीजल गिरी पांडुरी		"	४	
२८	इय राजाबाब	कुलदीनरूपति	१८८	१-३	सि.क.-पुरोहित श्रीभारतस्य अग्रपुर ।
	(१) मधुरबाबा	(१)		१-८	
	(२) मुद्रावमुलाबाती	महाभारत उद्योग्यं		२६	सि.क.-मोषीचमर मार्ग
	(३) श्रीहृदयामिनिपत्रकम्	सम्पत्तिभाष्यापगत	१८८८		
	(४) भगवत्पुष्पासति	महाभारत पुरुषरूपनित्या		१८९	
		प्राप्तयत			
	(५) भीष्मगीतम्	भारत प्रजासत्तापनवा	"	१९०	"
		ध्यातव्य			
	(६) मुकुटभालोच	आपकत हि एक कमुर्वा		१९०	"
		प्राप्तयत			
२९	राजपदधरी एवं सांगकापी पत्र-पत्र	पुष्परीक विदुल (कला)	२ बी. ए.	१९० + २ = १९२	समूह संरक्षित दुरतकास्य भोक्तारकी प्रतिनि
	हृद	इय जालोय			निर्णीत ।
३०	हिररविभागतकाय	कविदत्तानिधि श्रीहृद		१९२	भारतारकर श्रीविद्यमान रित्तं इमरीटपुट
		भट्ट			पुष्पाकी प्रतिनि निर्णीत ।
३१	प्राप्तपुष्पासिका भाषा		१८८२	१९	प्रति कीर्ण-गीर्ण एवं सम्पत्तिरित्तं ही तथा एवं
					विपत्तिरित्तं ही ।
३२	भारत-उद्योग्यपत्रा	कवि सारदास	१८८६	१९	सि.क.-विद्यमान सिध संरक्षितनिर्णीत
					(संभावामये)

क्रमांक	पदनाम	कार्य	निमित्तक	पत्रसंख्या	विशेष विवरण प्रादि
२१३	(१) प्राध्यापिका (२) कक्षाध्यक्ष (३) मुख्याध्यापिका महाध्यापिका	पुस्तक अधि	१२१५ " "	१-१४ १५-२६ २६-२८	मि. क. - महाध्यापिका र. का. - १७७३ । मि. क. - राजधानी । मि. क. - राजधानी ।
२१४	राज्यपाल-आचार्यको कार्यालय	पुस्तक अधि	१२२२	२७	अध्यक्षको कार्यालय ; मि. क. - राजधानी मि. क. - राजधानी
२१५	होमि	इकाकाका कार्यालय	१२२७	२८	इस पुस्तकको प्रकाशित कार्यालय को प्रकाशित कोका कक्षा अधि । मि. क. - राजधानी । अधि अधि । (स)
२१६	राज्यपाल-आचार्यको कार्यालय	पुस्तक अधि	१२२९	२९	मि. क. - राजधानी । अधि अधि । (स)
२१७	कार्यालय	पुस्तक अधि	१२३०	३०	इसको प्राप्ति १५ पुस्तकको अधि होमि अधि । मि. क. - राजधानी । अधि अधि । (स)
२१८	(१) राजधानी (२) राजधानी (३) राजधानी (४) राजधानी	पुस्तक अधि	१२३१	३१	इसको प्राप्ति १५ पुस्तकको अधि होमि अधि । मि. क. - राजधानी । अधि अधि । (स)
२१९	राजधानी	पुस्तक अधि	१२३२	३२	इसको प्राप्ति १५ पुस्तकको अधि होमि अधि । मि. क. - राजधानी । अधि अधि । (स)
२२०	राजधानी	पुस्तक अधि	१२३३	३३	इसको प्राप्ति १५ पुस्तकको अधि होमि अधि । मि. क. - राजधानी । अधि अधि । (स)
२२१	राजधानी	पुस्तक अधि	१२३४	३४	इसको प्राप्ति १५ पुस्तकको अधि होमि अधि । मि. क. - राजधानी । अधि अधि । (स)
२२२	राजधानी	पुस्तक अधि	१२३५	३५	इसको प्राप्ति १५ पुस्तकको अधि होमि अधि । मि. क. - राजधानी । अधि अधि । (स)

क्रमांक	ग्रन्थनाम	वर्ग	सिध्दियुग	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
२११	भक्तान्तराष्टक	कवि सूरदास (कवि भास्कर भीमल भास्कर)	१८६२	४२	सि ४—भीमकृष्णराम भास्कर ।
२१२	सतसीर शरीर रामनामकी रत्नमुक्तौ		२ अंश	१+१=२	
२१३	सत सुखेराजकोषा पत्र १ श्रीहनुमान	कवि गुणसाधन	१९२	२३	सूरदासाधिराम रूप कृतलेखकी आकाशे रचित । सि ४—रूपय जोशी आभासासमिचासी । सि ४—गुणहनुमान ।
२१४	विद्यादर्शननाटक आदि (अर्थ नाटक ?)		१९वीं अंश	२	इसमें रामानुजकृत पंचकस्तोत्र धनुराचार्य कृत सिद्धाभासिषु एवं शो घाम्य कृतिया सिद्धित है ।
२१५	(१) व्यासयोग (२) कृष्णायाम (३) वनयोग (४) युधिष्ठिराष्टक (५) कृत कविता (परमार्थ) (६) कविता-श्रीगुरु (७) शोभा दर्शन	युधिष्ठिर विषय नगराष्ट ? माधोदास कर्मपति विषय अनारतो आदि कवि आत्मक गंध आदि गुणराष्ट (?) विद्यादर्शन (राम) योगावत	" " " १९-२२ २३-२६ २६-२७ २८-३० २९ अंश	१-३ ३-१४ १४-१६ १६-२२ २३-२६ २६-२७ २८-३० २९ अंश	रत्नना-१७४३ अमुक । र का-१८७३ । सि. ४-गोपीचंद गर्मा अमुक । महाराष्ट्र नांदे अमुककी प्रतिसे लिखित । सि ४—गोपीचंद गर्मा अमुक ।
२१६	साम्बुद्धनाथ भास्कराष्टक		१९२३	२९	
२१७	कविताष्टक ८८ १६२		१९२३	२९	

ક્રમ નં.	વ્યવસ્થા	વર્ત	મિતિવચ	વચનવચ	વિશેષ ચિહ્નન માધિ
૧૧૨	મુખ્યમાત્ર રાત્રી બોલ્યાનિહીરી	ભાઈ સત્તાવિદ્ય	૧ થી ૬	૧૪	
૨૧૩	(૧) માત્રામહેસ	અમેરાવ વારદ	"	૧-૨	
	(૨) રાત્રીભાગ	"	"	૨-૨	
	(૩) પ્રાત્રાવાચ	"	"	૩-૧૪	
	(૪) કાલીકુચ	"	"	૧૪-૨૪	
	(૫) જરનિવાહિત	"	"	૨૪-૨૭	
૧૧૪	(૧) જિત્ત-બીજવદ્ય	કાંઠીવાસથી વાદિ વાલેક	૧૨૨૭૬	૧	રવિ-૧૮૭૨ ૧૫૬૧
	(૨) કુદા એકલ-અમલકાર	વાતોવા	"	૧-૭	
	(૩) કુદા કલિ-નૃગ એક મોનાથી	વાતોવા કુવા	"	૭-૧	
૧૧૫	(૧) મવાલક રાત્રીથી કાલ	"	૨ થી ૬	૧-૨	દસ વૃત્તકર્મી કાલ ૧૨૭(૩)વર પ્રકૃતિ કાલકા દોવ માવ મિતિ ૬
	(૨) કુદા મીલ ૪	"	"	૨-૧	
	(૩) મોનાથી મીરમાવજરી	કારદ વીરવલ (કલ)	"	૧-૧૮	સત્તાવ વૃષા ૬
૨૧૬	કુદાવચનક	વાતક કલિ	"	૪ વેગ	કુદાવચનકથી કારદ મુદા મુદાવાતકથી વાતવલકથી પ્રતિ મિતિ ૬
૨૧૭	જિત્ત-મુલક	"	"	૧૧૨+૧૨=	મોવરકે કલિવાતકા મિતિવાતકથી કુલક
	"	"	"	૧૨૪ વેગ	મુદા ૨ (૨) કો પ્રતિમિતિ ૧૨૨ વેગ મુદા- વચકે ૬
૨૧૮	(૧) અવાતકાકર	અવા રાત્રાવાતક	૧૬૭૪	૨ વેગ	મિ ૬-મોનાથી ૬ વર્ષ વાવર

क्रमांक	ग्रन्थनामा	कर्ता	मिपिपत्रसं	पत्रसंख्या	विशेष विवरण धारि
(२३८)	(१) नीतिवार्ता	राठोड फोलेसंय स्मोस- दासोड	१९८४	२	मि.क.-योपीबाब समर्प बायपुर। यमु बायपुर परिचालक उपदेश भाषा प्रणय है। (सं)
२३९	अन्योपन्यस	अवि अयकुण्ड कुपाराम	१९८९	१	मि.क.-योपीबाब समर्प बायपुर।
२४	विद्यार्थकाम्य (संयक)	हुरकपदास मोहित (सिक्क)	१९८५	१७	रचना-१८७४। विद्यार्थक संयोजक विद्यार्थकाम्य निर्मित। हुरकपदासकी प्रतिसे मिप्रीकृत।
२४१	राजसत्तैव	विद्याराज भूप जेवाक	१९८५	३१	मि.क.-योपीबाब समर्प, बायपुर।
२४२	(१) महाराज विमनिमुनी राठोडरा कविता	मुरलीधारा साहिबदास	१९८३	१-३३	"
२४३	(२) स्फुट कवितादि ३	प्रमद कवि	१९८२	१-२३	मि.क.-पुरोहित नैयममन (वीरमन)
२४४	विद्यार्थकाम्य कविता (विद्यार्थकी सुतिनिपयक छंद	मुनसीपाल धारि	१९८२	१५	मि.क.-योपीबाब समर्प बायपुर।
२४५	राजकालम (बासु-विमन्य) मूल	सत्यन सुनकार	१९८४	१५	"
२४६	(१) माताजीकी विद्यालय	बापूद ईश्वरदासकी	२ बी.स	१-५	"
२४७	(२) हार्मा फोर्माका पुष्पविद्या	"	"	१२	"
२४८	मिन्हा-पुतिपत्र	"	"	१-४३	"
२४९	ईश्वरदासकी बापूदका नीचक-परिच	अविमलविधि पीठुकाबट्ट	"	१९	भाषाकार धोरियमन रिसर्च इन्टीमिपुट, मुनकी प्रतिसे मिप्रीकृत।
२५०	एवं सत्ताचारकी आत्म्य पत्र	"	"	५	मि.क.-योपीबाब समर्प बायपुर।
२५१	(१) मुसमुन्दावली (प्रलयपुष्प)	"	१९८३	५	"
२५२	(२) (विनीयकम्)	महार्कवि पक्कविमाराजो	१९८३	५	"
२५३	प्रत्येकित्तवर्ष (पत्र)	"	२ बी.स.	५	"
२५४	मोडेरना बासकपुष्प व्यापनके बल मात्र	"	२ बी.स.	५	"

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	तिथिप्रमाण	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
१२१	आचाराज-आचार्यदत्ता एवं तामरकाशी आत्मनः वर	प्रायतः कवि ?	१२२२	११२ + १ पत्र	यह प्रति जो प्रति द्वारा सम्पादित है।
१२२	आचाराज-आचार्यदत्ता	"	१ बी.म. १२२४	४८	
१२३	प्रवर-जीराजाराज		२ बी.म.	१४	मि. क. वं आपूराज पुआरी, जयपुर।
१२४	मनीषगणितार्थ आरेखीनामुक्तानु बन्धी	कात्यायन	२ बी.म.	१२	"
१२५	अनुरागिनीमित्रोके वर	बनुर मित्रोमणि (२)	१२४४	४	"
१२६	(१) मोक्षरत्न	कविराजा कीर्तिदासजी	१२२१	१-२	
	(२) मंगलसूरी	"	"	२-४	
	(३) आदिशक्तिनाम	"	"	४-७	
	(४) देवक (वरा) नाता	"	"	८-१	
	(५) ब्रह्मसूक्तकोटका	"	"	१०-१२	
	(६) मुद्राविशाली	"	"	१२-१४	
	(७) हृदयवर्धन	"	"	१४-१५	
	(८) शायरवाणी	"	"	१६-१८	
	(९) देवनाता	"	"	१८-२१	
	(१०) विपुलवाणी	"	"	२१-२२	
	(११) अतिरिक्तोके विग्रहनाम-अरुणको अभाष	"	"	२३-२६	
१२७	विजयविष्णु ४४८ पत्र	बाबूट नुरादीन	२ बी.म.	१७	
१२८	एकतारनिष्ठान्न ३३ पत्रोक्त है।	बाराधि	"	४	"

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	निरूपित	पत्रसंख्या	विशेष विवरण यादि
२२८	विद्यासमी	लेख परीर	२ बी. ए.	२	स्वर्गाय पुरोहित जोहरीकाराज्यकी द्वारा
२९	"	भारतमन्दास	"	७	संगृहीत एक गुणव्यापित प्रति है । (लं)
२९१	मन्तरालकाव्य (भावापवागुवाह एवं भावातिहित)		"	६	प्रकाशनेके संविकल्पमालय द्वारा प्रेषित प्रकाशक
२९२	संक्षेपका		"	१	सहितके मन्त्रोद्गी यजना ।
२९३	(१) कुण्डलकीनो (२) " "	कविताका बर्हीवास	"	१	कवि प्यारेसात्मकीको बीनं प्रतिसे मिलीकुल ।
२९४	कवितासंग्रह		"	५	हर्षनाथ (नोकर) शिव भगवानुकी स्तुति एवं
२९५	शिवकाव्य (प्रयुक्त)		"	४	प्रशस्तिपरक है । (लं.)
२९६	(१) कथाका-ईशाक्यप्रशस्तिनात्मम्	मणिकण्डवधि (मोहित- कविमुद्र, कयोभरामकीन)	१९२४	७	रचना-१९२४ । पद्यानाय देवामयसे देवत्वान्ति- पुत्र पयसिपुत्री लिलुवाज एव मातुल मिलीको द्वारा शिवासे उत्कीर्ण । नि. क. जोशीकर सर्वा कानपुर । कुल १९२२ स्कोक है । (लं)
२९७	(२) विनालेख-प्रतिनिमित्तकम् (१) सुमुत्तवादीके उत्तर दरवाजे के दुरासे कोष पर तथा शिवा- लेख एवं तोरमानका शिवालेख (२) कथामुका शिवालेख	"	२ बी. ए.	१२	इलकी विप्लव पुरोहितकी मुकीसे मयूरी है । (लं)
			"	१४	लेख १० है उत्कीर्ण ।
			"	१	१३ उत्कीर्णमक लेख उत्कीर्ण है ।
		भापु (बालादित्य)	"	३	१० है स्लोकारमक आदित्य गुणकार एवमुक्त भापु (२/३) द्वारा उत्कीर्ण ।

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	निर्गमन	पुस्तकिका	विशेष विवरण आदि
२२२	चित्रागोत्री	शिव कवीर	२ बी. ए.	२	स्वर्णयुग पुरोहित श्रीहरिनारायणजी द्वारा संगृहीत एवं मुद्रापत्रित ग्रंथ है। (सं.)
२२३	"	नारायणदास	"	३	प्रबोधोत्थे वैदिकव्याख्या द्वारा मद्रिद मद्रोवे-लक्षिताके मन्त्रोंकी वचना।
२२४	अष्टावक्राचार्य (आत्मनःशुद्धाद एवं आचार्यहित)	कविराया कवीरदास	"	४	कवि प्यारेलालजीकी कवितां प्रतिष्ठे लिखित।
२२५	मोक्षमला	"	"	५	हनुमान (नीकर) कवि मयरायको स्तुति एवं प्रशस्तिपरक है। (सं)
२२६	(१) कृष्णवर्णीनी	नविकण्ठकवि (गोविन्द कविभूमि कवोन्मरामणी)	१२२४	७	रचना-१२५। पद्यानाय देवालयमें देवस्वामि-पुत्र पदविम्बेरी विष्णुदास एवं माहुल विष्णो द्वारा मिलाने उत्कीर्ण। नि. क. दोलकान्ध मार्ग बयपुर। कुल ११२ श्लोक है। (सं)
२२७	(२) "	"	२ बी. ए.	१२	इसकी विषय पुरोहितजीकी पुस्तके में है। (सं)
२२८	विष्णुसिंह-प्रतिनिधिकाव्य	"	"	१४	संख्या १५ में उत्कीर्ण।
२२९	(१) स्तुतिसाधोके उत्तर बरवाले के पुरखे कोय पर तथा किला-सेख एवं तोरमायका किलासेख	भायु (बलारित्त)	"	१	१२ श्लोकालय लेख उत्कीर्ण है।
२३०	(२) बामभुका किलासेख	"	"	३	१५२ श्लोकालय प्रकाशित मुद्राकार रघुकुल मद्र (२)म द्वारा उत्कीर्ण।

क्रमांक	विवरण	प्रकार	मिति	निष्कर्ष	पत्राचार	विवरण
(२९७)	(१) ग्वाल्हेरपुर्बिके कृत्य कर गुरे हुए मीर के विषय विज्ञापित	२	२	२	२	२९७ में रचित एवं उपकीर्ण ।
	(२) ग्वाल्हेरपुर्बिके विषयविहारी	२	२	२	२	२९७ में उपकीर्ण ।
	(३) ग्वाल्हेर के युवमन्त्रिहारी	२	२	२	२	२९७ में उपकीर्ण ।
	(४) ग्वाल्हेर के युवमन्त्रिहारी	२	२	२	२	२९७ में उपकीर्ण ।
	(५) ग्वाल्हेर के युवमन्त्रिहारी	२	२	२	२	२९७ में उपकीर्ण ।
	(६) ग्वाल्हेर के युवमन्त्रिहारी	२	२	२	२	२९७ में उपकीर्ण ।
	(७) ग्वाल्हेर के युवमन्त्रिहारी	२	२	२	२	२९७ में उपकीर्ण ।
	(८) ग्वाल्हेर के युवमन्त्रिहारी	२	२	२	२	२९७ में उपकीर्ण ।
	(९) ग्वाल्हेर के युवमन्त्रिहारी	२	२	२	२	२९७ में उपकीर्ण ।
	(१०) ग्वाल्हेर के युवमन्त्रिहारी	२	२	२	२	२९७ में उपकीर्ण ।
	(११) ग्वाल्हेर के युवमन्त्रिहारी	२	२	२	२	२९७ में उपकीर्ण ।
	(१२) ग्वाल्हेर के युवमन्त्रिहारी	२	२	२	२	२९७ में उपकीर्ण ।
	(१३) ग्वाल्हेर के युवमन्त्रिहारी	२	२	२	२	२९७ में उपकीर्ण ।
	(१४) ग्वाल्हेर के युवमन्त्रिहारी	२	२	२	२	२९७ में उपकीर्ण ।
	(१५) ग्वाल्हेर के युवमन्त्रिहारी	२	२	२	२	२९७ में उपकीर्ण ।
	(१६) ग्वाल्हेर के युवमन्त्रिहारी	२	२	२	२	२९७ में उपकीर्ण ।
	(१७) ग्वाल्हेर के युवमन्त्रिहारी	२	२	२	२	२९७ में उपकीर्ण ।
	(१८) ग्वाल्हेर के युवमन्त्रिहारी	२	२	२	२	२९७ में उपकीर्ण ।
	(१९) ग्वाल्हेर के युवमन्त्रिहारी	२	२	२	२	२९७ में उपकीर्ण ।
	(२०) ग्वाल्हेर के युवमन्त्रिहारी	२	२	२	२	२९७ में उपकीर्ण ।

[illegible]

क्रमांक	व्यवसाय	कर्ता	निविद्यमान	पत्रसंख्या	विशेष विवरण यादि
२७१	कलियासदृश	घासीया बघा	२ बी.अ	२६ देव	नि.क.—गोवोचर सप्त, बयपुर (?) इस समयमें जोबपुरके राज सरदारोंके वीरोंके चरित्रिक दो हस्तियां मिलित हैं। इनमें १ तो 'हावेत' पक्षारान्त मानसिद्ध जोबपुरकी है जिसमें तत्कालीन महामन्त्रि बोजपुरका हस्तियास बलिष्ठ है। दूसरी हस्ति 'मुर-बाठारो सबबादो' नामक है। इसमें मुर और बाठारो प्रस्तोत्तर हैं। (सं) नि.क.—गोवोचर सप्त, बयपुर। बयपुर मिबासी जोड़े सुबनारायणजीकी प्रतिसे लिखी हुई। अभिप्रेतोंद्वारा द्वारा सुसम्पादित प्रति। (सं)
२७६	सिक्कापत्र	दासोचर (?)	१६ वर	१६ "	
२७७	बीबीरास-गुवाबाली छरीक	मू बीबीरास ही कदिया मुरारिबाल	२ बी.अ	११	
	(१) जोहुक बतवराय		"	१-१	
	(२) मुरबालमूकल		"	१-११	
	(३) मोहमदमरान		"	१-२	
	(४) बन्नामहुरो		"	२-५	
	(५) मानदियागिबाब		"	२-७	
	(६) बेस्वाबाली		"	७-६	
	(७) सुबनमूकलपेटका		"	६-११	
	(८) मुकदियालोसी		"	११-१२	
	(९) गुणवरांन		"	१२-१५	

[illegible]

क्र.सं.	कार्यवाही	कर्म	विनिश्चय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण यदि
२८६	महापद्म श्रीमन् (२२०३) का इतिहास		२ बी.ए.	२५	
२८७	महापद्म श्रीमन् (२२०३) का इतिहास	१००	२ बी.ए.	२५	
२८८	महापद्म श्रीमन् (२२०३) का इतिहास	१००	२ बी.ए.	२५	
२८९	महापद्म श्रीमन् (२२०३) का इतिहास	१००	२ बी.ए.	२५	
२९०	महापद्म श्रीमन् (२२०३) का इतिहास	१००	२ बी.ए.	२५	
२९१	महापद्म श्रीमन् (२२०३) का इतिहास	१००	२ बी.ए.	२५	
२९२	महापद्म श्रीमन् (२२०३) का इतिहास	१००	२ बी.ए.	२५	
२९३	महापद्म श्रीमन् (२२०३) का इतिहास	१००	२ बी.ए.	२५	
२९४	महापद्म श्रीमन् (२२०३) का इतिहास	१००	२ बी.ए.	२५	
२९५	महापद्म श्रीमन् (२२०३) का इतिहास	१००	२ बी.ए.	२५	
२९६	महापद्म श्रीमन् (२२०३) का इतिहास	१००	२ बी.ए.	२५	
२९७	महापद्म श्रीमन् (२२०३) का इतिहास	१००	२ बी.ए.	२५	
२९८	महापद्म श्रीमन् (२२०३) का इतिहास	१००	२ बी.ए.	२५	
२९९	महापद्म श्रीमन् (२२०३) का इतिहास	१००	२ बी.ए.	२५	
३००	महापद्म श्रीमन् (२२०३) का इतिहास	१००	२ बी.ए.	२५	

[illegible]

क्रमांक	प्रकथाभाषा	कर्ता	निरूपितप्रकार	पृष्ठसंख्या	विशेष विवरण यादि
१८८	मथुराका शीलकाई रमणीयहकी द्वितीय-का इतिवृत्त		२ बी.क	२ ५	
२८	मथुराका शीलकाई (कटा कथास) तथा इतिवृत्तसहित १ पत्र	पं. इत्यात्मसमर्प द्वारा संग्रहित		३० + १० ३१ पृष्ठ	चोमके ठापुर मथोहरविष्णुकीका प्रतिमुद्रित पुस्त ।
२८१	(१) राजपुतामेरे कुछ कालका कृतान्त			१-४ "	
	(२) राजपुतामेरे भटे घोर राजपुत्र	मुकी देवीयात्रकी द्वारा संग्रहित		१-४ "	
२८२	(१) भंके कवि घोर उसकी कविता	सुवैकराज शारीक		१-५	
	(२) कालकथन	पुरोहित हरिभाराम्बकी		अर्धा	
२८३	राजस्थानी कविताएँ एवं लेख	रामनिकाश शारीक यादि "		६	
	(१) सौमीले काल	ठापुर रामनिह दंबर		१०५	
	(२) विषका	बदरीलाल याकाई		२११	
	(३) इला	काकनिह (कावलीका ?)	"	१११	
	(४) "	मुरलीधर बाल (मालाजी)	"	१२५	
	(५) "	मथोहर कसी	"	१२५	
	(६) पुनर्जरो द्वार	कलकटर (विद्याधर	"	१२५	
	(७) नागर पाम	कासी ?)	"	१२५	
२८४	भारतकवि	देवदि जगु मंडल कवि	१२८ ७	३४	मि.क.-यन्माकातात्मक भगवानसर्वा श्रीपुन-मिवासी । र.का -१८७६ ।
२८५	राजस्थानकवि	" "		४६	मि.क.-यन्माकातात्मक भगवानसर्वा श्रीपुन-मिवासी । र.का -१८७६ ।
२८६	राजपुतामेरे रिकाकतोंका स्मोरा	" "		५८ पृष्ठ	मि.क.-पुरोहित श्रीभाराम्बक कविमिवाकाता ।

[illegible]

[illegible]

क्रमांक	विवरण	वर्ग	निमित्तक	वर्षावस्था	विशेष विवरण यादि
(१६)	अवकाश श्रम				
३१	गुरुका-				
(१) शोधपूर्णश्रम	व्योमसूराकार्य		२ करो.रा.	२ देव	मुंबाती कायानिर्वाहकारी मंडल बकील
(२) योनिश्रम (विशेषकर)				२६-३१	मि.क-सिंहासम काशीराज कोशी। मि.खा-बी (को) नवीपूर।
(३) निमित्तक मालती (बहुविधित-गायत्री)			"	३१-३२	
(४) श्रुतिश्रममालती			"	३६-३७	
(५) नवीनमालती (पत्र-मालती)			"	१-४	
(६) मालतीनिर्वाहकर	मुनिश्रुतिने बहुराजको			४-६	
(७) श्रुतिश्रुतिनिर्वाहकर	सिंहासम			७-१	
(८) बहुराज (बरीकर)	श्रुतिश्रुतिनिर्वाह (माल-मालती)		"	११-१२	
(९) कायानिर्वाहकर	कायानिर्वाह		"	१२-१३	
(१०) श्रुतिश्रुतिनिर्वाह	मालतीने मालिनीकर		"	१३-१४	"
(११) भगवद्गीता	मालती		"	१४-१५	"
(१२) मालिनीकर	मालिनीकर		"	१५-१६	"
(१३) मालिनीकर	मालिनीकर		"	१६-१७	"

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कथा	निर्दिष्टमय	पत्रसंख्या	विषय विवरण आदि
(३१)	(१४) गजोदयोजकस्तोत्र (१५) श्रीपद्मस्तवरात्र (१६) श्रीरामस्तवरात्र (१७) श्रीकृष्णस्तवरात्र (१८) विष्णु (विष्णु) सहस्रनामस्तोत्र (१९) इन्द्राजीस्तोत्र (२०) श्यामात्मनिगीतानामाजीव (२१) पूर्वकवच	द्यौतकप्रोक्त महाभारत-आदिपर्वोक्त सम्स्तुपारसद्वितीया ब्रह्मव्यासमय (विष्णुप्रोक्त ?) रत्नपुराण इन्द्रप्रोक्त ब्रह्मवैवर्तपुराणोक्त	१८३६ " " १८३७ " १८३८ १८३९	१८५-२१५ २१६-२३३ २३४-२४२ २४३-२४४ २४५-२६७ २६७-२७१ २७२-२७६ २७७-२७८	सि क-सिवाराम काशीराम जोशी किलवाडीपुर " " " सि क-पुष्पासिद्धाय भीमका बराला ?
३११	सूक्त— (१) रघुनाथपंचारत्नम् (प्रस्ता- वरसमि गङ्गकस्तोत्र) (२) हनुमन्पञ्चारत्नस्तोत्र (३) रामचन्द्रस्तवरात्र (४) गोपाकस्तुतनामस्तोत्र (५) रामरक्षास्तोत्र (६) रामायणस्तुतनामस्तोत्र ब्रह्मवैवर्तस्तोत्र व्याकृतस्तोत्र	सम्स्तुपारसद्वितीया सम्स्तुप्रोक्त रामायण सम्स्तुप्रोक्त ब्रह्मपुराणार्थ	" " " " १८४७ १८४८ १८४९	१-३ ३-४ १-२९ १-४४ १-८ २४ १२ २	" सि क-पुष्पासिद्धाय भीमका बराला ? " " " सि क-ज्योत्स्ना राणीश गिरिचारी लालमरपुर (सोनर) सि क-बाह्यसुभाकर ? सि क-रामानुजबाल ?
३१२	सिद्धिनामस्तोत्र	ब्रह्मवैवर्तपुराणोक्त	१८४९	४	
३१३	विष्णुसिद्धिनामस्तोत्र		१८४९	१८	

क्रमांक	प्रश्नार्थ	वर्ग	निर्णय	प्रश्नार्थ	निर्णय
११०	(१) कापूरकोट		१२वीं पृ.	१-३	
१११	(२) पत्रहाव(बिबी)दहव		"	१-११	
११२	राजगढा		१२वीं पृ.	३	
११३	मन्दापूर(बिबी)दहव		"	३	
११४	पुर्णाली		"	३	
११५	मन्दापूर (बिबी) दहव		"	३	
११६	राजगढा		"	३	
११७	गोमती(बिबी)दहव		१२वीं पृ.	३-६	
११८	(१) मन्दापूर(बिबी)दहव		"	३-१२	
११९	मन्दापूर(बिबी)दहव				
१२०	मन्दापूर(बिबी)दहव				
१२१	मन्दापूर(बिबी)दहव				
१२२	मन्दापूर(बिबी)दहव				
१२३	मन्दापूर(बिबी)दहव				
१२४	मन्दापूर(बिबी)दहव				
१२५	मन्दापूर(बिबी)दहव				
१२६	मन्दापूर(बिबी)दहव				
१२७	मन्दापूर(बिबी)दहव				
१२८	मन्दापूर(बिबी)दहव				
१२९	मन्दापूर(बिबी)दहव				
१३०	मन्दापूर(बिबी)दहव				
१३१	मन्दापूर(बिबी)दहव				
१३२	मन्दापूर(बिबी)दहव				
१३३	मन्दापूर(बिबी)दहव				
१३४	मन्दापूर(बिबी)दहव				
१३५	मन्दापूर(बिबी)दहव				
१३६	मन्दापूर(बिबी)दहव				
१३७	मन्दापूर(बिबी)दहव				
१३८	मन्दापूर(बिबी)दहव				
१३९	मन्दापूर(बिबी)दहव				
१४०	मन्दापूर(बिबी)दहव				
१४१	मन्दापूर(बिबी)दहव				
१४२	मन्दापूर(बिबी)दहव				
१४३	मन्दापूर(बिबी)दहव				
१४४	मन्दापूर(बिबी)दहव				
१४५	मन्दापूर(बिबी)दहव				
१४६	मन्दापूर(बिबी)दहव				
१४७	मन्दापूर(बिबी)दहव				
१४८	मन्दापूर(बिबी)दहव				
१४९	मन्दापूर(बिबी)दहव				
१५०	मन्दापूर(बिबी)दहव				

क्रमांक	प्रश्ननाम	कर्ता	निमित्तमय	उपस्थिति	विशेष विवरण यदि
११३	पुस्तकालय स्तुति	भावसमिप्रीतकवचन	१२वीं श	३	
११४	नवरत्नस्तोत्र	दीवकनमाचार्य	"	६	
११५	मुनिराजापण्य (प्रबन्धक)	बालनीति	१२९४	२	नि.क.—राजकुमार बालपुर ।
११६	"		"	२४	"
११७	हृत्प्रीतार्थीपञ्चमस्तोत्र	ब्रह्माचर्यपुराणपण्य	१२वीं श	२	
११८	हृत्प्रीतार्थस्तोत्र (श्रुति)		१२३३		
११९	नारायणकवच	भावसमिप्रीतकवच	१२वीं श.	७	
१२०	बालुकीनित्यस्तोत्रम्		"	१	
१२१	प्रपञ्चरिवाक्यम्	दीनोकाचार्य	"	१	
१२२	मुप्यञ्जयस्तोत्र	मुनिपुराणपण्य	"	१	
१२३	विद्यारामस्तोत्र	राजभक्तसरस्वती	"	२	
१२४	कालिकाजीमोदमण्डितकवच	बालसमिप्रीत	"	३	से तीनों पत्र एक एक निमित्त कृतिपत्र हैं । (स)
१२५	सप्तस्तोत्रो नीता		"	२	
१२६	वीररामस्तोत्रम्		१२३१	३	व्यासिपत्रक 'वीररामकण्ड' सतत भवति
१२७	वीरुनिस्तोत्र				नि.क. लक्ष्मण बसोरयम् ।
१२८	वायुपञ्चकम्			९	
१२९	हृत्प्रीतस्तोत्र	शेखराचार्य (कविप्रतिष्ठा)	१२वीं श	९	नि.क. रामकृष्ण प्रोहित विमलवाचस्पत्ये ।
१३०	" " व्यासविधि		"	१४	
१३१	मुनिवत्सला		"	३	
१३२	महाभुक्त्यवस्तोत्र	मुनिपुराणपण्य	"	४	
१३३	प्राणवैराग्यस्तोत्र कवि	मु. पाण्डुनाथार्य श्री. बालक	"	३	
				१७	

क्रमांक	व्यवसाय	वर्ग	निमित्तक	व्ययवस्था	विशेष विवरण आदि
१२४	अनामोदरी मशीन	५ घण्टाप्रतिदिनकार्यभूत देराचार्य की प्रजाप मयप्रोक्त	१२वीं व	६	ये चारों पत्र २ एकड़ एवं विभिन्न कृषिसौके हैं।
१२५	मराठापट्टक	अथर्बोत्तरप्रवत	"	२	
१२६	माराठमृगमालादि	अथर्बोत्तरप्रवत	१८७२	१-२	
१२७	(१) माराठमृगमाला (२) माराठमृगमाला	अथर्बोत्तरप्रवत	१८७२	६-२३	
१२८	माराठमृगमाला	अथर्बोत्तरप्रवत	१२वीं व	११	इसमें माराठमृगमालादि सत्यमालासोत्रायास राजिभूत एवं देवीभूत मनुष्य सोत्र मिलित है। (न) नि. क. -माराठमृगमाला अथर्बोत्तरप्रवत।
१२९	माराठमृगमाला	अथर्बोत्तरप्रवत	"	२	
१३०	माराठमृगमाला	अथर्बोत्तरप्रवत (२)	"	४	माराठमृगमाला मनुष्यभूत पटल।
१३१	माराठमृगमाला	अथर्बोत्तरप्रवत	१८७२	१	
१३२	माराठमृगमाला	अथर्बोत्तरप्रवत	१८७२	१-४	सर्व प्रवत १२ पटल विद्यमान हैं माराठमृग मृगमाला।
१३३	माराठमृगमाला	अथर्बोत्तरप्रवत	"	२	
१३४	माराठमृगमाला	अथर्बोत्तरप्रवत	१८७२	२६	
१३५	माराठमृगमाला	अथर्बोत्तरप्रवत	"	२	
१३६	माराठमृगमाला	अथर्बोत्तरप्रवत	१८७२	२६	
१३७	माराठमृगमाला	अथर्बोत्तरप्रवत	"	२	

क्रमांक	ग्रन्थभाषा	कर्ता	निर्गमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
११७	गुरुदेवस्तोत्र	श्रीनिवास वैराग्याचार्य	१९वीं स	३	
११८	रायबाष्टकस्तोत्र	रामानुजधाममुखाचार्य	"	१	
११९	गुणरत्नगुस्तोत्र		१९१४	१३३	
१२०	श्रीरत्नकरीत		१९१३	४	सि.क.—रामकृष्णार आराम कपूर
१२१	श्रीरत्नपञ्चमम्		१९१३	२	" "
१२२	महागौरात्मकर्मजराबालोचनविद्यामणि	बारापुष्टीराजकवठ	१९वीं स.	१४	"
१२३	बारबराकस्तव		१९११	४	अनुर्ण ।
१२४	दीर्घद्वैतस्तोत्र		१९वीं स.	४	"
१२५	हेन्दुव्याचार्य (विद्याभाष्य)/सुप्रति	पाञ्चरात्राचार्य पदुसिनि	१९वीं स.	१५	
१२६	विदिते स्तोत्र (अथस्ता चक्राध्यात्मम्)	बति कपूरदेव व्याख्यानकर्ता	"		
१२७	श्रीबालादेवार्चनार्तिः	गुरुदेवस्तोत्रात्मक	"	४	
१२८	(१) सकलपञ्चम		१-८	१-८	
	(२) श्रीनिवासकवठ		"	२-११	
१२९	शुभनक्षत्राष्टमास्तोत्र	पदुसिनि	१९१३	३	सि.क.—अनन्तापुराधर्म श्रीम्
१३०	गुणस्तव	पदुसिनि	१९वीं स.	२	
१३१	सप्तश्रीस्तोत्राष्टादशवि	मंत्राभारत विद्यालयकवठ			
१३२	मृगमनुजवर्णिकात्मम्	मंत्राभारतकवठ			
१३३	गुरुसहिता (रामकृष्णसहि)	श्रीमन्मोहोरिकवठ			
१३४	सप्तमात्मविद्यास्तोत्रम्	श्रीमन्मोहोरिकवठ	"	१	अनुर्ण
१३५		श्रीमन्मोहोरिकवठ	"	१३	

राज्यपाल आकाशवाणीस्थान—(विद्यार्थक एवं-अध्यक्षी)

क्रमांक	कर्मकाज	वर्ग	मिथियमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण यादि
१८४	अध्यक्षविद्यार्थीसंस्थापना	बालराज	१८वीं भा	७१	
१८५	मुद्रण (पत्रसंस्थापना)	बहुमंडितापी भयवर्तिता	१७वीं भा	१	
१८६	(१) मुद्रणसंस्थापना	अभिलेखपत्र	१८वीं भा	२-३	लि.क.—महोदय काहाल ।
१८७	(२) विद्यार्थकपत्रि संस्थापना	मुद्रणसंस्थापना	१८वीं भा	१-२	मोहकायाका घामे ।
१८८	(३) विद्यार्थकपत्रि संस्थापना	संस्थापना	१८वीं भा	१-२	मुद्रण मिथिल एवं कोमल एवं
१८९	(४) मुद्रण (संस्थापना) रोज	अभिलेखपत्र	१८वीं भा	११-१२	
१९०	अभिलेखपत्र	"	"	२२	
१९१	संस्थापना	आकाशवाणीस्थान	१८वीं भा	३२	लि.क.—चोलावर काहालती मय ।
१९२	चोलावर	मुद्रणसंस्थापना	१८वीं भा	१-३	
१९३	संस्थापना	मुद्रणसंस्थापना	१८वीं भा	५	लि.क.—कृष्णल मुद्रणो विमोहो घाम ।
१९४	मुद्रणसंस्थापना	मुद्रणसंस्थापना	१८वीं भा	२	मोहकायाका घामे
१९५	संस्थापना	मुद्रणसंस्थापना	१८वीं भा	३३	
१९६	संस्थापना	मुद्रणसंस्थापना	१८वीं भा	७	
१९७	संस्थापना	मुद्रणसंस्थापना	"	४	
१९८	(१) विद्यार्थकपत्रि	मुद्रणसंस्थापना	१८वीं भा	१-४	
१९९	(२) विद्यार्थकपत्रि	मुद्रणसंस्थापना	"	४ भा	
२००	(३) विद्यार्थकपत्रि	मुद्रणसंस्थापना	"	२-५	
२०१	(४) विद्यार्थकपत्रि	मुद्रणसंस्थापना	"	७-८	संयुक्त ।

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	निर्गमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
(१२७)	(२) कल्पद्रुमस्य (६) ब्रह्मवैवर्तस्य नृसिंहस्य	पद्मेष्टुपानस्य ब्रह्मराक्षसं नृसिंहपुराणस्य तन्महोदयस्य सुमन्त्रस्य	१२वीं स.	२०	अधुनी
१२८	(१) बालमीकस्योपनिषद्			१-३	
	(२) सीतास्तोत्र			३५	
	(३) रामस्तोत्र			४-२	
	(४) सीतारक्षीवह्निनाम्नि			२-६	
	(५) सुयमस्तोत्र			२-६	
	(६) ब्रह्मपुस्तिकास्य			६-७	
	(७) सीतास्तुति	(१)		७-११	
	(८) "			११-१३	
	(९) "			१३	
	(१०) " ब्रह्ममन्त्रकारस्य			१३-१४	
	(११) "			१४-१५	
	(१२) पंचरत्ना			१-२	
	(१३) सुवर्णस्तोत्र			२५	
४१	शक्तिदेवताविष्णुशक्तिविद्यास्य	शक्तिदेवता शक्तिदेवता	१७वीं स.	४	
४२	शक्तिदेवतास्तोत्र				
४३	सीतामालादीश्वरविधि	अपस्तम्बसिंहस्य	१२३२ १२३२	३ ७	मि. ब. - अथवा १।

मार्कण्डेयपुराणस्य सीतामन्त्ररत्नमणिनाम् ।

[illegible]

क्रमांक	प्रश्ननाम	कर्त्ता	सिद्धिप्रमाण	पत्रसंख्या	विशेष विवरण यादि
४१६	दुष्टकृत्यद्वयनामस्तोत्र	बाळमोक्षिरामस्वामी रामप्रोक्त	१८२६	६	मि. क.-उपोदीराम माळपुरामध्ये ।
४१७	योगाभ्युदय	सप्तस्वसंक्षिप्तनाम	१८७०	१	मि. क. संभवतः बाळमण्डुलबारास ।
४१८	सर्वजीनृसिद्धिद्वयनामस्तोत्र	भूतिहपुराणे मार्कण्डेय्योक्त	१८७०	२	भगुमुं. बा. रामानुजबारास ।
४१९	राजास्तोत्र	"	१८७०	१७	
४२०	(१) मङ्गलास्तोत्र	बहुरावसंतपुराणकृत	१८७०	२	
४२१	(२) महापुरुषस्तोत्र	(संक्षेपान्ना- म्याव कृष्णार्चने)	१८७०	१८-१९	
४२२	मयोक्त विष्णुमहात्मनामस्तोत्र	महामातराज	१८७०	१९	व. २ से. १३ तक समाप्त । अन्तिम पत्रमें बहुभक्तवत्की फलस्तुति भगुने लिखित है (सं)
४२३	सविष्कारसंक्षिप्तोत्र सत्काम्य	भू. बहुरावनाथ सेवकान्त- नाम ही समाप्त	१८७०	३२	
४२४	पुराणनामस्तोत्र	"	"	२	मि. क.-सप्तशत ।
४२५	वीरानामपुष्टारकस्तोत्र	१८६६	१८६६	६	लिखितमुद्रा ।
४२६	योगात्मकद्वयनामस्तोत्र सत्काम्य	कविभू. मित्राकृष्णराजीव	१८७०	३५	
४२७	(१) सत्काम्योपसंहारिः	"	"	१	
४२८	(२) "	"	"	१	
४२९	(३) " (सर्वक)	"	"	२	
४३०	मूलरामात्म्य (पारितोषिकार्थ नाम शृंग मस्तोत्र)	बाळमोक्षिमणि	"	७	भगुने ।

राजपक्ष शासकशासन — (सामुच्च-राज-अवस्था)

क्र.सं.	वर्णन	काल	मिथिलवा	पत्रिका	विशेष विवरण यदि
५१६	सामुच्च-राज-अवस्था	सामुच्च-राज-अवस्था	१६वीं पृ.	१	पृष्ठ १
५१७	सामुच्च-राज-अवस्था	सामुच्च-राज-अवस्था	१६वीं पृ.	३-१५	
५१८	सामुच्च-राज-अवस्था (सुदूर)	सामुच्च-राज-अवस्था	१६वीं पृ.	२	
५१९	सामुच्च-राज-अवस्था	सामुच्च-राज-अवस्था	"	१५	
५२०	सामुच्च-राज-अवस्था	सामुच्च-राज-अवस्था	"	५	
५२१	सामुच्च-राज-अवस्था	सामुच्च-राज-अवस्था	१-३	१-३	
५२२	सामुच्च-राज-अवस्था	सामुच्च-राज-अवस्था	१६	१६	
५२३	सामुच्च-राज-अवस्था	सामुच्च-राज-अवस्था	१०-१२	१०-१२	
५२४	सामुच्च-राज-अवस्था	सामुच्च-राज-अवस्था	१३वीं पृ.	१३वीं पृ.	पृष्ठ १: राजपक्षी भाषा में विवरण
५२५	सामुच्च-राज-अवस्था	सामुच्च-राज-अवस्था	"	१	"
५२६	सामुच्च-राज-अवस्था	सामुच्च-राज-अवस्था	"	५	"
५२७	सामुच्च-राज-अवस्था	सामुच्च-राज-अवस्था	"	५	"
५२८	सामुच्च-राज-अवस्था	सामुच्च-राज-अवस्था	"	१	"
५२९	सामुच्च-राज-अवस्था	सामुच्च-राज-अवस्था	"	५	"
५३०	सामुच्च-राज-अवस्था	सामुच्च-राज-अवस्था	"	१५	"
५३१	सामुच्च-राज-अवस्था	सामुच्च-राज-अवस्था	"	१५	"
५३२	सामुच्च-राज-अवस्था	सामुच्च-राज-अवस्था	"	१५	"
५३३	सामुच्च-राज-अवस्था	सामुच्च-राज-अवस्था	"	१५	"
५३४	सामुच्च-राज-अवस्था	सामुच्च-राज-अवस्था	"	१५	"
५३५	सामुच्च-राज-अवस्था	सामुच्च-राज-अवस्था	"	१५	"
५३६	सामुच्च-राज-अवस्था	सामुच्च-राज-अवस्था	"	१५	"
५३७	सामुच्च-राज-अवस्था	सामुच्च-राज-अवस्था	"	१५	"
५३८	सामुच्च-राज-अवस्था	सामुच्च-राज-अवस्था	"	१५	"
५३९	सामुच्च-राज-अवस्था	सामुच्च-राज-अवस्था	"	१५	"
५४०	सामुच्च-राज-अवस्था	सामुच्च-राज-अवस्था	"	१५	"
५४१	सामुच्च-राज-अवस्था	सामुच्च-राज-अवस्था	"	१५	"
५४२	सामुच्च-राज-अवस्था	सामुच्च-राज-अवस्था	"	१५	"
५४३	सामुच्च-राज-अवस्था	सामुच्च-राज-अवस्था	"	१५	"
५४४	सामुच्च-राज-अवस्था	सामुच्च-राज-अवस्था	"	१५	"

क्रमांक	प्रकरणम्	कृता	प्रिण्टिणमस	पत्राङ्कका	विशेष विवरण यादि
४४२	शिकारीसोत्राचा प्रमुखवर्णन		१२वीं ख.		प्रमुख ।
४४३	बळीसोत्र	सत्यपुरुषाचोका	"	२	
४४४	प्रतिभाससोत्र		"	२	
४४५	ब्रह्मसूत्रीसुक्ति		"	२	
४४६	प्रतिभाससुक्ति		"	२	
४४७	प्रतिभाससुक्ति		"	२	
४४८	"		"	२	
४४९	(१) प्रमुखसुक्ति	ब्रह्मपुरुषाचोका	१२वीं ख.	१२	प्रमुख
४५०	(२) सारसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४५१	ब्रह्मसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४५२	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४५३	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४५४	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४५५	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४५६	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४५७	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४५८	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४५९	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४६०	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४६१	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४६२	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४६३	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४६४	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४६५	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४६६	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४६७	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४६८	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४६९	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४७०	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४७१	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४७२	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४७३	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४७४	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४७५	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४७६	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४७७	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४७८	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४७९	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४८०	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४८१	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४८२	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४८३	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४८४	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४८५	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४८६	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४८७	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४८८	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४८९	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४९०	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४९१	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४९२	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४९३	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४९४	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४९५	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४९६	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४९७	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४९८	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
४९९	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"
५००	प्रमुखसूत्रीसोत्र		"	१२	"

क्रमांक	विवरण	वर्ग	विवरण	विवरण	विवरण
५२२	(१) लक्ष्मणसिंह				
५२३	" "				
५२४	भूतनाथ सिंह				
५२५	" "				
५२६	" "				
५२७	लक्ष्मणसिंह				
५२८	लक्ष्मणसिंह				
५२९	लक्ष्मणसिंह				
५३०	लक्ष्मणसिंह				
५३१	लक्ष्मणसिंह				
५३२	लक्ष्मणसिंह				
५३३	लक्ष्मणसिंह				
५३४	लक्ष्मणसिंह				
५३५	लक्ष्मणसिंह				
५३६	लक्ष्मणसिंह				
५३७	लक्ष्मणसिंह				
५३८	लक्ष्मणसिंह				
५३९	लक्ष्मणसिंह				
५४०	लक्ष्मणसिंह				
५४१	लक्ष्मणसिंह				
५४२	लक्ष्मणसिंह				
५४३	लक्ष्मणसिंह				
५४४	लक्ष्मणसिंह				
५४५	लक्ष्मणसिंह				
५४६	लक्ष्मणसिंह				
५४७	लक्ष्मणसिंह				
५४८	लक्ष्मणसिंह				
५४९	लक्ष्मणसिंह				
५५०	लक्ष्मणसिंह				

क्रमांक	वस्तुनाम	कता	निमित्तवर्ग	पत्रसंख्या	विशेष विवरण यादि
४७७	छायाव्यापके स्फुरण		१२बी.अ	३	समुच्च
४७८	छायाव्यापकी		"	४-४४	"
४७९	पारिवर्षिकतालिका (मिथवाधिकमुद्रा)		१८बी.अ	१४	"
४८०	मुद्रावर्षिका		१८बी.अ	४-४	"
४८१	विष्णुभक्तप्रयोग		१८बी.अ	४	" मि. ७-३३ हरिकारापल्लवो खेचडाका रास्ता समुच्च
४८२	देवीनामसंग्रहा		१८बी.अ	११	समुच्च
४८३	विष्णुपूजा		"	१	"
४८४	विष्णुपूजातिले स्फुरण		१८बी.अ	१४	"
४८५	प्रियमातसमुच्च		२ बी.अ	२-४	समुच्च
४८६	समोपासनादिभि		१८बी.अ	१	मि. ७-२० सुप्रास काष्ठम ।
४८७	"		१८बी.अ	२-१	समुच्च । मि. ७-३३ हरिकारापल्लवो
४८८	पाहू निष्कण्ड		१८बी.अ	७	
४८९	मिथवाधिक स्फुरण		१८बी.अ	१	
४९०	मन्त्रपूजातिले स्फुरण		१८बी.अ	१	
४९१	नगरावस्थापनादिभि		१८बी.अ	११	
४९२	सप्तमर्त्यसंग्रह		१८बी.अ	२	समुच्च
४९३	प्रायश्चित्तकाम्	प्रायश्चित्तकाम् कृष्ण सर्वविष्णु भद्राकार्थ	"	२	
४९४	स्वप्नोपायार्थ	सर्वविष्णुपूजाकोष्ठ	१ बी.अ	१	राजस्वपत्रो भावार्थ
४९५			१८बी.अ	१	

क्रमांक	व्याख्या	वर्ग	निर्णायक	पत्राङ्क	विषय विवरण आदि
४८६	मुद्रावाणी मद्रक		१६वीं स	१	राजवाणी आवासे
४८७	आयुर्वेदोक्त के प्रकीर्ण		"	२	
४८८	व्याकरण के "		"	३	
४८९	गुणवर्णनार्थिकारण			१	प्रकीर्ण
४९०	गुरुकर्म			२	
४९१	व्यवहारविमाननिके प्रकीर्ण	भारत		३	
४९२	मीमांसा के प्रकीर्ण			४	
४९३	न्यायविमाननिके प्रकीर्ण			५	
४९४	वाक्योप	मुद्रावाणी	१६वीं स	६	प्रकीर्ण
४९५	आयुर्वेद	केन्द्र	१६वीं स	७	"
४९६	भारत		१६वीं स	८	"
४९७	गुरुकर्म		"	९	"
४९८	व्याकरण के प्रकीर्ण		१६वीं स	१०	
४९९	गणित के "			११	
५००	व्यवहार के मद्रक			१२	
५०१	गणित	विद्यालय (आयुर्वेद)		१३	
५०२	भारत	"		१४	
५०३	व्यवहार	"		१५	
५०४	व्यवहार	"		१६	
५०५	व्यवहार	"		१७	

[illegible]

क्रमांक	व्यवसाय	कला	मिति	पत्र	वित्तिय विवरण
२१५	समाजोपयोगिक	विद्यालय-पत्र-पत्र-पत्र-पत्र	१२ वीं	१	रुपय
२१६	समाज		"	६	"
२१७	समाजोपयोगिक		१२ वीं	१	रुपय
२१८	समाजोपयोगिक		"	६	"
२१९	समाजोपयोगिक		१२ वीं	१	रुपय
२२०	समाजोपयोगिक		"	६	"
२२१	समाजोपयोगिक		१२ वीं	१	रुपय
२२२	समाजोपयोगिक		"	६	"
२२३	समाजोपयोगिक		१२ वीं	१	रुपय
२२४	समाजोपयोगिक		"	६	"
२२५	समाजोपयोगिक		१२ वीं	१	रुपय
२२६	समाजोपयोगिक		"	६	"
२२७	समाजोपयोगिक		१२ वीं	१	रुपय
२२८	समाजोपयोगिक		"	६	"
२२९	समाजोपयोगिक		१२ वीं	१	रुपय
२३०	समाजोपयोगिक		"	६	"

क्रमांक	इच्छामाता	कक्षा	निर्दिष्टमस	पत्रसंख्या	विशेष विवरण यदि
२२२	भास्कर-बालकपुत्राचार्य		१२०५	१	सुपुत्र
२२३	नरेश पुर्ण पुर्ण सुर्ण की आरती		"	३	"
२२४	जाकोबवार (हिन्दी)		"	२	"
२२५	सुभद्राकन्यापुत्र		"	१४	पुस्तकालय वगैरे सुपुत्र ।
२२६	हिन्दीभाषावृत्त पुस्तकालय सुपुत्र		"		
२२७	भक्तपाल	भाषावृत्त	१२०५		पुस्तकाल १७९२ ।
२२८	पुस्तकालय सुपुत्र के बासीरालकी				सुपुत्र ।
२२९	विन्नीकी पुस्तकालय सुपुत्र				
२३०	नरेशकन्या पुस्तकालय सुपुत्र				१२०५ सन्तुष्ट कपूर मासे पुस्तकालय में
२३१	पुस्तकालय सुपुत्र				की मासे । मुक्ति (हिन्दी) सुपुत्र इतिहास)
२३२	विन्नीके बासीराल की				। के-पुस्तकालय का सुपुत्र ।

पुस्तकालय सुपुत्र मासे सुपुत्र

१ १ (सं.)

[illegible]

क्र.सं.	आय.सं.	अवकाश	वर्ग	प्रतिष्ठान	व्यय	व्यय	व्यय
२८६	२८६	कुमारचंद	कनिष्ठ	२८६	२८६	२८६	२८६
२८७	२८७	नरेशचंद	कनिष्ठ	२८७	२८७	२८७	२८७
२८८	२८८	रमेशचंद (कनिष्ठ)	कनिष्ठ	२८८	२८८	२८८	२८८
२८९	२८९	प्रमोदचंद	कनिष्ठ	२८९	२८९	२८९	२८९
२९०	२९०	"	कनिष्ठ	२९०	२९०	२९०	२९०
२९१	२९१	"	कनिष्ठ	२९१	२९१	२९१	२९१
२९२	२९२	बालचंद	कनिष्ठ	२९२	२९२	२९२	२९२
२९३	२९३	गुणचंद	कनिष्ठ	२९३	२९३	२९३	२९३
२९४	२९४	बालचंद	कनिष्ठ	२९४	२९४	२९४	२९४
२९५	२९५	बालचंद	कनिष्ठ	२९५	२९५	२९५	२९५
२९६	२९६	बालचंद	कनिष्ठ	२९६	२९६	२९६	२९६
२९७	२९७	बालचंद	कनिष्ठ	२९७	२९७	२९७	२९७
२९८	२९८	बालचंद	कनिष्ठ	२९८	२९८	२९८	२९८
२९९	२९९	बालचंद	कनिष्ठ	२९९	२९९	२९९	२९९
३००	३००	बालचंद	कनिष्ठ	३००	३००	३००	३००

क्रमांक	पदनाम	कर्ता	प्रमाणिक्य	प्रतिलिपि	विशेष विवरण यादि
१४	रघुविरचित (सप्तमस्कन्ध)	धीमृगलार (वीरभद्र- बालपुराणवीर) बुरदे- विकायासारव बगिरामोभ नभारतसप्तम	१६४	११	सि क - बलदेव द्विदोका प्रकाश एवं प्रकाश- नित प्रकाश ।
१५	मित्रोपाय	राजानुजमोदिक अडिकम्	१६२१	१३	
१६	पक्षेपुत्रविषय	सद्वर्णपरम	१६१४	११	
१७	माधोनाथकवचकाण्ड	देवोदयप्रकाश	१६००	२३	
१८	रघुविर (विजयमन्त्र)	कानिनाथ	१६००	८	
१९	रघुविर (पञ्चदशस्कन्ध)	नभारित	"	१४	
२०	रघुविर (विजयमन्त्र)	नभारित	"	१४	
२१	रघुविर (विजयमन्त्र)	विद्वत्वर	१६००	७२	निर्दिष्टपान-रामायण । सि क - नभारित बुधभारतविद्यार्थी ।
२२	रामायण भाग्य	रामायण भाग्य	१७११	४	पुष्पम् ।
२३	भगवद्गीता भाग्य	यु विष्णुपुरी टी प्रकाश	१६७	२१	सि क - विहारोदास हरिरामगिरि ।
२४	भगवद्गीता भाग्य	विद्वत्वर	१६२६	१	
२५	भगवद्गीता भाग्य	विद्वत्वर	१६२६	१०	प्रकाश एवं प्रकाशित । निर्दिष्ट प्रति प्रकाशित- योरुदासगिरि ।
२६	भगवद्गीता भाग्य	विद्वत्वर	१६२६	१४	प्रकाशित एवं प्रकाशित । निर्दिष्ट प्रति ।
२७	भगवद्गीता भाग्य	विद्वत्वर	१६००	१-२	
२८	भगवद्गीता भाग्य	विद्वत्वर	"	१-२	

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	निर्दिष्टमूल्य	पत्रसंख्या	विशेष विवरण यादि
(११७)	(१) इतिहासकम् (२) इतिहासकम् (३) विद्याभूषण	जगन्नाथ	१८००	२-२ २-३ ३२४	
११८	राजाधाराग्रन्थ (प्राचीन)	"	१८२२	२३	मि. क - रोड्गस सेट ।
११९	वेदमन्त्रसूत्र (प्राचीन)	वेदमन्त्र-नारदसंस्कृत	१८००	२४	प्रकाश प्रकाशित ग्रन्थ ।
१२०	पौरवर्णसंग्रह बुधवारम्परा	रामानुजीय-कवि		७	ग्रन्थ ।
१२१	सुवर्णसंस्कृतनामिका	सुवर्ण संस्कृत		१३	ग्रन्थसंग्रहे ग्रन्थसंग्रहे निर्मित न १८८३ से । ग्रन्थ । बर्गीभविष्य ।
१२२	अनन्तराजसंग्रह (संग्रह) सङ्ग्रह	पद्मेश	२ बी. ए.	४	
१२३	संस्कृतसंग्रह (संग्रहसंग्रह) संग्रह	अनन्तराजसंग्रह	१८००	२	
१२४	संस्कृतसंग्रह	अनन्तराज		३	मि. क - अण्णायाय अण्णायायकोटि ।
१२५	अनन्तराजसंग्रह (संग्रह)	सुवर्णसंग्रह-नारदसंस्कृत	१८००	२	
१२६	अनन्तराजसंग्रह (संग्रह)	सुवर्णसंग्रह	१८१४	२४	मि. क - नुर्योतम मि. क - बुधवारसंग्रह अनन्तराज-नाकापुर ।
१२७	अनन्तराजसंग्रह	अनन्तराजसंग्रह-नारदसंस्कृत	१८००	१७	
१२८	अनन्तराजसंग्रह	अनन्तराजसंग्रह-नारदसंस्कृत		३२	
१२९	अनन्तराजसंग्रह	अनन्तराजसंग्रह-नारदसंस्कृत	"	२३	मि. क - अण्णायाय अण्णायाय संग्रह अनन्तराज संग्रह ।
१३०	अनन्तराजसंग्रह	अनन्तराजसंग्रह	१८००	२४	

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कला	निर्माणसं	पत्रसंख्या	विषय विवरण आदि
(११७)	(१) इलायकम् (२) इलायतकम् (३) विद्यालोकिका	अष्टोत्तराश्वमे "	१२३०.३५ १२३१ १२३२	२-२ २-३ ३११	
११	पञ्चावतारक (याज्ञिक)		१२३२	२३	मि.क-गोहूतसं वृत्त । ग्रन्थस्य अष्टावक्रादित्य ग्रन्थ ।
११२	ब्रह्मसूत्रसंग्रह (ब्रह्मसूत्रविधि)	सप्तमस्तोत्र-नरवत्सलसंवा- लस्य	१२३०.३५	३४	
१२	भक्तिप्राप्त्यर्थक्यं भुक्तराज्या व	राधाभूषण कविचंद्र		५	ग्रन्थ ।
१२३	मुद्रांशुविद्यामणिनामा	मुद्रांशु कविचंद्र		१३	ग्रन्थसंग्रह अष्टावक्रादित्य ग्रन्थसं १२३३ ये । ग्रन्थ ।
१२४	अष्टावक्राष्टोत्र (विश्व) अष्टावक्र	अष्टावक्र	२ वी व	४	अष्टावक्रादित्य ।
१२५	अष्टावक्राष्टोत्र (विश्व) अष्टावक्र	अष्टावक्राष्टोत्र	१२३०.३५	२	मि.क-उपनिषदाय अष्टावक्राष्टोत्र ।
१२६	अष्टावक्राष्टोत्र	अष्टावक्र	१२३०.३५	२	
१२७	अष्टावक्राष्टोत्र	अष्टावक्राष्टोत्र	१२३०.३५	२	मि.क-गोहूतसं विधि भुक्तराज्यादित्य
१२८	अष्टावक्राष्टोत्र	अष्टावक्राष्टोत्र	१२३०.३५	२	अष्टावक्राष्टोत्र-आष्टावक्र ।
१२९	अष्टावक्राष्टोत्र	अष्टावक्राष्टोत्र	१२३०.३५	२	
१३०	अष्टावक्राष्टोत्र	अष्टावक्राष्टोत्र	१२३०.३५	२	
१३१	अष्टावक्राष्टोत्र	अष्टावक्राष्टोत्र	१२३०.३५	२	
१३२	अष्टावक्राष्टोत्र	अष्टावक्राष्टोत्र	१२३०.३५	२	
१३३	अष्टावक्राष्टोत्र	अष्टावक्राष्टोत्र	१२३०.३५	२	
१३४	अष्टावक्राष्टोत्र	अष्टावक्राष्टोत्र	१२३०.३५	२	
१३५	अष्टावक्राष्टोत्र	अष्टावक्राष्टोत्र	१२३०.३५	२	
१३६	अष्टावक्राष्टोत्र	अष्टावक्राष्टोत्र	१२३०.३५	२	
१३७	अष्टावक्राष्टोत्र	अष्टावक्राष्टोत्र	१२३०.३५	२	
१३८	अष्टावक्राष्टोत्र	अष्टावक्राष्टोत्र	१२३०.३५	२	
१३९	अष्टावक्राष्टोत्र	अष्टावक्राष्टोत्र	१२३०.३५	२	
१४०	अष्टावक्राष्टोत्र	अष्टावक्राष्टोत्र	१२३०.३५	२	
१४१	अष्टावक्राष्टोत्र	अष्टावक्राष्टोत्र	१२३०.३५	२	
१४२	अष्टावक्राष्टोत्र	अष्टावक्राष्टोत्र	१२३०.३५	२	
१४३	अष्टावक्राष्टोत्र	अष्टावक्राष्टोत्र	१२३०.३५	२	
१४४	अष्टावक्राष्टोत्र	अष्टावक्राष्टोत्र	१२३०.३५	२	
१४५	अष्टावक्राष्टोत्र	अष्टावक्राष्टोत्र	१२३०.३५	२	
१४६	अष्टावक्राष्टोत्र	अष्टावक्राष्टोत्र	१२३०.३५	२	
१४७	अष्टावक्राष्टोत्र	अष्टावक्राष्टोत्र	१२३०.३५	२	
१४८	अष्टावक्राष्टोत्र	अष्टावक्राष्टोत्र	१२३०.३५	२	
१४९	अष्टावक्राष्टोत्र	अष्टावक्राष्टोत्र	१२३०.३५	२	
१५०	अष्टावक्राष्टोत्र	अष्टावक्राष्टोत्र	१२३०.३५	२	

क्रमांक	प्रत्यभाषा	कर्ता	निविद्यमय	पत्रपंक्त्या	निवेदन विवरण आदि
१४८	कर्मकार्यके प्रकीर्ण पत्र	पद्मराज	१९३३	२	अपूर्व ।
१४९	पद्यबोधनामा	मुकुण्ड	१९३२	२	अपूर्व ।
१५०	विदुषी		१९३३	१	रामानुजाचार्यसम्बन्धी प्रकीर्ण पत्र ।
१५१	आचार्यपरम्परा	हरिरामदास निरंजनी	"	७	रखवा-१७३३ शीतवाचा ये ।
१५२	अन्वयलक्षणी	श्रीरक्षादिप्या			
१५३	प्रमाणाल छटीक	भास्वदास विद्यादास	१९३२	१९२	मि.क.-अन्तरास साहस्य कोलोमपर ।
१५४	वेदमन्त्रा		१९३३	२३	मि.क.-साधु राममयास ।
१५५	ईश्वरचरोरव (विष्णु)	ईश्वरदास	१९३८	४	रखवासा १९३६ सप्तमसे पत्र ।
१५६	प्रबोधमुवाकर	अङ्कुराचार्य	१९३६	१३	मि.क.-अन्वयवेदल कोसी, भुम्भू ।
१५७	पद्य हरिदास वैराग्यपुत्र	मयदासदास निरंजनी	१९३३	३१	
१५८	राजगुप्तिसिद्धिमाको मातप्रमास			१	
१५९	अद्वैतपुत्र		२ श्री क	३	
१६०	अन्वयलक्षणी	हरिरामदास निरंजनी	१९३३	११	
१६१	प्रासनाधिकारपत्र	श्रीरक्षादिप्या	१९३३	७	
१६२	पद्यकृतमाया छटीक	भास्वक	१८९२	१८	आपूर्व । मि.क.-रामसुख भोडकीमये ।
१६३	अन्वयविष्णु		१९३३	२	अपूर्व ।
१६४	रसमन्त्रोद्गीत छटीक	रामजीदास	१८९३	२६	"
१६५	पद्यकृतलक्षणे-	आपूर्व	१९३७	१२	मि.क.-नारायण ।
१६६	पद्यविष्णुपुत्र	श्रीरक्षादिप्या	१९३३	११२	अपूर्व ।

[illegible]

क्रमांक	वर्णनाम	कर्ता	मितिप्रमाण	पत्रसंख्या	विशेष विवरण यादि
१८३	नदीवस मासिक (मूल)	सारीश्रीपत्रक	१८२६	२१	प्रकाशनाप्रारम्भ । वि. क. - यमात्राव कोटी ।
१८६	" "	"	१८२८	२३	विद्यार्थक मासिक प्रकाशनाप्रारम्भ ।
१८७	"	वसुधावसनाथ	१८२८	११	प्रकाशनाप्रारम्भ ।
१८८	"	"	२ बी. ए.	१२	"
१८९	"	नारायणराजकर्म	१८२९	१	" लि. अ. - विद्यार्थक मासिकप्रारम्भ ।
१९०	"	वसु	१८२९	२	प्रकाशनाप्रारम्भ ।
१९१	"	महिमोपपुरावसनाथ	२ बी. ए.	१३	"
१९२	"	सारीश्रीपत्रक	"	२४	प्रकाशनाप्रारम्भ । प्रेषण के समय ।
१९३	"	नारायणराजकर्म	"	३	"
१९४	कोटिकवसु	पञ्चकविक प्रकाशना	"	१	"
१९५	कोटिकवसु-वसु	महिमोपपुरावसनाथ	१८३२	२५	प्रकाशनाप्रारम्भ । प्रेषण के समय ।
१९६	कोटिकवसु-वसु	महिमोपपुरावसनाथ	१८३२	२६	प्रकाशनाप्रारम्भ । प्रेषण के समय ।
१९७	कोटिकवसु-वसु	महिमोपपुरावसनाथ	१८३२	२७	प्रकाशनाप्रारम्भ । प्रेषण के समय ।
१९८	कोटिकवसु-वसु	महिमोपपुरावसनाथ	१८३२	२८	प्रकाशनाप्रारम्भ । प्रेषण के समय ।
१९९	कोटिकवसु-वसु	महिमोपपुरावसनाथ	१८३२	२९	प्रकाशनाप्रारम्भ । प्रेषण के समय ।
२००	कोटिकवसु-वसु	महिमोपपुरावसनाथ	१८३२	३०	प्रकाशनाप्रारम्भ । प्रेषण के समय ।

क्रमांक	वचनाम्	कृती	निरूपणम्	पत्रसंख्या	विषय विवरणम्
७१	बाबनीमण्ड (१) गुणरत्नाको (२) प्रबोधदायनी	गु-रत्नाल जिन्नरपुष्टि	२ बो घ १६६	२	प्रपुण्ड्रिणु सुसम्पादित प्रति (स) रचना-१७३१ । नि क -बीरमरामग्रन्थ बापपुर
७२	धोवदावली	भीषम	२ बो घ १६७	२८ वेज ६	१६७ पत्र । इसमें हीम पत्र तो विद्यारोसतसई के हैं । (स)
७३	समानकी गुप्तक (महाईजयान्तरि प्रमाणपरक कवितापद)		२ बो घ १६८	७	नि क -सालपरामर्शिय पीपलदासपत्रे । कोषपीनं प्रति ।
७४	अन्नमण्ड		२ बो घ १६९	१८४+६	
७५	अवधु आनन्दवाकोदास		२ बो घ १७०	१६८ वेज ६४	बेष्टमोमें मुद्रित ३४ वेज प्रपत्र । इस मुद्रकेमें कवित्त आत भोवधि हिताब प्रति समो सिद्धित है । अवरदासकी कविपदा प्रपिक है । (स)
७६	द्वितीय प्राचीन पद्याकविताक चरोंका मण्ड		२ बो घ १७१	४	प्रपुण्ड्रिणु सुसम्पादित प्रति (स) रचना-१७३१ । नि क -बीरमरामग्रन्थ बापपुर
७७	मिष्टान्नचरितो (द्विपत्र)		२ बो घ १७२	१६८ वेज ६४	बेष्टमोमें मुद्रित ३४ वेज प्रपत्र । इस मुद्रकेमें कवित्त आत भोवधि हिताब प्रति समो सिद्धित है । अवरदासकी कविपदा प्रपिक है । (स)
७८	बाबनीमण्ड		२ बो घ १७३	१८४+६	
७९	विद्यारोसतसईक मनुष्यक मटीक		२ बो घ १७४	४	प्रपुण्ड्रिणु सुसम्पादित प्रति (स) रचना-१७३१ । नि क -बीरमरामग्रन्थ बापपुर
८०	(१) दानिद्वीप (२) निपटुनार		२ बो घ १७५	१६८ वेज ६४	बेष्टमोमें मुद्रित ३४ वेज प्रपत्र । इस मुद्रकेमें कवित्त आत भोवधि हिताब प्रति समो सिद्धित है । अवरदासकी कविपदा प्रपिक है । (स)
८१	प्राचीनकवितामण्ड		२ बो घ १७६	४	प्रपुण्ड्रिणु सुसम्पादित प्रति (स) रचना-१७३१ । नि क -बीरमरामग्रन्थ बापपुर
८२	(१) दुर्लभ (२) रामोदकदायनी निबन्ध विमल (३) अमृतमण्डो मीरोमरी बाल	ईश्वरदास	२ बो घ १७७	१६८ वेज ६४	बेष्टमोमें मुद्रित ३४ वेज प्रपत्र । इस मुद्रकेमें कवित्त आत भोवधि हिताब प्रति समो सिद्धित है । अवरदासकी कविपदा प्रपिक है । (स)

क्रमांक	विवरण	कर्ता	सिद्धिदिनांक	पत्रांक	विशेष विवरण यदि
(४११)	(४) बीपी प्रकाशस ३ सालवेवारी- री बाल		१८१३	८१-८२	मोठमठकालम्ये लिखित ।
	(५) अंकिरी यदि भाविकापनि मल्ल तथा रण्ड कवितारि		"	८२-८३	
	(६) पवार कुपरा राजपरी बसावती			८४-१	
	(७) बालमिलक (बाबुल)	मुकेश	१८ ६	१ १-१ २	मि स्वा-बापसास ।
	(८) हुंरिकावना ~		"	१ ३की	
	(९) हरिकवितानामानि			१ ३-४	
	(१०) बकुमल			१ ४की	
	(११) पदरतकमलका भेव	गोरखनाथ	"	१ ५की	
	(१२) बगुपल्लवोपिनीमिस्तोत्र			१ ५-१ ६	
	(१३) दयावारा			१ ६-७	
	(१४) बीरभास्त्रोत्र (राजस्वानी)		"	१ ७-८	
	(१५) विद्यावस्तोत्रम्		"	१ ८-१९	राजस्वानी भावा ।
	(१६) एकादशकमलपद			१ २०-१२१	
	(१७) भिखारी ठाकुर पोपरावतीरी	आर्याया मोहन	"	१ २२-१२३	
	(१८) यातावीरी पुन		"	१ २४-१२५	
	(१९) बन्ध बाबुकोरी		"	१ २६-१२७	
	(२०) पोपनटावला		"	१ २८-१२९	
	(२१) हितोपदेश पंचास्यामत्या	विष्णुधर्म	१८ ८	३-१९६	मि क-गोरख । बाबलासिम्ये ।
	(२२) बगु नमिता	महाराष्ट्रमण्डल	१८ ६	१९७-१९८	

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	विषयसमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण आदि
७२२	सोत्रादिपुस्तिका (संस्कारोपदेशः)	ब्रह्मकुमारस्योक्त	१ बी.अ	१	
७२३	हनुमत्कवच	ब्रह्मकुमारस्योक्त	१६ बी.अ	११	
७२४	वीरराजराजसामानि	ब्रह्मकुमारस्योक्त	१६ बी.अ	२	
७२५	आनन्दसागरकण्ठीती	कवचविनिर्वाह (पुर्वादि कवचालोक)		४ पृष्ठ	सर्वा प्रस्तावविशुद्धासि निर्मित । कृष्टिके कर्ता मन्त्र-पुत्रा (बन्धुपुर) के मोरचामिर्वाहके प्रयोग हुये हैं (सं)
७२६	(१) " "	"		१-१	
७२७	(२) रुद्र कवित	"		११ बी	
७२८	(३) राजनीति (कृष्णचरित)	कृष्णराज		११-१२	
७२९	(४) कवित	वराहकर		१६-१६	मध्य कृष्टित ।
७३०	माखवात ब्रह्मसूक्त माखवातपुत्रार			१ - १२४	मन्त्र । इसके उपलक्ष्य वयोसि योरोमावकृत नावली धारि हैं ।
७३१	पुत्रावलीकथासंघ	पु. वेरव्यास	१६ बी. अ	१६-१६२	राजवाल्मीकि । मन्त्र ।
७३२	अपवर्णना मुक्तीविनीतीकातादित	दी यीवरसामी		२७	
७३	(१) हवीरसो	व्योमकि	१२२३	१-७४	सि.क - राजवन्ध साहीबका ।
	(२) कालो (अष्टावधवकी)	कृष्णराज	१२२४	७५-७७	" "
	(३) इतिहासभाषाकृति (इतिहाससार समुच्चय)	नालवात	१२२४	१-१४२	" पञ्चम
	(४) भाषाविशुद्धराजभाषा (मन्त्र)	नरनाथ		१-६४	व्योम
७३३	(१) अन्वदीपक (विश्वविद्यालय)	दीवाराज	"	१-१८	
	(२) बारकरी (अन्वदीपकी)	नालवात		१६-१७	सि.क - यकीनी केडोराम बसप्राप्त ।
७३४	(१) अन्वदीपक	आनन्दस्योक्त	१२७६	११-२१	

राज्यपाल आचार्यविद्यालय — विद्याभूषण-ग्रन्थ-अंश-पहले-पृष्ठ-संख्या

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कृपा	निविष्टमय	पत्रसंख्या	विशेष विवरण धारि
७१३	(२) भारतावतार (३) पञ्चमूलोद्धारक (४) श्रीनरेश्वरसाम्राज्य (१) भाष्यकालकल्पना कीर्ति (२) आरक्षी (पुरातन कथा) (३) पञ्चरात्र लोचनोद्धार (४) कथा पुरातन इतिहासकारसमूह (पत्र)	भाष्यकालकल्पना कल्पितलोक	१८ ५ १८ ६ १८ ७ १८ ८ १८ ९ १८ १० १८ ११ १८ १२ १८ १३	१२-१७ १-१ १-१ २-१११ १११-१४ ११५-१२८ १२८-१३१ १२१ पत्र	सि क - मोदारास । प्रकाश पत्र प्रकाश । प्रकाश । प्रकाश । प्रकाश । प्रकाश । प्रकाश । प्रकाश । प्रकाश ।
७१४	इतिहासकारसमूह (पत्र)	भाष्यकाल	१८ १३	१२१ पत्र	सि क - भयकास नामी भौमविवासी गोपीचंद प्रकाश पत्र विवासी । सि क - भयपुर । प्रकाश पत्र श्री हरिनारायणकी पुरोहितको नरेण- विवासी मदनमोहनमामने निष्ठा था । (सं) प्रकाश पत्र श्री पुराण पत्रविवासी (सं) प्रकाश पत्र श्री पुराण पत्रविवासी (सं) प्रकाश पत्र श्री पुराण पत्रविवासी (सं)
७१५	इतिहासकारसमूह (पत्र)	भाष्यकाल	१८ १३	१२१ पत्र	सि क - भयकास नामी भौमविवासी गोपीचंद प्रकाश पत्र विवासी । सि क - भयपुर । प्रकाश पत्र श्री हरिनारायणकी पुरोहितको नरेण- विवासी मदनमोहनमामने निष्ठा था । (सं) प्रकाश पत्र श्री पुराण पत्रविवासी (सं) प्रकाश पत्र श्री पुराण पत्रविवासी (सं) प्रकाश पत्र श्री पुराण पत्रविवासी (सं)
७१६	इतिहासकारसमूह (पत्र)	भाष्यकाल	१८ १३	१२१ पत्र	सि क - भयकास नामी भौमविवासी गोपीचंद प्रकाश पत्र विवासी । सि क - भयपुर । प्रकाश पत्र श्री हरिनारायणकी पुरोहितको नरेण- विवासी मदनमोहनमामने निष्ठा था । (सं) प्रकाश पत्र श्री पुराण पत्रविवासी (सं) प्रकाश पत्र श्री पुराण पत्रविवासी (सं) प्रकाश पत्र श्री पुराण पत्रविवासी (सं)
७१७	इतिहासकारसमूह (पत्र)	भाष्यकाल	१८ १३	१२१ पत्र	सि क - भयकास नामी भौमविवासी गोपीचंद प्रकाश पत्र विवासी । सि क - भयपुर । प्रकाश पत्र श्री हरिनारायणकी पुरोहितको नरेण- विवासी मदनमोहनमामने निष्ठा था । (सं) प्रकाश पत्र श्री पुराण पत्रविवासी (सं) प्रकाश पत्र श्री पुराण पत्रविवासी (सं) प्रकाश पत्र श्री पुराण पत्रविवासी (सं)
७१८	इतिहासकारसमूह (पत्र)	भाष्यकाल	१८ १३	१२१ पत्र	सि क - भयकास नामी भौमविवासी गोपीचंद प्रकाश पत्र विवासी । सि क - भयपुर । प्रकाश पत्र श्री हरिनारायणकी पुरोहितको नरेण- विवासी मदनमोहनमामने निष्ठा था । (सं) प्रकाश पत्र श्री पुराण पत्रविवासी (सं) प्रकाश पत्र श्री पुराण पत्रविवासी (सं) प्रकाश पत्र श्री पुराण पत्रविवासी (सं)
७१९	इतिहासकारसमूह (पत्र)	भाष्यकाल	१८ १३	१२१ पत्र	सि क - भयकास नामी भौमविवासी गोपीचंद प्रकाश पत्र विवासी । सि क - भयपुर । प्रकाश पत्र श्री हरिनारायणकी पुरोहितको नरेण- विवासी मदनमोहनमामने निष्ठा था । (सं) प्रकाश पत्र श्री पुराण पत्रविवासी (सं) प्रकाश पत्र श्री पुराण पत्रविवासी (सं) प्रकाश पत्र श्री पुराण पत्रविवासी (सं)

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	मिपितमय	पृष्ठसंख्या	निकुण विवरण प्राप्ति
७४	शुद्धीपत्र भेदिसिद्धका		२ बी.प्र		यम पुराणकी का जिनके भेदिसिद्धका कागजि मरे बाकर का बाज समझी कर्मन्त्र सेवे बये । केवल रजिस्टर भाष है । इसमें एक लक्षका यावत भरा हुआ है और लक्ष्मण भक्तार्थिक २ पृष्ठ हैं । (सं)
७४१	कवरीनिरिद्धकभाषा		"	२-११	कवरीकी सुकीका १ पृष्ठ है । ऐसा प्रतीत होता है कि सम्प्रदायार्थ इत प्रतिका सेकन मुक्त हुआ था । (सं)
७४२	मीतामप्राप्त्य	मिथुनबर्नोत्तरकत	१८१७	२	मि क -अष्टमक मुक्तोत्तमभाष पाठावधुपत्ये ।
७४३	मजद्वीया	देवज्यात	१८१८	१५	" रामकाय प्रसन्नकर ।
७४४	मस्तमोद्यानमस्तकम्यजतीपुराणका	मस्तमोद्यानपुराणपत	१८२२	२७	हीरालभ भयर कर्म्याकरीमत्ये ।
७४५	कालक्यातारसंयु	कवि कालिका	१८२३	२	मि क -अष्टमक विद्याकी सुदिलक्षणीमत्ये ।
७४६	काकस्यनीतिसार		१८३२	११-२६	पत्र १३ से १६ तक धामत्य । मि क -अष्टमो राम मिथ धामानेरीधाम ।
७४७	श्रीरामस्यद्विन्द.स्तोत्र	मिथुनरत्नाचार्य	१८७४	३	मि क -अष्टोत्तराव कर्मन्त्र मुक्तुपत्ये ।
७४८	संयोजकके स्तुत पत्र		१८८०	३	स्तुत पत्र ।
७४९	मुभाकितसपथ			११	स्तुत पत्र मुभाकित साधकके दो किन्तु पत्र बाने
७५	द्विपरीके बोधे			७	के एक उत्तर-पुत्र लभ बानेसे पाठ की प्रसंगत हो गया है । (सं)
७५१	मुक्तोत्तमभाषा	स्तुतपुराणपत		६-११	पत्र । इससे सासे की इतिहास स्व पुरोहितकी के सुकीपमने मिथित भयी है । ये स्तुत बालों से पाई गई है । (सं)

क्रमांक	विवरण	कला	निर्माणस्थ	पत्रांक	विशेष विवरण आदि
७७१	प्राज्ञादेवकी	धीरात्मकोक्त	१२वीं छ	१२-२८	छन्दस्य भूषित ।
७७२	महामोक्षी		१		वर्णित ।
७७३	महामोक्षवर्णनविधि	दुर्योधनवासी	"		मि. क - दशमस्कन्धस्य दशमस्कन्धस्य ।
७७४	महामोक्षवर्णनविधि	महामोक्षवर्णन	१२वीं छ	१२-२८	मि. क - दशमस्कन्धस्य दशमस्कन्धस्य ।
७७५	महामोक्ष		१२वीं छ	१२-२८	मि. क - दशमस्कन्धस्य दशमस्कन्धस्य ।
७७६	(१) महामोक्षवर्णन		१२वीं छ	१२-२८	मि. क - दशमस्कन्धस्य दशमस्कन्धस्य ।
७७७	(२) महामोक्षवर्णन		१२वीं छ	१२-२८	मि. क - दशमस्कन्धस्य दशमस्कन्धस्य ।
७७८	(३) महामोक्षवर्णन		१२वीं छ	१२-२८	मि. क - दशमस्कन्धस्य दशमस्कन्धस्य ।
७७९	महामोक्षवर्णन		१२वीं छ	१२-२८	मि. क - दशमस्कन्धस्य दशमस्कन्धस्य ।
७८०	(१) महामोक्षवर्णन		१२वीं छ	१२-२८	मि. क - दशमस्कन्धस्य दशमस्कन्धस्य ।
७८१	(२) महामोक्षवर्णन		१२वीं छ	१२-२८	मि. क - दशमस्कन्धस्य दशमस्कन्धस्य ।
७८२	(३) महामोक्षवर्णन		१२वीं छ	१२-२८	मि. क - दशमस्कन्धस्य दशमस्कन्धस्य ।
७८३	महामोक्षवर्णन		१२वीं छ	१२-२८	मि. क - दशमस्कन्धस्य दशमस्कन्धस्य ।
७८४	महामोक्षवर्णन		१२वीं छ	१२-२८	मि. क - दशमस्कन्धस्य दशमस्कन्धस्य ।
७८५	महामोक्षवर्णन		१२वीं छ	१२-२८	मि. क - दशमस्कन्धस्य दशमस्कन्धस्य ।
७८६	महामोक्षवर्णन		१२वीं छ	१२-२८	मि. क - दशमस्कन्धस्य दशमस्कन्धस्य ।
७८७	महामोक्षवर्णन		१२वीं छ	१२-२८	मि. क - दशमस्कन्धस्य दशमस्कन्धस्य ।
७८८	महामोक्षवर्णन		१२वीं छ	१२-२८	मि. क - दशमस्कन्धस्य दशमस्कन्धस्य ।
७८९	महामोक्षवर्णन		१२वीं छ	१२-२८	मि. क - दशमस्कन्धस्य दशमस्कन्धस्य ।
७९०	महामोक्षवर्णन		१२वीं छ	१२-२८	मि. क - दशमस्कन्धस्य दशमस्कन्धस्य ।

क्रमांक	राधनाम	कला	निराकरण	पत्रसंख्या	निराकरण
७९	प्याल	आचार्य	२ बी.ए.	२	
७८७	सुबहकरावली काटि	कवयित्री ? मन्नाभावन		२	
७८८	महाराजका इतिहास			२	
७८९	कानिहाल टिप्पणी			२	
७९०	ऐतिहासिक सामग्रीक इतिहास			२१	
७९१	उर्दूको मुद्रित ग्रन्थ			२१	
७९२	ऐतिहासिक सामग्रीक इतिहास	योगसमाचार्य	२२२२	२१	
		(मनिमुपार)		(१-२)	
	(१) बर्तमानसमाचार	योगसमाचार्य	२२	२२-७	
	(२) बर्तमानसमाचार	योगसमाचार्य		२२-७	
	(३) लालसोदी			२२-७	
	(४) भाषाशास्त्रसमाचार	योगसमाचार्य		२२-७	
	(५) भाषाशास्त्रसमाचार	योगसमाचार्य		२२-७	
	(६) भाषाशास्त्र			२२-७	
	(७) भाषाशास्त्रसमाचार			२२-७	
	(८) भाषाशास्त्रसमाचार			२२-७	
	(९) भाषाशास्त्रसमाचार			२२-७	
	(१०) भाषाशास्त्रसमाचार			२२-७	
	(११) भाषाशास्त्रसमाचार			२२-७	
	(१२) भाषाशास्त्रसमाचार			२२-७	
	(१३) भाषाशास्त्रसमाचार			२२-७	
	(१४) भाषाशास्त्रसमाचार			२२-७	
	(१५) भाषाशास्त्रसमाचार			२२-७	

इतिवृत्तसिन्धु मद्रोल १२१२से इतिवृत्तसिन्धु मद्रोल ।

लिंक-मोरीनाथ व्यास ।

क्रमांक	ग्रन्थनाम	करी	निर्दिष्टपत्र	पत्रार्थपत्र	विशेष विवरण यादि
८४	शेराभाष्यकाव्य		१६बी.पत्र	१२	अष्टम । सुदृष्टपत्र ।
८५	मलिनसार (भाष्यभाष्य)		"	५	
८६	कौटिल्य (भाष्यभाष्य)		"	८	
८७	वसन्तभाष्यभाष्यभाष्य (राजवाज्यभाष्य- निबन्ध)	पारिचर (बीजकृपति)	१६बी.पत्र	७	अष्टम । सुदृष्टपत्र
८८	दीप्तिरीतिनिबन्ध (?)	कृष्ण भट्ट रघुनाथपुर	१६बी.पत्र	४	अष्टम । सुदृष्टपत्र ।
८९	मलिनसारकाव्य	कृष्ण, वाराणसीभूष	१६बी.पत्र	२९	
९०	दीप्तिरीतिभाष्यभाष्यभाष्य (१)		"	१७	
९१	शेराभाष्यकाव्य	मद्रासभूषण भट्ट	१६बी.पत्र	४	अष्टम । बीजकृपति ।
९२	राजवाज्यभाष्यभाष्यभाष्य		१६बी.पत्र	३-४	अष्टम । बीजकृपति ।
९३	शेराभाष्यभाष्यभाष्यभाष्य (१)		१६बी.पत्र	७-१३	अष्टम । बीजकृपति ।
९४	मलिनसारकाव्य (बीज)		१६बी.पत्र	७	
९५	भाष्यभाष्यभाष्यभाष्यभाष्य	मद्रासभूषण भट्ट	"	१४	
९६	राजवाज्यभाष्यभाष्यभाष्यभाष्य (१)	मद्रासभूषण भट्ट	१६बी.पत्र	३	
९७	शेराभाष्यभाष्यभाष्यभाष्य	मद्रासभूषण भट्ट	१६बी.पत्र	३	
९८	दीप्तिरीतिभाष्यभाष्यभाष्य	मद्रासभूषण भट्ट	१६बी.पत्र	३	
९९	मलिनसारकाव्यभाष्यभाष्य	मद्रासभूषण भट्ट	१६बी.पत्र	३	
१००	शेराभाष्यभाष्यभाष्यभाष्य	मद्रासभूषण भट्ट	१६बी.पत्र	३	
१०१	मलिनसारकाव्यभाष्यभाष्य	मद्रासभूषण भट्ट	१६बी.पत्र	३	
१०२	शेराभाष्यभाष्यभाष्यभाष्य	मद्रासभूषण भट्ट	१६बी.पत्र	३	
१०३	मलिनसारकाव्यभाष्यभाष्य	मद्रासभूषण भट्ट	१६बी.पत्र	३	
१०४	शेराभाष्यभाष्यभाष्यभाष्य	मद्रासभूषण भट्ट	१६बी.पत्र	३	
१०५	मलिनसारकाव्यभाष्यभाष्य	मद्रासभूषण भट्ट	१६बी.पत्र	३	
१०६	शेराभाष्यभाष्यभाष्यभाष्य	मद्रासभूषण भट्ट	१६बी.पत्र	३	
१०७	मलिनसारकाव्यभाष्यभाष्य	मद्रासभूषण भट्ट	१६बी.पत्र	३	
१०८	शेराभाष्यभाष्यभाष्यभाष्य	मद्रासभूषण भट्ट	१६बी.पत्र	३	
१०९	मलिनसारकाव्यभाष्यभाष्य	मद्रासभूषण भट्ट	१६बी.पत्र	३	
११०	शेराभाष्यभाष्यभाष्यभाष्य	मद्रासभूषण भट्ट	१६बी.पत्र	३	

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	निर्गमसमय	पत्रसंख्या	निर्गम विवरण आदि
८११	कौमिलसूत्रम्	कुम्भारवाचाम बोधिसत्ता सक्यपतिरिक्तम्	१८२३	२६	काराज्यही संस्कृत भाषासमये मुद्रित ।
८१२	अपघातशतक (महासकलम्)	मयाराजा समुदायिद्वारेण (रीता नरेण)	१८३८ १८२	२८ पृष्ठ	रचना-सं १८१४ । भारतवाता प्रेष रीताये मुद्रित ।
८१३	बाल-कान्तिराव (मुद्रासिद्ध संस्कृत)	प कल्याणराज पण्डित	सन् १८२२	१७ "	इन्विज्यन प्रेष निर्मितीय प्रयाग (बनारसवाङ्मय) से मुद्रित ।
८१४	मयारीरचयितम् (मदकम्)	मयारकीर बबभुति	१८२६	२१४ + अनेक	निर्गमसागर प्रेष बबभुतिसे मुद्रित ।
८१५	(१) बसपुरिकिता (काम्य) (२) मुक्तकमुद्रावली	दीप बरिमुक्तारसकदि "	" १८८७ "	५८ पृष्ठ ६८ "	
८१६	(३) तारकतन्त्र (कठपुष्पाभाष्यानाम्)	परदासबारेण	१८१६ १८८ १८वी.क्र. १८२१	४ ३ ७ २	दीरानो विरतलाल हुन्दरुदेवकलाम । सत्यसमुक्तमसकदि बीरदेव सानो प्रकाश । १ इत स्तोत्रकी वात प्रकार की व्याख्या की गई है । नि.क -कोही परमदुष्ट भरोमरोबानपरे ।

अमृतवारा ५
 अमृतपद्ममुक्ताब्जनी ६२
 अर्जुन भीता १३५
 अर्जुनबाजी (अर्जुनदास) ६३
 अर्जुनस्य ३६ मातामि १४
 अन्नपञ्चक विवेक १४३
 अर्चनदुग्धमनुमतिपति १४१
 अरिस्त (संवादास) १४
 अन्नबहास्तोत्र तटीक १२५
 अन्नहृषीपात्रम् (नामक) ७
 अक्षितालीला (रक्तक) ३८
 अष्टाध्याय (देवकवि) ३३
 अष्टवल कमलका शेष १३२
 अष्टपदी (कबीर) २७, ३ ३५, ४१
 अष्टपदी (अष्टदेव कवि) ४१
 अष्टपदी बड़ी (कबीर) ३५
 अष्टपदी बंदाड़ी रत्नबी (कबीर) ३५
 अष्टपदीका (बीरक) १
 अष्टस्तोत्री अष्टाध्याय १२६
 अष्टाङ्गपीठ ३२ लक्षण ६१
 अष्टावकनीतालीका १४३
 अष्टावकनी कविता (कवि बीरक) ५६
 अष्टावकनीकवार्त्त १४
 अष्टमस्तोत्रका म्हात्म्य १२३
 अष्टोत्तम समुद्रका करमा आदि १२३
 अष्टोत्थिनी प्रमाण कविता ३

आ

आक्षर उद्धार बावनी (रक्तक) ३१
 आष मीतको जोड़ी (परछारम्) १६
 आचार्यपरम्परा १४५
 आठ भाग आर्त्त शेष १
 आत्मबोध (बीरक) २१ ४४
 " (देवानीकम्) ५३
 आत्मबोधग्रन्थ (बीरक) ७४
 आत्मबोधविवरण १६
 (आरक्ष महावाक्यविवरणम्)

आत्मबुद्धीकी भावार्थिका १३
 आत्मविचार ग्रन्थ १४५
 आत्मा अक्षय अक्षय (सुन्दरदास) ६३
 आद्या महात्मनीहृदयस्तोत्र १२६
 आश्विनहृदयस्तोत्र १२३ १३१ १३३
 आश्विनहृदय हनुमन्स्तोत्र १३३
 आश्विनद्वार ब्रह्मसैरवस्तोत्र १२३
 आमेरके म्हााराया सवाई
 अश्विहृदय ग्रन्थ और वेदशास्त्रार्थ १२३
 आत्मीय (सुन्दरदास) ६६
 आरती भक्तवारी १३३
 आरतीसङ्ग्रह ७७ ११ १४५
 आर्यवर्ण्य (पु. हरिनाथप्रसाद) १२५
 आर्यवर्ण्यको पत्र ४३
 आर्युरीप्रयोग १२७
 आर्यवर्ण्य १३५

इ

इक्षार बोध (बलदास) १७
 इतिहास अष्टपुर १२४
 इतिहास भावार्थिका १२४
 (इतिहाससारसमुच्चय) ७
 इतिहाससारणी १४२
 इतिहाससारसमुच्चय (पत्र) १२३
 इन्द्रजालविधि १४१
 इन्द्रजीतिष्ठ रावलीपी
 गुण प्रमाण (सबलतिष्ठ तां) १५७
 इन्द्रजीतिष्ठ १२६ १३१
 इन्द्रियदेवताविषयग्रन्थ (बीरक) २

ई

ईश्वरविनायकान्न (बीरकप्रसाद) १ ६
 ईश्वरस्वरूप (शिव) १४५
 ईश्वरीतिष्ठ, महाराजा सवाई १५४
 ईश्वरदासका पत्र ४३
 ईश्वरदासजी बाबूका जीवचरित्र ११४

सु

उत्पत्तिनिबन्ध (रत्नज) ३८
 उपदेश विद्या लामलक्षण (महम्मद) १२
 उपमार्तपत्र (हीराबंद कामरौ) १ ७
 उपमाभाषाप्रणय (मोरच) २२
 उर्दू की मुद्रित प्रति १३६
 उत्तमकी कथा ११

ऊ

ऊमाचरित १२
 ऊमाहरण (रामदास) १७

शु

शुम्बेदीयानुवाकानुक्रमणी (कतयमम) ११२

ए

आखरी नाममाता (रतनु बीरमान) २१
 एकलौकी भावकत ३३
 एकावलीकपासपत्र १३२, १३४
 एकामरनिघण्टकोष (बरहचि) ११२
 एकीद्विध धातुप्रयोग १३७
 एन एथरुह प्रकाशक धातु की लक्ष्य और
 हिंदी धैर्गुणिक्युक्त की ईयर इन
 ११ ११ १ एन ११ २ १३२

ऐ

ऐतिहासिक वन १२१ १२३
 ऐतिहासिक लामपोक लुट वन १२६
 ऐन धातु लामपोक प्रत्यय १ ६

ओ

ओगारके वन (बरतराम) १६
 ओचप (लुट) ११

क

ककलकीनी १ २
 ककलकीनी (रबीपोषण पोषण) ८७
 " (मामदास) १ ६

ककलकीनी (लमीन) ६८
 (सन्तदास) ११, १०६
 " (मुरतराम) ६८

कदवाहुकी बघामनी ११
 कदवाहुकी बघामनी अनुसंग १३४
 कदवा (बंगदास) ४६

कदवाकोष (गोरख) ४२

कदवाकी धम्मी २३

कदवाकी धम्मी ४२

कदवा की लोका पर ४६

कदवाकी धम्मी २७

कदवाकी धम्मी २७

कदवाकी धम्मी १२

कदवाकी धम्मी २७

कदवाकी धम्मी पर १ ३६, ३६

कदवाकी धम्मी पर ३६ ३०

कदवाकी धम्मी २७

कदवाकी धम्मी पर ७

कदवाकी धम्मी धम्मी २७

(धम्मी धम्मी)

कदवाकी धम्मी धम्मी १ २ ३ ३२.

३६ ६६

कदवाकी धम्मी २६ धम्मी पर धम्मी ९

कदवाकी धम्मी १२२ धम्मी पर धम्मी २

कदवाकी धम्मी २६

कदवाकी धम्मी धम्मी १ ३

कदवाकी धम्मी ७६

कदवाकी धम्मी धम्मी ६६

कदवाकी धम्मी १

कदवाकी धम्मी ६ ७६

कदवाकी धम्मी ३६

कदवाकी धम्मी धम्मी ६६

कदवाकी धम्मी १२

कदवाकी धम्मी धम्मी (धम्मी) २३

कदवाकी धम्मी (धम्मी) ३३

कदवाकी धम्मी (धम्मी) ४६

कदवाकी धम्मी धम्मी १३६

कलाम्यास १४१
 कवित ४२ १२४
 " (सेवादास) १३
 " (हरिदास) १४
 कवित रामायणसारमाला १ ५
 कवितप्रस (रत्तरामि) ५२
 कवितसंग्रह ६४ १११ ११२ ११६
 कवितार्थप्रह (सुन्दर) ११६, १२
 कविप्रिया (केदावदास) ३६, ८२
 कहुमुकरीके छन्द ५६
 काव्य काशीकी छापी ४३
 काव्यकी काशीका पत्र २३
 काव्यका पत्र ४३
 काव्यका राखलका पत्र ४
 काव्यकोष (नोरछ) ४४ ६१
 काव्यको लक्षण ४
 काव्यकोष (नोरछ) ७४
 काव्यकोषपर्यन्त (नोरछ) २१
 काव्यमन्त्ररत्नस्यार्य १४
 काव्यमन्त्रपर राजावतके पत्र १४२
 काव्यवाचनी (बांकीदास) ११५, १२१
 काव्यमार्गदर्शक (कमलदास) ७६
 काव्यार्थ (बाहु) ६१
 काव्यार्थसंग्रहनामस्तोत्र १४
 काव्यार्थसंग्रहनामस्तोत्र १४१
 काव्यविमलावली (सुन्दरदास) २६
 काव्यकार्यलोचनस्योद्भवकथ १२५
 काव्यदास हिम होम १३६
 कविका (डॉ. रामलाल) १२९
 कविप्रिया ग्रहावत ७
 कविप्रियाका पत्र ४३
 कविप्रियासी (कविराजा बांकीदास)
 ११६ १२
 कव्यप्रिया (सेवादास) १३
 " (हरिदास) १४
 कुबेरदासजीका पत्र १११
 कुमारसम्भव १४४

कुलपतिमिश्रकी वधपरम्परा ६२
 कुलशेखरचरितम् १ ७
 कुलकण्ठिका १३५
 कुलवधपत्र (कविराजा बांकीदास) ११३
 १२
 कुलवधपीठो () ११६
 कुलवधपरिचयकोटी (नरतराम) १६
 कुलवधपरिचयराखलकी (मीनिदास) ३३
 कुलवध टीरी प्राचाच में सुन कर बाणी
 (मोत) १२
 कुलवधका पत्र ४३
 कुलवधमनिकुलम् (भाववत) १ ६
 कुलवधमनिकुलीरी बेल ६२
 कुलवधसूरी १३१
 कुलवधिका (मुद्रावदास) १११
 कुलवधसुति ६
 कुलवधका पत्र ४
 कुलवधपरिचयस्योद्भवकथ १६
 कुलवधका पत्र ४१
 कुलवधका ६४
 कुलवधकोष का वर्णन व हुवाला १२३
 कुलवधवर्णनम् १३
 कुलवधमन्त्र २५ १३३
 कुलवधवर्णन १६२
 २
 कुलवध १३६
 कुलवध कवित (सुन्दरदास) ८५
 कुलवधका वर्णनके ६४ कोष १ ८
 कुलवधका वर्णनकी प्रवृत्ति १ ५
 कुलवधका वर्णन (नोरछ) २
 कुलवधका वर्णन में लालचकोटीरी का
 १३२

५

कुलवधका (नोरछ) १३
 कुलवधली () २
 कुलवधकी प्रभाव ५३

गुरुमन्त्रजोपग्रन्थ (सबाबात) १३
 गुरुमहिमा (रामचरण) १८
 गुरुमहिमा १३
 गुरुमहिमाजोपग्रन्थ (सेबाबात) १३
 गुरुमहिमाष्टक (गुन्वरदास) ८८
 गूढा एवं कवितादि ८४
 गूढासागर (भक्तोहरदास) २७
 गुरुचरणाम्बोध (गुन्वरदास) २१
 गोगरसावना १५२
 गोपा बोधाय १ ८
 गोपा घोर १ ८
 गोपालचन्द्राङ्ग १३१
 गोपालपूजाविधि १२८
 गोपालतद्गुह्यनाम १३६
 गोपालसहस्रनामस्तोत्र १२१
 गोपालसहस्रनाम कथाम्ब १३४
 गोपालसहस्रनामावलि १३७
 गोपीजीय १३२
 गोपीचन्दका जोप पद (रामचरण) १७
 गोपीचन्दका महिमापद (कालू वा गोरख) १२

गोपीचन्दकी छापी १५, ४२
 गोपीचन्दकी छापी ६१
 गोपीचन्दचरित (सेनदास) ३२
 गोपीचन्दजीका वद ४४
 गोपीचन्दजी छापी २३
 गोपीचन्द जोप ग्रन्थ (रामचरण) १७
 गोरख-नवग्रहप्रेषी (गोरख) ७४
 गोरख-नवग्रहप्रेषी २१
 गोरख-नवग्रहप्रेषी जोप ग्रन्थ १४
 गोरख-नवग्रहपद (गोरख) ४४
 गोरखनाथकी छापी ६१
 गोरखनाथजीका ग्रन्थ ४४
 गोरखनाथजीका ग्रन्थ गुरुजि, वचन
 पादि ३३
 गोरखनाथजीका वद ३१ ६६

गोरखनाथजीको कृतिपा १४
 गोरखनाथजीको लिपि ४४
 गोरखनाथजीको छापी ९
 गोरखपतका १२७
 गोरखबोध २
 गोरखचन्द्रोग्रजोप (गोरख) ४४
 (गोरख-नवग्रहप्रेषीसंसार)
 गोरखछापी ४४
 गोलीकनहिम्नः स्तोत्र ११७
 गोम्यसदातका वद ६३
 गोविन्दलीलापद (वरधराम) १२
 गोविन्दाष्टकस्तोत्र ११२
 गोविन्दराजवतका १४

ध

ध्याकचको पन्थ ४
 धर्मोपनिषा (वाजिन्) २०
 धारनवातका वद ४३
 धोडाबोलीको छापी ४६

घ

घ्यार ब्युवा राज्यारी बत्ताबली १२९
 चन्द्रेश्वरोन्मुखि १३६
 चण्डीरत्नास्तोत्र (रात्राबासी) १२२
 चतरभुजका वद ४
 चतुर्विंशतका १४
 चतुर्विंशोपनिषीक वद ११२
 चतुःश्लोकी १२६
 चतुःश्लोकी भाष्यत ४ व ८३
 चतुःश्लोकी ब्रह्मभारत ८३
 चतुःश्लोकीविनीतस्तोत्र १२३
 चन्द्रकोका वद १ ६
 चन्द्रावना (चकोर) १७
 " (सेनदास) १४
 " (इतिहास) १४
 चन्द्रनवग्रहप्रेषीका १४
 चन्द्रनवग्रहप्रेषीका १३६
 चण्डेश्वरीको छापी ३३ ४२

चपंडनापात्रु नरुंवार ६१
 चत्रका पद ४१
 चत्रनायका पद ४६
 चाचक्यनीतिभाषा (उम्मेदराम) ११
 चाचक्यनीतिशार १४८, १४९
 चाचक्यसारसप्तह ११६
 चार छन्द (तत्त्ववेत्ता) ४
 चार रिछा २
 चार वेदमें यद् धारण ३
 चारों सम्प्रदाय की रक्षापुंख ४
 चातुर्गोपनिषत्तात्त्विक १२८
 चिन्मिताकार (पंथापर) १३
 चित्तात्मिक विद्वान् (चित्तात्मिक कवि)

८

चित्तात्मिकशोभप्रग (नुरतराम) ६८
 चित्तात्मिकप्रग (रामचरण) ६८
 चित्तात्मिकशोभाप्रग १३
 " " (सेमवाल) १५
 " " (जगजीवन) १५
 चित्तात्मिकी (रामचरणदास) १७
 " " (मालवाल) १९
 " " (हरिमिय) ६४
 चित्रकाम्य (मुन्दरवाल मोहनवाल) ४८
 चित्रमुकुटकी बात १५
 चित्रामनी (नारायणदास) ११६
 चित्रामनी (पंथावनी ?) (सेम करोह)
 ११६
 चतुर्गुणचरका (कविराजा बाकीराम)
 ११५ १२
 चुपकनाचकी धोरी ४६
 चुपकरी छन्दो २३
 धनदानकाके पद ६८
 धोरपनाचकी छन्दो २
 धोरहू विद्याक धार्मिक धर्म ६
 धोपरी (कवी) १ १८
 धोपरी रस्यो (कवीर) ६८
 धोबीर कवनार (धनवाल) ४३

धोबीर पुरछोला (जननीपाल) ११ ६२
 धोबीर पुरछोली लोला ४८
 धोबीर तिल ४ ४२
 धोबीर तिलनाम ६१
 धोबीरपावकी छन्दो ४३

छ

छन्द पावुजीरो १५२
 छन्दरत्नावली (हरीरामदास निरंजनी):
 १ ४ १४८
 छन्द-कवित (सेवादास) १८
 छायापुष्पकक्षकम् १३४
 छीतमके पद ४९ १२

ज

ज्योतिष (रघु) ११
 ज्युपत्र १३८
 ज्वालागामिनी मातामय १२६
 जाखरी कायाप्रावर्तवार ४८
 जगजीवनका पद ४२
 जगजीवनको कवित ३
 जगजीवनकी की बुद्ध्यागतामी २
 जगजीवनदासजीकी कावी १५ ८७
 छात्री ६३
 जगप्रावर्तक लक्ष्या ३
 जगप्रावर्तक पण्डितराज १ ४
 जगप्रावर्तक (भावापराज) १६२
 जगप्रावर्तक (जग) लक्ष्य १४६
 जगप्रावर्तकी मोहोन्नेरी बात १३१
 जगभरतचरित्र (जननीपाल) १६ ७६
 जनी हचवतकी छन्दो २२
 ज-ज-कर्मलोला (बाकीराम) ३३
 जगप्रावर्तकी १३
 जगप्रावर्तक पद ६८
 जगरत मजघन एव त्रिदिविध १८४
 जगप्रावर्तकी छन्दो ६८
 (रामचरण)
 जगप्रावर्तकी इतिहास (मुन्नी देवोदाम)
 १३१

कम्पुरके बापीरदारामजी कहरिस्त १४२
 कम्पुरके ठिकानेशारोके विद्येबाधिकार
 पावि १२३
 कम्पुर के राजाधोंका बंधन
 कम्पुरराज्यकोसिस व बापीरदारों से
 विवेक १४२
 कम्पुर राजबंदावली ४३
 कम्पुर बिलास (काव्य) १६२
 कम्पुरसम्बन्धी क्वातरी कुतकर बातें
 (बांकीदास) १२१
 कम्पसाह मुखसम्पास (मन्थन भट्ट) २६
 कालम्हरीपाककी क्षम्यी ४२
 कालमेव १६
 कहरनिकपत्र १४५
 काव्य-वृत्तिहाससे कम्पुरके राजाधोंका हास
 २६
 कातकपट्टि १३२
 कानकीबीकी स्तुतिके पद १२५
 कानकीमंथन १४१
 कानकीमन्त्र १४
 कानकीतहुलनामस्तोत्र १३३
 कानकीबीतोकापमोहमकथ १३२
 कानरायनीला २३
 कालीचरणी की क्षम्यी २३
 कालम्हरीपाककी क्षम्यी ६१
 'जहूँ बिधि राखे राम' ४
 जिन्ह से स्तोत्र १३
 जीवदका पद ४
 जीवदका १३
 जुगनितरनिची लठमई (कलमतिविधि)
 १११
 जुगति मरुपतिद्विजमनुसम्पन्न ४६
 (पृथी मुन))
 जुगलध्यान (मुभनलक्ष्मी) १५
 जुगलसन (रकुटधन) २२
 जुगलनम ६
 बहुलजसज्जहाव (बांकीदास) १२

जेहूनकतकडावरा बुझा ११३
 जेतारामजीकी सौरमका धन्य ३
 जैनबंदास (रत्नधन) ३
 जैन श्रीमत्तामहि ओप धन्य (पृथीनाथ) ४५
 जैनलका पद ४२ ४२
 जैनमकी लाखी ४ ४३
 जोपेदवरी क्षम्यी (नोरक) ७३
 ७३
 जोवरमल पवित्र धोंक जोगडी
 ८
 जोलका पद ४२
 जोवरमल ओप धन्य (हरिदास) १४
 ४
 जिम्नल अभिधान संपद (मुरारीबाल कवि-
 (राजा २१
 जिम्नल कविता-संग्रह ११५
 जिम्नल नीत-संग्रह ११३
 जिम्नल पुरतक ११३
 जूनरदासका पद ४१
 ४
 जोला मारवनी बाल (कुसुमलाल) ५४
 ५
 तत्त्वबोध प्रकरण १४२
 तत्त्वमन्त्री (रामानुजदास) १ २
 तत्त्वमन्त्रालय संग्रह १४६
 तत्त्व संधान जोन पत्र (पृथी-मुन) ४६
 तर्क चिन्तामणि (सुम्बर) १५ २१
 तर्क संग्रह (सं) १४२
 तर्कचिन्ता (सं) १३७
 तरकचिन्तामणी ६
 तरकजी २
 तारास्तोत्र (सं) १२५
 तोन मुन २
 तुरतो लखी बहावतो २४
 तुलसीस्तोत्र १३३

संक्षिप्तोपनिषत् १३७ १६१
 सत्ताद्विबद्रीनारायण्यतीद्वद्विप्रतिष्ठयेत्
 धामधाम रामानुजदासस्य पत्रम् १३८

द

द्वीपरीको बौद्धो (परसराम) १८
 द्विजकम्पासंबाद (नाममाहृतम्) १९
 द्वन्द्वकम् १३७
 दत्तककर्मलघु १३८
 दत्तवोरकसंबाद १९
 दत्तजीकी प्रथो २३ ४६
 दत्तात्रेयके २३ बुध्दोमी सीता ३१

(अपराध)

दत्तात्रेयकम् १४
 दक्षिण्यप्यक १३५
 दक्षिण्योपसम्प्रदायकपत्रकम् १३८
 दक्षिण्योपहिम्न स्तोत्रम् १३८
 दक्षिण्योस्तोत्र १३८
 दयाकोषप्रग (मोरज) १५ ७२
 दयविद्या लवणा (मुदरदास) ७७
 दयाफल १३८
 दयावतार १३९
 दयावतार एवम् (मुल्लोदाल) ८७
 दयावतारिणि (अन) १६१
 दक्षिणी प्रथोकी भाषा २
 दादुदाबादमी ८
 दादुदाबादमीसीता (अनलोदाल) ७५
 दादुदाबादमीसाधना १६२
 दादुदाबादमीसाधना (अनलोदाल) ६ ३२
 ४६ ५८
 दादुजीबा कदवा (सादाभ नमदायो) ६५
 दादुजीबा पद १ ६ २ ३१ ३२ ७८
 दादुजीको बायो १ ७ २ ३ ३८
 ३६ ३७ ६३ ६५ ६८ ७८
 दादुजीको ४ साक्षिणी ५८ साधनाल्लिख
 दीवा (दाव वयो दम्) १

दादुजीकी सादी ६ ३१ ३२ ३८ ६३
 दादुजीके बुद्धकर धर्मोका धर्म २
 'दादु दीनदयालको अन दर्शन दियो' ४
 दादुबाबाकीकर्मपत्र (नालजल) ६५
 दादुस्तुति सधमा ४१
 दानसीता १२
 दानसीता (योह्मन्दास) १६ ३४
 दानसीता (ह्मन्दास) १३४
 दिक्तीकी पत्ताभ्याहीका म्प्रीता १८९
 दिक्तीदरबार कापका चित्र १४२
 दीतबारकी कथा ५७
 दीवमालिकाकथा १४
 दीपाका पद ४३
 दीवान रामचंदजीकी हाल १२४
 दुपदी रमणी (कबीर) ३८ ६८
 दुर्गास्तोत्र १३
 दुर्गास्तोत्र १२७
 दुहा (अद्वैतदास धाधाय) १२२
 दुष्टान्त रोहा (शुद्ध) १९
 दुष्टान्त साकी (रापोदाल) ६५
 दुष्टान्त साकी शुद्धपद ७
 देवदासका पद ४२
 देवपराधधमापनस्तोत्र १३५
 देवदासका योगपद ४
 देवोदासयोगुदा १३८
 देवीरहस्यके १५५ पत्र १५७
 देवदासकाद (मुम्बर) ५१
 दीप दीव भाव (रजदह) ३१
 दादापत्र (दुताराद) १११
 रोहाबमी (राजन्द) ३७

घ

ध्यानचंदरी (राजानुदाल) १ ५
 ध्या(दा)कमीना (अद्वैत) ३५
 ध्यानमीना (मुल्लोदाल) १११
 धुक्कास (अनलोदाल) ११ १२ १६
 ३१ ३२ ६६ ३३ ७६ ७७

कारवीपपुराण (पूर्व भाग) १४७
 नारायणकवच १२८
 नारायणहृदयस्तोत्र १२७
 नासकतभावा (व्यामनास) १६ १५८
 नासकतध्यान्यामभावा ११
 नारायणधर्म १५५
 नारायणस्तोत्र १३५
 नारायणमुक्तमाल्य १२८
 नारायणहृदयस्तोत्र १२८ १३६
 नीच(म) व्यापार्य (हरिदास) १४
 नीलसार (कृतस्वयं रामोक्त) ११४
 निपकृष्णका ग्रन्थ ८८
 निपदुसार १३१
 नित्यकर्मविधि १४४
 नित्यतपसविधि १३८ १४८
 निष्पन्नाद्विधि १५७
 निम्बामृतिपत्र (ईश्वरदास) ११८
 निम्बार्कपद्धति १३१
 निम्बार्कमयताप्टक १११
 निर्वाणयोगपद मन्त्रादेवकोको ५२
 निरोधलक्षण १६
 निरञ्जननिर्वाणयोगमय (बुद्धी) ४७
 निरञ्जनपुराणग्रन्थ ५१
 निनामो ठाकुरा श्रीगुरुदासदासजीरो १३२
 नातिक तीन लोक ३
 नीतिनवराज (ब्रह्मदास) ३२ ३७
 नीतिमञ्जरी ३५
 नातिबिबोद ३७
 नीतिनिराज टक (चक्र बुद्धि) १ ७
 नागप्रतिरो कोको (वरमराज) १८
 नीलाचोनी श्रीरामचरण ११३
 नीलाचो जगद्वय लबावा ११
 नीलाचो महाराज प्रतापनिहोको (हुकम
 चक्र बिहारी) ८६ ११२
 न नीचो रायचक्र मनोहर तीन रायचक्र
 महाराजगुणारको ११२

नृसिंहस्तुतिपत्र-मञ्ज १२३
 नृसिंहप्रतापस्मरण १३३
 नृसिंहमंत्र १३२
 नृसिंहस्तोत्र १२८
 नृसिंहहस्ताक्षरमंत्र १३५
 नेतको पद ४३
 नेहतरंग (रावराजा युपतिह) ५६
 नेहाजीको चतावनी ६२
 नेनके कवित ८५
 नवपीमचरितम् १४४
 नैननामी (बाबिब) ८४
 नीचेरना बावदाहके दल ठाज ११४

प

प्यष्टप्रपोषरस्वती कोपग्रंथ (पु नृ) ४७
 प्रचाली ८८
 प्रत्यङ्गिरामञ्ज १४
 प्रतापप्रीतिमञ्जरी (भारती) ११२
 प्रतापवचोनी ११
 प्रतापनिगारुहारा ५६
 प्रतापवीरुहारा ५६
 प्रतिबोधप्रानटीको कोपग्रंथ (पु नृ) ४७
 प्रबोधप्रतकथा १४ १५७
 प्रबोधवर्धमानम् १२८
 प्रवचनपद्या १३७
 प्रवचानुप्रवचनमुनी १ ७
 प्रबोधबावनी (जिनराम) २, १५१
 बापमुयाकर १४८
 प्रह्लादचरित (अनयोनास) ८८ ९२ ७६
 ३१ ३२ ३३
 बागप्रवीर (ग्योनिब) १४७
 प्रह्लादलो (वेदमल) १८७
 प्रह्लादप्रकाशिका १८८
 प्रायश्चनका ९६ ८१
 प्रायश्चनको नाचो ८१
 प्रायश्चनको नाच ४ (बुद्धीनामगुणपार) ४७

प्राचपचीसी (पु० पु०) ४६
 प्राचताकसी (नोरक) १२ ४४ ७४
 प्राचताकसी (नोरक) ४४
 प्रातःस्मरणम् ११२
 प्रातःस्तम्भा ११७
 प्रायभाष्य (सुन्दरदास) ४४
 प्रास्ताविक कवित्वसूचि ४१ १ ७
 प्रीतिस्तता (स प्रतापसिंह पञ्चमिनि) ३४
 प्रेमप्रकाश (पञ्चमिनि) ३४ १४१
 प्रेमनामजोगप्रब (अपजीवक) ११
 प्रमत्तनाकर (भैरव रत्नपात्र) ११३
 पचीस नाम (वेदव्यास) ४३
 पञ्चदशमीकथा (नरपति) ३२
 पञ्चदशमात्राजोगप्रब (नोरक) १२
 पञ्चपची १६
 पञ्चमुखी हुनुमत्कवच १२३ १२३
 पञ्चरत्न १३२
 पञ्चलपची १६
 पञ्चानामप्रकीर्णपत्र १३६
 पञ्चाध्यायो (नरदास) १११
 पञ्चाङ्गी पञ्चक (सुन्दरदास) ६३
 पट्टीपट्टाङ्का ३७ १२३
 पठाण (पाठक ?) का विजयारा ४२
 पण्डितसदाशिव (रामचरण) ६९
 पयनायकैवालयप्रशस्तिप्रतकम् (मनिकण्ठ
 कवि) ११६
 पद्यावलीस्तोत्र १२६
 पद (नोरक) १४
 पद (सदादास) १४
 पद (हरिदास) १४
 पदप्रसङ्ग (बाबू) २१
 पद राम दादि (गुलतीदास) ८७
 पदमपुटाचजोगप्रब (पुवी गु०) ४७
 पदसप्त ६६
 पदसप्त (अवधीवक) १३
 पदसप्त (पौडरी) ६

पदसप्त (पुडरी) १ ११
 पद्मसुखिनिर्घण (नोरक) २१ ७४
 पद्मपत्राङ्ग (माधवदास) १२३
 परदेसीप्राचको कोडी (परसराम) १६
 परमानन्ददासका पद ४१
 परसको पद ४३
 परसजीको धाकी १६, ४ ६१
 परसरामका पद ४ ६३
 परसरामजीकी बाको १८
 परिभाषा (व्याकरण) १६१
 परिभाषाभास्कर १४३
 परिभाषावेनुप्रोकर १४३
 परिभाषावेनुप्रोकरकी १४३ १४६
 पक्षीफलविचार १४
 पक्षमन्त्रोपदेश (नरदास) २
 पञ्चावली १२३
 पाकावली (भामुर्ख) १४६
 पाठनी (महाप्रतापजी) १२४
 पाठमन्त्रोपदेशात्मकवृत्ति (राजबालक-
 भिषा) १४६ १६१
 पाणिनिविद्यामणि १३४
 पाणिनीयुक्तम् १३७
 पाणिनेश्वरविद्यामणिविद्यार्थ १३२
 पार्वतीकी पञ्ची १२ ४२
 पाञ्चप्रभुमहिम्नस्तोत्र १६१
 पारसमाय ७
 पासाङ्कवली १२४
 पारवतीमहादेवर्षाद (नोरक) २
 विद्वत् २६
 विद्वत्कवच (दासोवर) १२
 विद्वत्प्राचको कोडी (परसराम) १६
 विसर्पविचार (सदादास) १७
 वीणाको पद ४३
 वीणाजीका पद ३६
 वीणाजीकी वरचर्चा (अनन्तदास) ७, १४

पीपाजीकी साजी १५ ३६, ६१
 पीरमुरीद प्रष्टक (मुम्बरदास) ६३
 पीककी साजी ४
 पुष्पाहुवाचन १३७
 पुष्पमुक्तम् १२७
 पुष्पोत्तम (विष्णुद्विष्य) लक्ष्मणाय
 १३१ १३३

पुष्पोत्तममाहात्म्य १४ १५६
 पुष्पिप्रकाशमर्यादाभर १३६
 पुरनकी पद ४३
 पुरशोमपस (शारङ्गनाथ भट्ट) ८२
 पुषीनाथजीकी प्रसी ४६
 पुषीनाथजीपर्यव ४६
 पुषीराजका पद ४६
 पौनिकिकस हिस्ती धाँक जयपुर रदेठ
 (जनस जे ली कक) १२४

क

कजमे शीमत महाराजा धी मिर्जा राजा
 म लखिहजी प्रथम १२१

करीदा प्रेयकी साजी ४४
 कायरप (महाई प्रतापतिह) ३४ ३५
 क्यकर लपहु ३७
 कनहारो हार (मनोहर प्रसी) १२२

ख

खड्डा प्रमि खोन जयशोभप्रग्व (पु मु)
 ४७

खड्डा घादेनुर जोपप्रग्व (पु मु) ४७

खड्डाकच १३३ १३५

खड्डात्रिजानाजोपप्रग्व ६२

खड्डापीन (मन्त्रशाल) १७

खड्डाकावमोरात्मशोभ १६५

खड्डाविराजवाष्टकशोभ १६५

खड्डारहस्याप्याय १३२

खड्डाभीनाथ व (वाहनशाल) ७

खड्डागुनि (हरिदास) ३ १८

खड्डागाय प्रष्टक (मुम्बरदास) ६३ ८८
 १३८

बहुस्तोत्रनिरञ्जन प्रष्टाङ्ग (यकूर) ७४

प्रस्तुस्तोत्र इलोक ६२

बकनाका पद (ध्याहसो) ४२

बकनाकी साजी ६१

बकनाजोका पद व बाकी १ ४

बकनाजोका ४ पदों पर डीका २

बमलामुपीस्तोत्र १३६

बजरपसावनी १२

बनारसीदासक पद २७

बलिवामनचरित्र (हृदयनाथ) ३८

बलिर्बदबदेवकर्म १३७

बहामरी प्रेयका पद ४४

बांकीदासप्रगावसी सहीक (मुरारिदान
 कर्मिया) १२

बांकीदासप्रगावसीके दूसरे भापकी
 भूमिका १२१

बांकीदासप्रगावसीके सम्बद्ध सामग्री १२१

बाह्यपङ्को (भीमिवास) ३३

(कपकावलीतो) १३८

(कुबरतका कवका) १५३

" (लामदान) १ ६

" (मुरततिह) १ ६

" (रत्नसार) १ ६

(बरी) १ ६

" रामजीकी (मुमतोदास) १ ३

हृदयचरित्र (भीमिवास) १ ६

मुदामाजीकी १ ३

" (मदामादास) १ ६

(मलिनकिमोरी) १ ६

" (हरिदास) ११

बारहु प्रदोत्तर २

बारहुपरा (कबीर) ७ ३८ ६६

बारहुपान ३

बारहुपाना ८२

(प्रधानोदास) १३

(बनयादास) ४६ ७६

(पुष्पनेत्र) १३

बारहमासी १२

(पुत्रीमास) ४८

बारहमासीचंद्रमा ८ ८१ ८३ ८४

८३ ८६

बारहमासी कालजीकी ११

कुम्भकी (पद्मोदालाम कालज्वाला)

७३

बाबकरामजीका कवित ६३

बागकाभिरासमुनावितरईग्रह १६२

बाकमुताई लक्ष्मणजीकी छम्पी १५ २३

बाधनाचकी छम्पी २३ ४३

बाभप्रभोविनीवार्ता (रामानुजदास) १ ३

बाभबोध १३८, १३८

बाभप्रभोवोरामास्य (चिंकरदास) १ ६

बावनजीला (परतराम) १८

बावनी (कुम्भदास) १ ६

(कवीर) ५७ ३५ ६८, १ ३

(रत्नच) ४९

(बाभविमोक्ष) १ ६

(जीयका) १ ३

बाकनीमोपग्रह (हरिदास) १ ६

बिहुरवलीकी (बाजीदास) १२१

बिन्नुछिन्नाभोजोपग्रह (बुकी) ४८

बिहारीसतसई ३८

बीजलका पत्र ३८

बीजिकाका पत्र ४३

बीजलजीके मन्थरका बिलालेख १२१

बीजाका पत्र ४१

बुधविकास (बोधचक्रवर्तिन) १ ६

बुधेष्टाहुकी सेतुर्षी १ ६

बुधजुजीकी लाठी ६१

बुधजालक १३८

बुधपारासरौम बर्गदास १३७

बेनीका पत्र ३८

बेनी (हृदय कविमयीकी) ३३

बेन्यावर्ता (बाजीदास) ११५ १२

१२१

बेसरमोलीके कवित ८५

बोहितदासका पत्र ४

म

भाररपोत १३८

भैव (म) रबीतमाया (बनमुकुन्द) ३८

भद्रविभंजोपग्रह (पु सु) ४६

भक्तजम्बेदनी (परतराम) २

भक्तमाल (नामोदास) १४२

भक्तमालका १४७

भक्तमालकीका (राधदास) ३

भक्तमाल सटीक (विद्यादास) १४८, १५१

भक्तमाला (परतराम) ७५

भक्तविरदावली (हरिदास) ३ ६३

भक्तिवांछतो (बोधदास) ३३

भक्तिवर्द्धनी १६

भयलचलीको (बोधदास) ६२

भयतिर्बहुपग्रह (पु सु) ४७

भयबहुपग्रहपति (मधुप—भानुवत्त)

१ ३

भयनपर्वचंद्र १५७ १

भयनतग्रह १३१ १३४

भयनवृत्ती १३३ १३६

(बापानीकासहित) १४५

(परमात्मप्रबोधिनी

टीकासहित) १३३

॥ (भयपदभुजावर्द्धित) १३३

(सुबोधिनीकासहित) १४५

भयनवृत्तिरत्नावली सटीक १४३

भयनदारावत १३७

भयनदामकीपुत्री १३७

भयु हरिचंदासप्रदक्ष्णकीका (भयनदास

विरजवनी) ६५

भयु हरिचंदासप्रदक्ष्ण १४५

भरतचरित्र (बनमोदास) ३१ ४८, ६२

भरतविलास (विद्यादास) १२

भरतरीकी छम्पी (पोरख) २३ ४५

भरवरीचरित्र (बीबनशाह) १३
 भरवरीजीका इलोक ३३
 भरवरीजीका ग्रन्थ — राजा राणी संवाद
 (गोरख) ४३
 भरवरीजीगवद (काम्पु) १७
 भरवरीनाथकी प्रसी ६१
 भरवरीमहिमावद (काम्पु) १३
 भरमस्तोत्र (सन्तदास) १७
 भरमविषयक ग्रन्थ (मुम्बर) ६३
 भवाभीष्टी पारती (प्रियानन्द) ३३
 भागवतकल्पतरु (जयप्रसाद) ६५
 भागवतचतुष्टयकम्प सटीक १४७
 भागवतसुतोयकम्प सटीक १४७
 भागवतद्वादशस्कन्धभाषा (पद्मनाभ) ११८
 ब्रह्मसंन्यास १४२ १४४
 ब्रह्मसंन्यास (ब्रह्मदासी) ११८
 " (मूल) १४७
 " पञ्चम सटीक १४७
 भागवत वर कन्द कवित ४
 भागवतसारचौतो १३४
 भाषाका वद ४
 भारवचरित्र (बनरज भट्ट) १२२
 भाषाशास्त्र (उमेशराम बरहठ) ११३
 भाषाभूषण (महा जलधरनिह) १ ७
 भाषासंशोधन (गोरख) १ ४
 भोवकी लावो ४
 भोवजनकी वाचनी ६ ६३ १२१
 भोवगीतम् (भागवत) १ ६
 भोवजनवाराह १२६
 भक्तानुपासक-स्तोत्र (भक्तानन्द) ११३
 भुवनात्मन्त्र (बोकोवाल) १२
 भुवनाका वद ३६, ६२
 भुवनावराहग्रन्थ ४१
 भुवनावराहग्रन्थ ११७
 भवप्रति ११७
 भुवना कवित ३

भेटके सर्वदे (जनमोपाल) ४६
 " (रजश) ४२
 भैरवाष्टक (विश्वकम्प) स्तोत्र १२३
 भैरव कवि श्रीर जसकी कविता
 (सूर्यकरमपारीक) १२२
 भैरव सबड़ाका पद ४३
 म
 मच्छीन्द्र-गोरमसोप ७४
 मत्स्यवेद्यान्तपत चम्पावतीपुरकथा १५६
 मतिमुन्दरका पद ३६
 मदनविनोद (कवि जान) ५६
 मदनवन्दकस्तोत्र १३८
 मध्याह्नरी कवित (मुम्बरदास) ६५
 मधुमासतीकमा (चतुर्मु जवाह) ४३ ८४
 मधुपुराणकस्तोत्र १६
 मन्त्रयोजना ११६
 मन्त्र भूमिही प्रादिक ३४
 मन्त्रप्रारम्भके स्मृत पत्र १२६
 मन्त्रसार १४१
 मनप्रवृत्तग्रन्थ (रामचरण) ६८
 मनार्थम छरीरा लापनजोप (पुष्पोत्तम) ४७
 मनविनोद १३
 मनसुप्रवृत्त (कम्पदान) ८१
 मन्युप्यवध सवदा (मुम्बरदास) ८८
 मनोहरचरित्र (हनुमानप्रसाद) १२२
 मयाराज वरजोरी बात (प्रातिपा मुपा)
 ६२ ११३
 परतिपा कवित (उमेशराम बरहठ) ११३
 बहुललोपासकीपन ८६
 बहुम्बर (काको) की भाषा ४३
 बहुम्बर काकोडा पद २३
 बहुलकपतिस्तोत्र १३३
 बगदेव-उमानाथ (गोरख) ४४
 बहदेवकी छारी २३
 बहदेव-गोरमनाथ २१ ४४ ६२

महाभारतमन्त्ररत्नस्तोत्रचिन्तामणि १३
 महापुरुषस्तोत्र १३४
 महामृत्युञ्जय (अ०) विद्याल १३
 महामृत्युञ्जयस्तोत्र १२४
 महाराजा मार्गसिंह कछवाहा १२१
 महाराजा मार्गसिंह प्रथमका चित्र १२३
 महाराजा प्रतापसिंह १२१
 महानक्षत्रीकवच १३७
 महानक्षत्रीपुत्रा १३७
 महावीरचरितम् (नामकम्) १३९
 महिषीपीठ १३६
 मौर्य भागिक मुकाम (रसराशि) ८२
 मन्त्राधीनी विद्याय (ईश्वरदास) ११४
 माताधीरो जन्म १३२
 मायवकामकम्बला श्रीवाई १३३
 मायवर्तिसिद्धार्थस्तकम् (मायवचिन्ता)
 (व्यासभट्ट) ६७
 मायवचिन्ताकामकम्बला (धामल) ८४ ११३
 मायवेनुर्ध्वस्तलिपय (मायवस्तुति) १३
 मायवेनुर्ध्वस्तलिपय वदन्तीति १४९
 मायो जयपञ्चाशका पद ४१
 मायोसिंह सवाई महाराजा १२४
 मानप्रसङ्ग शंभ (हरिदास) १४
 मानमन्त्ररत्नोत्तममाता (नामदास) १ ६
 मानविजयमन्त्र (हनुमान धर्मा) १२३
 मार्गसिंहजीके राजसोकका कोरा १२१
 मारुत २
 मारवाड़ी समाजा १४१
 मावडिवाभिजात (कविराजा बांकीदास)
 ११३, १९
 मीरजीबावकी धम्मी ४६
 मीराके पद ६६
 मीराजीके पद १६
 मुक्तकमुक्तामयी १६९
 मुक्तिमन्त्र १४
 मुकुन्दका पद ४१

मुकुन्द भारतीके २ पद्यों पर टीका २
 मुकुन्दमाता (कुलशङ्करमुपति) १ ६ १२८
 मुकुन्दमुक्तामयी (कुलशङ्करमुपति) १ ६
 मुरलीविहार (सवाई प्रतापसिंह) ३४
 मुत्ता-पच्छित्तसंवाह ६९
 मुहूर्तचिन्तामणि १३६
 मुहूर्तचिन्तामणिनामा १४६
 मुलक महाराजजोषधाम्य (पुनीनाथ) ४७
 मूसरमाय १२४ १३४
 मूसरूच (पञ्चमाध्याय) १३१
 मृत्युञ्जयस्तोत्र १९८
 मृत्युनाङ्ग लम्ब १९७
 मोहनी चेतान्नी ३९
 मोमिके लक्षण ४
 मोहवदासजीका पद ४४
 मोहवद (जगन्नाथ) ४४
 मोहवद (कविराजा बांकीदास) ११३
 मोहवदरूप ४ १९
 मोहवदराजाकीका (जगन्नाथ) ११ १६
 ३३ ३६ ७६
 मोहविके (जगन्नाथ) ३१ ४६
 मोहविकेपद ६२
 मोहविकेकांवा ४ ७६
 य
 यतीन्द्रस्तोत्रिका १४६
 यमुनाध्वजस्तोत्र (जगन्नाथ) १३
 यमुनाध्वजस्तोत्र १२७ १३६
 युक्तिरत्निकी (धतसई) (कुलपतिमित्र)
 १३, ३७ ६
 युक्तस्तोत्र १३२
 युवाधिवचना ४
 योयचिन्तामणि १४४
 योयचिन्तामणि भाषानुवाचमण्डित
 (पञ्चपति) १ ७
 योयस्त १४४
 योयस्तमाया ठरीक १४८
 योयवरी धम्मी (योरक) ४

महाभारतस्य मन्त्रराजस्तोत्रविष्णुसामनि १३
 महापुरुषस्तोत्र १३४
 महामृत्युञ्जय (अप) विष्णुसाम १३
 महामृत्युञ्जयस्तोत्र १२८
 महाराजा मार्तण्डि कण्ठबाह्वा १२१
 महाराजा मार्तण्डि प्रथमका चित्र १२३
 महाराजा प्रतापसिंह १२१
 महामहोदधौ १२७
 मन्त्रात्मन्मीपूजा १३७
 मन्त्रादौ रक्षितम् (नमस्कृतम्) १३२
 महिषीवीर्य १३६
 मीर्य मालिक मुकाम (रत्नराशि) ७२
 मन्त्रात्मिकी विष्णुसाम (ईश्वरवाक्य) ११४
 मन्त्रादौ रौद्र १२२
 मन्त्रात्मिकामकम्भस्य चोपाई १२३
 माधवसिंहमन्त्रात्मिकम् (माधवविष्णुसाम)
 (इमापलङ्क) १७
 माधवानलकामकम्भस्य (माधव) ७४ ११५
 माधवेमुद्रात्मिकम् (माधवसुनि) १५
 माधवेमुद्रात्मिकम् ब्रह्मात्मिक १४१
 माधो जयप्रावका पद ४१
 माधोसिंह सवाई महाराजा १२४
 माधवसुनि पद (हरिवाक्य) १४
 माधवसुनि रीमाममासा (मन्त्रवाक्य) १ ६
 माधवसुनिमन्त्र (हनुमान् पद) १२३
 माधवसुनि रीमाममासा १२१
 मारुत २
 मारुतौ तमासा १४१
 माधवसुनिमन्त्र (कविराजा वाकीवाक्य)
 ११५, १२

मीर्यकीवाक्यकी प्रथम ४३
 मोरार पद ६६
 मोरारको पद १६
 मन्त्रकमुक्तात्मिकी १६७
 मुक्तिमन्त्र १४
 मुकुन्दका पद ४१

मुकुन्द भारतीके २ पदों पर बीका २
 मुकुन्दमासा (कुलककारमुपनि) १ २, १२४
 मुकुन्दमुक्तात्मिकी (कुलककारमुपनि) १ ६
 मुकुन्दविहार (सवाई प्रतापसिंह) ३४
 मुक्तात्मिकीमन्त्र ३२
 मुक्तात्मिकीमन्त्र १३६
 मुक्तात्मिकीमन्त्रात्मिकी १४६
 मुक्तपद मन्त्रात्मिकीमन्त्र (पुत्रीवाक्य) ४७
 मुक्तपदमन्त्र १२८ १३४
 मुक्तपद (पञ्चमाध्याय) १३१
 मुक्तपदस्तोत्र १२४
 मुक्तपद लक्षण १२७
 मोहकी चोतात्मिकी २२
 मोहिके लक्षण ४
 मोहिकीमन्त्रकी पद ४७
 मोहिके (अनयोपास) ७४
 मोहिके (कविराजा वाकीवाक्य) ११५
 मोहिकेपदपद १२
 मोहिकेपदकीवाक्य (अनयोपास) ११ १६
 ३३ २३ ७६
 मोहिके (अनयोपास) ३१ ४६
 मोहिकेपद ६१
 मोहिकेकर्मपद ७६
 य
 यतीश्वरस्तोत्रकीपिका १४६
 यमपदस्तोत्रकीवाक्य (अनयोपास) २३
 यमपदस्तोत्र १२७ १२६
 युक्तिमन्त्रकी (अनयोपास) (कुलपतिनिधि)
 ३३, ३७ ६
 युक्तिमन्त्र १३२
 युक्तिमन्त्र ४
 युक्तिमन्त्रात्मिकी १४७
 युक्तिमन्त्रात्मिकी भावानुवाक्यमन्त्र
 (पञ्चमन्त्र) १ ७
 युक्तिमन्त्र १४४
 युक्तिमन्त्रात्मिकी लोको १४७
 युक्तिमन्त्रकी प्रथम (लोको) ८

र

रघुनाथचरित्र जोड़ी (बनतराय) १६
 रघुनाथपञ्चशतम् १२६
 रघुराजविमोह (गुरम्वर) ८२
 रघुवरचंदावनी छादि १३६
 रघुनाथ विजयारा ४२
 रघुवंश १४३ १४२
 रघुवंशीका १४३
 रघुराजलोप १२
 रघुवज्रकोका कवित ६ २३
 रघुवज्रकोका कवित-बांभी ६३
 रघुवज्रकोकी छांभी साधो १
 रघुवज्रकोकी बांभी साधो कवित लक्ष्मी
 पर भादि ३
 रघुवज्रकोकी साधो २६ ४२
 रघुवज्रकोकी साधो एवं रघु कवित ७
 रघुवज्रकी कवित ८६
 " पर २७
 रजवाकोप (कनहास) ८१
 रजवाकोके छन्दे धोर राजधिम (मुग्धी
 देवीप्रसाद) १२२
 रत्नकोप १४४
 रत्नावली (कविज्ञान) २७
 रत्नावलीकी बाली (कविज्ञान) ८६
 रत्नकमलचलोदी (सवाई प्रतापसिंह)
 ३४
 रघेयो (कबीर) ३ ३८
 रत्नकीनुक (राजसभारञ्जन सन्यासप्रबंध)
 ४२
 रत्नकापके कवित ८३
 रघुनाथुतिहिक्कियाकी मागजयाथ १४८
 रघुनीयुवनिधि (सोमनाथ) ३२
 रघुवंशरी सखी १४८
 रघुरहस्य (कुलपति) ६७
 रघुसमूह (पञ्चमभट्ट) ६२
 रघुवंशीके हिमवीर १४१

रत्नकनिषा (कनहास) ८७
 रत्नकापका रघुवंशीमङ्गल (हरिसेवक)
 ६९
 रघुराजपथ (पोरथ) १३
 रघुवंशस्तव्य १४
 रामकोप ३३
 राममञ्जरी (पुण्डरीक बिट्टल) १०६
 रामपालाक बोहे ३३
 रामबाणकस्तोर १३
 रामोकी साधो ४
 रामोकीकी कवित ३
 राजनीति (अमेहराम बारहठ) ११३
 राजनीतिकवित (देवीदास) ३२
 राजनीतिका कवित ३३
 राजनीतिभाषा (अमेहराम) ३३
 राजपताकी रिपातकीका ध्योरा १२२
 राजपूताक कुपु वातव्य पुताम १२२
 राजवस्त्र (पञ्चमभट्ट) ११४
 राजवानी सेय एवं कविताएँ १२२
 राजा कम्बकी बात (सत्यमन बाटुल) ५६
 राजा-बाह्याङ्गीकी बंधाधनिया १२४
 राधेदेवकाया तिनरी विपत १३१
 राधेदेवचरित (पञ्चम भट्ट) १२२
 राधाकीके पिछनछवचनकी भूमाल (कवि-
 राजा बांकीदास) ११५
 राधारसमुधानिधिस्तव १३१
 राधारसमुधानिधितोष १३६
 राधास्तोत्र १२७ १३४
 रामकवच (जैसोदयमोहननाथ) १४६
 रामबाणवीरञ्जनास १२६
 रामनीलनोबिम्बकाय १४३
 रामचन्द्रकी सखी १३
 रामचन्द्रकीकी कवकी (होहरमल) १ ६
 रामचन्द्रस्तवराज १२६
 रामचन्द्रिका (कैलाशदास) ५४
 रामचरणकीके पर भजन ६६
 रामचरित (कामरूपासकृत) ११

रामचरितमानस ५७, १३७
रामजी मध्यक (सुन्दरदास) ६३
रामनामिमुपनिषद् सत्रीक (मानन्मणि
नाम्नी डोका) १६१

रामनामजी रतगुकी लखवीर १११
रामनवावकी (गुरती) २३
रामपुजा १३४
रामपुजापद्धति १३
रामपुजाविधि १३५
राममहिम्न स्तोत्र १३३ १३६
राममानसीपुजाविधि १३२
रामरक्षाकवचस्तोत्र १३७
रामरक्षास्तोत्र १२ १२६ १२७
रामरातो १५३
रामस्वामिचरितवाकस्तोत्र ४
रामस्तवराज १३३
रामस्तवराज सत्रीक १४३
रामस्तोत्र ३, १२५ १३२
रामसिंह प्रथम सवाई १२४
द्वितीय „ १२४
रामसिंहजी द्वितीय म्हाराजा लवाईका
इतिहास १२२

रामसतनामस्तोत्र ५४
रामानन्दका पत्र ३१
रामायणुद्धारकस्तोत्र १३४
रामायण (गुलछोदास) ५७
रामायणकीर्तन दोहा (रगुराज) ३७
रामायणपाठविधि १४४
रामायणमहाप्रसन्न १४
रामायणोत्तररत्नम् १६१
रामायक (अन्तराध्याय) ८३
रामायोत्तररत्ननामस्तोत्र १३१
रामाइनमेव (प्रियराज भूष घडावत) ११४
रामचन्द्र महाराजगुजार मनोहरदासोदरी
नीताजी (भूषरावत) ५६
रावन्के कवित ३

रावलचरित (मध्यम बटु) १६
राक्षिसप्रहाम ३
रातको रेखता (सवाई प्रताप) ३४
रासपञ्चाध्यायी १२
रासपञ्चाध्यायीभाषा कृष्ण १३५
रिनीकस द्विती वाइली इन रावस्थान
ए मोड प्राग १ १
रामजीजीको व्याकतो (महेशमल) ३१
रामिनीजीरो व्याकतो १४१
रामिनीमङ्गल १६१
रामिनी व्याकतो दासि १३३
रामनामस्तोत्र ३२
रामाध्यायी १३५
रामप्रीत ११
रामप्रीतपिङ्गल (अपङ्गल) ८७
रामप्रीतपिङ्गल ११४ १४५
भाषा १५६
राममङ्गली (मन्वराज) १७
रेखता (सिवादास) १४
„ (खेमदास) ६४
„ (मुक्तमाल कबीरोंके) ३
„ सवाई (स प्रताप) ३४
रैदास-कबीरपोथी २७
रैदासजी परबई ७
रैदासके ३ पत्रों पर डोका २
रैदासजीका पत्र १ ३१
रैदासजीकी बाणी १३
रैदासजीके पत्र २१
रोमावतोदय (पोरक) २१ ७४
ल
लक्ष्मणवसतिपु पिङ्गल (कुंवरदास) ३६
लक्ष्मणवावकी मन्थी २३
लघुवाक्य १३६
लघुवाक्यसंग्रह १६
लघुवामा (लेमदास) १ ४
लक्ष्मीकला पत्र ४१

भोहरिमोता (बरलराज) १८
 गृन्नारमञ्जरी (म प्रतापसिंह) ३५
 स्नेहपद्माङ्गु रविधि: १३८
 मल्लिहार १४३ १४६
 मल्लिहार (स्वाम्यघात) १६१
 मल्लिकार्जुनचरण १६१
 मल्लिकार्जुनचरीविका १६
 मल्लिकार्जुन चारि नायिकाप्रकि लक्षण तथा
 सपत्न कवित्तादि १३२

मल्लिकार्जुनचरण ६
 मल्लिकार्जुनचरी कथा ५६
 मल्लिकार्जुनचरी कथा (रामानन्द) ६२
 .. (जैतसिंह) ६२
 मल्लिकार्जुनचरण (राजचरण) ६५
 मल्लिकार्जुनचरण (सप्तशत) १७
 मल्लिकार्जुनचरणको १४३
 मल्लिकार्जुनचरणचौद्वार १४३
 मल्लिकार्जुन २
 मल्लिकार्जुनचरणस्तोत्र १३३
 मल्लिकार्जुनचरणस्तोत्र १३६ १४
 मल्लिकार्जुन ८७ १४२
 मल्लिकार्जुनकविता ६४
 मल्लिकार्जुन ४ ४
 मल्लिकार्जुनस्तोत्र १३३
 मल्लिकार्जुन १२१
 मल्लिकार्जुनमाया १४७
 मल्लिकार्जुनचरणचौद्वार कविता (मोपाल-
 वान) ५३
 मल्लिकार्जुनचरणचौद्वार ११६, ११७
 ११८
 मल्लिकार्जुनचरणचौद्वार ३३
 मल्लिकार्जुनचरणचौद्वार ५५
 मल्लिकार्जुनचरणचौद्वार कविता (गुलामीदास) ८७
 मल्लिकार्जुनचरणचौद्वार कविता ११४
 मल्लिकार्जुनचरणचौद्वार (हरकचदास) ११४
 मल्लिकार्जुनचरणचौद्वार १४१

मल्लिकार्जुनचरणचौद्वार ११५
 मल्लिकार्जुनचरणचौद्वार ११५
 मल्लिकार्जुनचरणचौद्वार १३५
 मल्लिकार्जुनचरणचौद्वार ७६
 मल्लिकार्जुनचरणचौद्वार १२८
 मल्लिकार्जुनचरणचौद्वार १६
 मल्लिकार्जुनचौद्वार ११६
 मल्लिकार्जुनचौद्वार १६
 मल्लिकार्जुनचौद्वार कविता (मल्लिकार्जुन)
 ११४

मल्लिकार्जुनचौद्वार (सपत्न पत्र) १३६
 मल्लिकार्जुनचौद्वार १४२
 मल्लिकार्जुनचौद्वार (काशीनाथ) १०८
 मल्लिकार्जुनचौद्वार (नोरख) १४
 मल्लिकार्जुनचौद्वार (देवना ?) ७५ (नोरख) ४४
 मल्लिकार्जुनचौद्वारयोगचरित्रिका (नोरख) ७४
 मल्लिकार्जुनचौद्वार १३६
 मल्लिकार्जुनचौद्वार १३६
 मल्लिकार्जुनचौद्वार स्तुति १२८
 मल्लिकार्जुनचौद्वार लीला (मोहनदास) ५२
 मल्लिकार्जुनचौद्वार (भाष्यस्त) १ ६
 मल्लिकार्जुनचौद्वार ३

प

पद्मचरणचौद्वार २
 पद्मचरणचौद्वारचौद्वार ६१
 पद्मचरणचौद्वार (पद्मचरण) ३६
 पद्मचरणचौद्वार १३६

स

स्तुतिपत्रक (गुलामीदास) ८८
 स्तुति स्तोमहाराजकी (हरिचरणदास) ३४
 स्तोत्रादिस्तुतिचौद्वार (स्तोत्रार्थस्तुति) १३४
 स्तुतिचौद्वार १४१
 स्तुति कविता (भूपर) ८७
 " " ३३ ३४ ३५ ३६ १४४
 स्तुति कविता-गुलामीदास १११

एकद कवित्त-सुधाविषय ११३
 एकद कवित्तपर १२ ०३
 " कवित्त राय घादि १३
 " " सप्रह ०४
 कवितादि ११४
 वरसंप्रह ३६
 " सप्तपदावली २६ २७
 " सप्तमा घादि ३४
 सप्तमा-द्वयघ घादि ३६
 " लाली ३१
 स्मृतितार १४४
 स्तोत्रोक्ता वर ३६
 स्तोत्रोक्ती वली ३६
 स्वप्नप्रोधाप्याय १३०
 स्वप्न-नरकका पाल विषय (मुद्गरदास) ००
 स्वरोदय (रसराजि) ०२
 (रामचरण) ०३
 स्वर्गितवाचन १३४
 स्वामिनाथकरीणोत्र १३६
 सकलपद्महा (कबोर) १० १६
 सकलपद्महा घादि (हरिदास) ३
 सकलपद्महो (कबोर) २७
 मयोनामरामावली (मुभक्तयो) १०
 मन्दुरभङ्ग (हरि) कवच १३७
 मन्दुरमात्रव माधोनमिहानोत्र १३१
 मन्त्रोक्तो दुल्लभ (मवाई अयनिहारी
 प्रसमावरक कवितादि) १३१
 मन्त्रोत्तरपद-द्वयक (काव्य तरोक) १६३
 मन्त्रोत्तरपद (अयनराय काव्य) १६३
 मन्त्रावली १६१
 मन्त्रो (कबोर) ३६
 मन्त्रो रमणी (कबोर) ३६
 मन्त्रो रावण १३७
 मन्त्रोत्तरपदो (मुभक्तयो) १
 मन्त्रोत्तरपदो (म ६१) ०
 मन्त्रोत्तर १६ ६

सप्तपदक सावसिद्धारी वारता (मुद्रदास
 कवि) १
 सप्तपदक सावसिद्धारी वार १३१
 सप्तपदको वर ४
 सप्तपदकोको वली १७ १४४
 सप्तपदोपासयगविधि १४१
 सप्तपदोपासविधि १४४
 सप्तपदोपासकहसमाम १५६
 सप्तपदोपासको (पुष्पोपास) ४७
 सप्तपदोपासम् १३७
 सप्तपदोपासविधि १३० १३७
 सप्तपदोपासविधि १६
 सप्तपदोपासक वरभरत धनकवाच ३
 सप्तोत्तरपदीको कवा ३६ ३७ १३३
 सप्तोत्तरपदी १३३
 (विष्णुदास) ३३ ३६
 " (जमोदक) १२
 (प्रतापविह) १३
 सप्तोत्तरपद (म प्रताप) ३३ ३४ १३५
 सप्तोत्तरपद ३४
 सप्तोत्तरपदो दोहा ३३
 सप्तोत्तरपद (पारस) २१ ४४ ७४
 सप्तोत्तरपदी १३६
 पीता ४ ३३ ४४ १२०
 १३३
 सप्तपदो (दुर्गा) मवाचप्यामादि १२६
 सप्तपदोदुर्गाको १३१
 सप्तपदोत्तरपदोपासविधि १३
 सप्तपद (अरवरी) ७२
 सप्तपदोत्तरपद १६२
 सप्तपदोत्तरपद (पारस कवि) ६
 " " १७ १११
 सप्तपदोत्तरपदो (पारस) १६
 सप्तपदोत्तरपदोको ३
 सप्तपदोत्तरपद (कबोर) ३७
 सप्तपदोत्तरपद (विद्या व पारस) १६१

समवसरचस्तोत्र १६६
 सचक्रस्तवन (देवप्रयोस्तोत्र) सटीक १४६
 सचक्र कवित्त २
 सचक्र नाटो १
 सचतोयद्वयं सचया (गुह्यर) ८८
 सर्वाङ्ग वाचनो ६
 (ओपक्रम) ६६
 सर्वाङ्गयोग (रज्जव) ३१
 सर्वाङ्गयोग (गुह्यरवास) ८७
 सचमन्त्रलक्ष्मीमनस्तोत्र १२७
 सर्वोद्योगमन्त्र १४
 सर्वोत्तमस्तोत्र १२६
 सरस्वतीरे धनसङ्कलन ८७
 ल(क)रवासका युद्ध १२३
 सरस्वत्यष्टक १२६
 सरस्वतीस्तोत्र ११ १३३ १३६
 सरसको पद ४३
 सचया (गुह्यरवास) ६
 " (परमवास) १८
 (चैनवास) ४६
 सहेलीने कायद १२२
 सांख्यश्रीका १६
 सांख्यलक्ष्मीमुरीम्याक्या १६
 सांख्यद्वययोगप्रणय (सौरय) २१
 साको (हुरिवास) १४
 पूरक (परमवास) २
 साचनियेपनीला (परमवास) १४
 साचा गुरमाका रजता (सेवावास) १७
 सात पातु २
 सप्त बार ५
 साचपरीक्षा (बुद्धिमाय) २५ ६२ ७४
 साधुपराधनी हनु ७१
 साधुलक्षणचक्षण (लक्ष्य धर्मपिथ कोय)
 (रामचरण) ६६
 साधुपरीक्षा १६६
 साधुपरीक्षा भाषागद्यनुवाच (प्रियमिह
 ध्यायत) १११

सारको स्पष्ट वच १३६
 सारसप्तकम् (पञ्चमहाकाव्यानाम्) १६२
 सारसप्त १४३
 सारासप्तकाकरण १४१
 सारोरा पद ४१
 सावित्रीविषयमन्त्रमन्त्राष्टकस्तोत्र १२४
 सावित्रीपात्रा पद ४
 सिद्ध भोक्ता योगप्रणय (पुपी) ४४
 सिद्धांत ५
 सिद्धांतकोमुनी (सचकोपिनी) १४३
 सिद्धांतचरित्रका १४२ १४३
 सिद्धांतविष्णुस्तोत्र १३३
 सिद्धांतपञ्चतान्त्री १२६
 सिद्धांतसरहण १२६
 सिद्धांतसङ्घ ज्ञायरीको १४६
 सिद्धिप्रदमीस्तोत्र १२६
 सिद्धोपाय १४३
 सिद्धेय्य नातो ६१
 सिद्धिप्राप्त २२
 सिद्धको १४४
 सिद्ध मन्त्रोप-यात्माप्रणयकोय (बुद्धिमाय
 नुपचार) ४६
 सिद्धांत कलीको (हिमरी) १२१
 सीता पृथ्वीप्रतिमापानि १३२
 सीतारामरहस्यचरित्रका १ ५
 सीताराम व्याकुलो ५५
 सीतास्तुति १३२
 सीतास्तोत्र १३२
 सीताका पद ४२
 मुष्ट (मुक्त) संवाच ११
 मुक्तसंवाद (अनयोपास) ११
 मुक्तसंवादयोगप्रणय (अनयोपास) ११
 मुक्तानन्दका पद ३६
 मुक्तानन्दको १३६
 मुक्त मारवको कोटी (परमवास) १६
 मुक्तसंवाच १३ १३२

सुवर्धनसप्तकस्तोत्र १४४

सुवर्धनाष्टकस्तोत्र १४४ १४२

सुवामाचरित्र (मन्त्रवात) ३३

सुवामाचरित्रको खोडो (परस्तराम) १५

सुम्बरबासकेकवित्तादि ८३

सुम्बरबासकीको खोलीली व बाक्लो १ ५

सुम्बरबासकीको साखी ६३

सुम्बरबासकीको छन्द ५३

सुम्बरबासकीको पद ३२

सर्वेया ११

सुम्बरबासकीकोपान्न (खानसमुद्र) ८३

सुम्बरबास-मोक्षनबासका पद्यमय वच-प्यवहार
५३

सुम्बरबाक्की १३१

सुम्बरबाहुस्तोत्र १३

सुम्बररङ्गस्तोत्र (सुम्बरबास) ३७

सुम्बरसिपार (सुम्बर व्यापारनिवासी) ३३

सुमाक्षितसंग्रह १५६

सुमाक्षितसंग्रहम् १५३

सुभाष रीति (स प्रत्यय) ३४

सुधीवच ३५

मोक्षिसेवका १३६

सुर्यकवच १२६

सुर्यकम् १३३

सुर्यस्तवराज १३३

सुरका पद ४१

सुरतरामकीको पद ६६

सुरतिपिङ्गल (सुरतकवि) ३

सुरबासके पद ३६

सुरपद १७

सुरपञ्चीको ४१

सुश्रवणीकती-कवित्तोपनिषद् (पुत्रीनाथ)

४५

सेकतवनकी परकी (मङ्गल वा रघुनाथ)

१५

सेवाकी बारि (कुलवति मिश्र) ३२

सवादातकीको बाकी १३

सेवाकल १६

सेवका पद ४

सोमप्रको पद ४६

सोमका पद ४

सोमह कवा सोमपान्न (पुत्रीनाथ) ४५

सोमहस्तिकिबोधपान्न " ४८

सौम्यार्थसहस्र (अङ्कुराचार्य) १२५

सक्तिस्तोत्र १४१

संस्कृतमञ्जरी १६५

सम्पत्तिलमाला १६२

हु

हुकीकत २

हुडयोपवीयिका १४६

हुवचकी छप्पी ४३

हुवचकीका पद व मञ्ज ४३

हुवृत्तिहृदी रावका क्षम ११२

हुम्भकवच १३३, १३४

हुम्भकवचनात्मन्त्र १३७

हुम्भकवचस्तोत्र १२६

हुम्भस्तवराज १३३

हुम्भस्तोत्रम् १२५

हुम्भस्तोत्रम्प्राद्विधि १२५

हुम्भस्तोत्रनामस्तोत्र १३४

हुम्भस्तोत्रनामस्तोत्र १३

हुम्भस्तोत्रनामस्तोत्र १३३

हुम्भस्तोत्रस्तोत्र १२ १३३

हुम्भस्तोत्र (घाबर) १३३

हुम्भस्तोत्राध्या १२

" नावनी १२

हुमीररातो ५६, १४१ १३४

" (महेश कवि) ५२ ६६

हुमीराय " ६६

" (बेन ?) ६७

हुमपीबाधोत्तरपद्यनामस्तोत्र १२५

हुमताली सिद्धकी छप्पी २३ ४६

हुररत ११ १३१

हरिमुदस्मरण (पौर्विक-नवेवम्बायी) १७

हरिचरनत (ध्यानदास) १७ ३३

" चोपई ११

हरिजननामा (बाजिर) ३

हरिदासजीका पद १ ३८

हरिदासजीकी बाणी १४

" लाप्यो ३८, ६

हरिदासजीक १८८ पदों पर टीका २

हरिध्यानम् (कुसुमसिद्धि) २२ २७

हरिनाममाला (छाट्टाराचार्य) ७४ १५०

हरिनामपोडमी १०२

हरिपञ्चविंशतिनामानि १३२

हरिकोमलतापनी ६

हरिकोमलतावनी (सुन्दरदास) ५१

हरिरस (ईशरदास) ११ १५१

हरिरामदासजीकी बाणी ५७

हरिरत्नकी ओड़ी (परसराम) १८

हरिरत्नकी चेतावनी ५२

हरितारिणी १ ७

हरिहरात्मस्तोत्र १३१

हस्तामसक १४६

हत्ती भालाकी कुण्डलिया (ईशरदास) ११४

हाथीपावका पद ४३

हाथीपावकी दाप्यो २२ ४३

हासिष्ठ भार ई बायलरायकी स्पीच

१४२

द्विज्ज लाजमानुस्तोत्र १६५

द्विगोत्रदेवपञ्चास्वान भाषा १३३

द्विगोत्रदेव भाषा ७६

द्विगोत्रके दोष्टे १३६

द्विगोत्रके प्राचीन महाकवियोंके चर्चोंका संग्रह

१५१

हीयालीकवित्त ७६

हीराबावनी १ ३

हीरावनी कवित्त ८३

हुदय्यदासकी ओड़ी (परसराम) १८

हुथोऊयका पद ४१

हीनहारक कवित्त (मानलखी) ३४

होमोह्वारा (पु हरिमारापञ्चमी) ७३

हुतवति-प्रबलतिशोपग्रण्य (पुषीमाप) ४७

हुनाय्यकम् १४६

८१

धमापोडमी १२२

धमकुमुदस (महामसविधि) १४६

७

विमोचनका पद ३८

विमोचनकी परचई (मनलदास) ६ १७

५३

वंतोस्वमोहुरं नाम विष्णुकवचम् १५७

वंतोस्वमोहुरं रामकवच १२६

३

जानकीलीला (मोरख) २२ ४४ ७४

जानभूमना मय्यक (सुन्दरदास) ६४

जानमिलक (संस्कृत) १३२

जानपथीली (पुषीमाप सुख) ४६

जानबावनी १ ३

जानमाला ५८

जानसीमा १२

जानलीसावलीली (परसराम) २

जानलोचनस्तोत्र १४६

जानलमुह (सुन्दरदास) ६ ५१ ६३ ७६

७७ ७८

जानलमुहका धर्म २६

जानलान्वर ५७

जानलिलोकका पद ४२

जानी-प्रजानीजीकपुष्प (हरिदास) १४

परिशिष्ट २

कतु नामानुक्रमणिका

अ

अकबर १४
अक्षेशम १४८
अपकवि ६३
अप्रदास ११ २१ ६८ १ ३
अप्रदास (नाभादास) ८३
अवर १
अङ्ग १३
अङ्गराजी ७३
अङ्गराजी मकत २५
अजमपाल ४६
अमित १ ३
अर्जपाल ७५
अहमद सेबापन्नी ७
अम्बार ४ ४३
अम्बर १४६
अनन्त ६४
अनन्तदास १ १ ७ १७ १८ ३५ ५३
अनन्तराम ६
अनन्तानन्द कवि ६७
अनासदास ३ १६ ६२
अनुयुक्तिस्वकपावर्ग्ये १४३
अनेककवि ३६ ४७ ६१ ७७ ८३, ८६
मम ११३ ११४
अ १ ४
अमरसिंह १४४ १५७
अमरिया १ २
अमृत ६४
अमृतारामजी राय ६२
अमृतदास ६२

अलावक ६३
अमृषी ५२
असम १ १
अमर ५ ६३
अमर ८१ ६३ ६४ ६५, ६६ ११५

आ

आमिया कवि पुरन ११
आडा पहाड़काज ११६
आमबराम ५६
आमबराम (माजूर) १३३
आमबराम १६१
आमर ८४ १११
आमरकवि ११५
आमरमेव ११२
आमराम ४३
आमरदास २१
आमराम ७१
आमरामजी २५
आमिया बुवा ६२ ११३ १२
आमिया मोहन १५२
आमिया आदि अनेक ११३
आमिया बोधा ११६
आमिया बला ११६
आमिया बीरजी ११६
आमिया भाला ११६

ई

ईश्वरदास १४८

ईश्वरदास बारहूड ११
 ईश्वरदास बारहूड ४२
 ईश्वरदासजी बारहूड ११४
 ईसर १३३
 ईसरदास १२, १३१
 ईश्वरदास बारहूड ११६
 ईसरा ६८

उ

उदल १ २
 उदयराज ११८
 उदराज १ २
 उदराज कवि बारहूड ६१
 उदराज कविवर ६१
 उध १ १
 उम्मेदराज ३५
 उमेदजी लापू ११६
 उमदराज बारहूड ११३

ऊ

ऊतिपा १ ३

ऋ

ऋषिकेशजी भल्ल ३५

ए

एष एम कतरे एम ए पी एच जी

क

कभेरी ४५
 कभेरी पाल ७५
 कवितमुनि ११५
 कवितदास १
 कवीर १ ३ १ १५ २ २६ २७
 ३ ३६ ३८ ४ ६ १४ १६
 ७८ ७९, ८४ ८७ १ ३, १४१
 १५
 कवच १ १
 कमात १६, ७१ १ ३

कमातजी २४
 कर्मोदान कविपा ११६
 करमाचन्द्र १
 कस्यामि १ ३
 कस्यामन ११५
 कादन २३ ४३ ७१
 कल ३२ १ ४
 काम्हा ४३ ७
 कानददास ७६
 कानदास ४
 कानिदास ३३, १४४ १४५ १५७
 कर्षितदास कवि १३६
 कानू ५ १७ १
 कानूराम धाचाप ६४
 कानू का मोरघ (१) १५
 काम जे लो बळ १२४
 काशीनाथ १ ८ १६७
 काशीराम ८१
 काशीराम कवि ६६
 कासिम १
 कासी १ ४
 कासीराम ११२
 कामा १ ७
 किन्दूरदास १ १
 किन्दूरप्रभु ६४
 किछोर ६६
 किछोर घाती ३४
 कीताजी २४
 कीन्दुदास ४१
 कीन्हा १ १
 कीलजी ७३
 कुल ६६
 कुलपतिमिथ कवि ५३, ६ ६२ ६७
 १११
 कुलदेवर मुपति १ ६
 कुलदेवराचार्य १२८

कलमोहन १२
 कमला १ ४
 कनाल ६६
 कपकुमल कवि ८७
 कपकुमल (कवि) कुपाराम ११४
 जयदेव कवि ४१ १४३
 जयदेवजी २४
 जयशङ्कर (विद्याधर शास्त्री ?) १२२
 जयानन्दपुरि १४६
 जलम्परी पाव ४१ ७३
 जयकलतिह मङ्गाराजा (जोधपुरीय) १ ७
 जसवन्त ६६
 जहानशाय ६४
 जाल कवि ३६ ३७ ८६
 जालराह ६६
 जालराय ५
 जापसी मलिक महुम्मद १ ६
 जालमी ११६
 जाहूरमल बुन्दाबननिवासी ६३
 जिनरङ्गपुरि १ ३ १३१
 जीवदजी भक्त २४ ४
 जीवनदास १३
 जीवधन (मिस्टर) बार एच-का १२३
 जेतसिंह कवि ६२
 जेताराम ३
 जेमल ४ ८ २७ ४६, ७७ ६८
 जमल खादि १४
 जेमल बाबुछिष्य ४२
 जोधराय बारहूट ११६
 जोधा १

ट

टीला ४२
 टीलाजी ७७
 ठुडर ११२
 ठोडर ६६
 ठोडरमल १ ३

ठ

ठाडुर ३३

ड

डूबर १ २
 डूबरदास ४१
 डूबरमल २३

ड

दरबेस्ता ४
 तरङ्ग १ १
 दुङ्गली १ २
 दुर्गसी ६ ३३ ६८
 मुलसीदास २ ६ ६७, ७७ ६९
 ६७ ६८

मुलसीदास बोस्वामी १ ३ १३७
 मुलसीदास खादि ११४
 मुलसीराम १ १
 मुलाराम ६४

ड

डारकानाबनदु दिवसि (बाजी कवि) ८२
 डल ४६ ७३
 डमालदास ११ १६
 डामीबर १२
 डाल ६७ १ १ १ ४
 डालजी ८६
 डामु १ ३ ६ ७ १ २ ३ ३१
 ३६, ३८ ३७ ३९ ४४ ४६, ४७
 ४८, ७८, ८ ८७

दीपजी ७३
 दीपजी भक्त २३
 दीपा ४६
 दुस्ता बारन ३२
 दुमल ७७ ६८
 दुमलजी ७७
 दुलाराह १११
 देईदास बारन ४२

दध ३५

देव कवि ३५

देवति १ १

देवनाथ ३५

देवनाथी २४

देवलनाथ ७६

देवादास ४

देवीदास ३२

देवीप्रतापजी मुंजी मुलिक १२२

देवीप्रसाद १२१

देवीविह ८३

घ

ध्यानदास ११ १७ ५३

धुवदास १२ १३

धमा ७१

धमा भक्त ६१

धमदेव १४६

धना भक्त ४१

धनाजी भक्त २४

धनी १ ३

धारीश्वर (भोजपुरी) १६१

" १४६

धर्मलीला ४६ ७६

न

नकस १८७

नन्द १ १

नन्ददास १ १२ ३३, ५३, ५६ ८७,

१ ८ १११ १५४

नरपति कवि ३२ १ ८

नरपति नाथ ८६

नरवद ७७

नरसा जीमी १ २

नरसिंहजी २३, ४

नरसिंहदास ७२

नरसीजी २४ २७ २८ ४ ६७ ६८,

७२

नरहरि १०३

नयास १

नामर ६८

नामरा १

नामरीदास ६७

नामा धम्म ४५

नामाजी ७५

नामस १४८

नाथ १ ३

नाथजी ८ २६ ३८, ६१ ६५, ७

७८ ८५

नामा कवि ८३

नामा नाथजी नाथदास नाथभक्त ७

२५ ४२ ७३

नामादास १४२ १४८

नामदेव नामदेवजी नामदेव भक्त १

११ १५ २६ ३६, ३८, ७ ८

नामदेवजी ४१ ७३

नामिक ४१

नारायण १ ३

नारायण ७ १३८

निरुपमा १४१

निम्बार्कताम्रदायिक काव्य १३४

निहास १ २

नितजी ७३

नितदास ४३

नहा ६२

प

प्रतापतिह सवाई १३ ३३ ३४ ३५

प्रतिह ११२

पापदास (बीरवाणा) ४१

पापमुखाय कामुनगो १ ६

प्रियादास १४८

पटाव ४२

पद्मदेव १४६

पद्माकर ३३ ३६ १५४

परमसुख १ ३
 परमानन्द ११ २ २३, ६ २४ ६५
 ७३ ८४
 परमानन्ददास ४१ ३६
 परमानन्ददेव १६९
 परशुराम ४ ३२
 परस ४३
 प सजो २४ ७१
 परसराम ५ १५, १६ २ ६१ ६३
 ७४ ६५
 परसराम (निम्बाविरमसम्प्रदायी) १५
 बहुकर १
 पासा ६८
 पिराम १
 पिरोड १ २
 पीपल कवि ५६
 पीपा ४३
 पीपा पीपाजी पीपाजी भक्त ६, १३
 २१ २३ २४ २५ ३६ ६१ ७१
 १
 पीक ४
 पुष्करोड विठ्ठल १ ६
 पुरन्दर ४२
 पुष्पलताधर्म १२३
 पुरण ४३
 पुरण कवि ६२
 पुरणजी ७७
 पुष्पोत्तमजी ६६
 पुष्पोत्तम योयो २३
 पुष्पोत्तम महाराज २४
 राठोड (कम्पावमल्लोड) ४३ ६७
 पुषोदास १
 पुषोदास ४६ ६२ ७४ १ ३
 गुप्तदर ४६ ४७ ४८
 पुषोदास (राजा जोधपुरके) ४३
 पुषु ६६

फ

फनु ६६
 फतेस्य राठोड महेसदासोड ११४
 फरीद १ १
 फरीद घोष ७२
 फरीदा ४
 फरीदुद्दीन घोष ४४
 व
 वड्ड कवि (बीरबल) ११२
 वड्डा १ १
 वड्डना वड्डनाजी ६ २१ २३ २५ ३६
 ४२ ६१ ६७ ७ ७७ ७८, ७९,
 ८५ १ ४
 वड्डोदास ११६
 वड्डोदास आचार्य १२२
 वड्डोदास आदि कवि १११
 वड्डोदास २७
 वड्डु १
 वड्डुल ७१
 वड्डोदास वड्डोदास घोष २३ ४४
 वड्डोदास वड्डोदास कविराजा ११३,
 ११६, १२ १२१
 वड्डोदासजी आदि प्रनेक ११३
 वालकराम ६३ ६४
 वालनाथ ४४ ७४
 वालमुकुन्द ६४
 वालसपी ६७
 वालसकनजी हनुमन्ता १२१
 बिसन ६६
 बिसनर १ २
 बिहारीदास ६
 बीजल ३६
 बीजा १ ३
 बीजोदास ४३
 बीभटा १ १
 बीभट २३ ७३

बीडला ६६
 बीमा ४१
 बपप्रकाश ३६
 बुधसिंह रायरात्रा बुधो ५६
 बुधहास ६६
 बह्नुद्याह १ ६, १४८
 बुद्ध ६१
 बबो ६६
 बबन्नी २३
 बेनामीताहय बाबा ८३
 बैन १ ४
 बोडी ६५
 बोहितदास ४

भ

भयवतीप्रसाद बाबका बापु ६३
 भगवानबाता निरञ्जनी ३ २४ ६६
 १४८
 भट्टारक स्वामी १४८
 भया रतनपालजू ११३
 भलु हरि ६
 भरपरी ७६ ७६ १ ३
 भरमो कवि ८४
 भरमो कवि घाबि ६२
 भक्तभूति महाकवि १६२
 भवामी ६३
 भवानीदास ८१
 भवानीराम ३३
 भागोरप ६८
 भावजी २४ ४
 भागु (बासाहिप) १ ६
 भानुदास १४८
 भारती ११२
 भारती मङ्ग ६७
 भारती मति (बीबीकमतिघिय्य) १६
 भारवि भोजाबी १ २
 भावनामन्त्र १२३

भाकर १४४

भानिहोत्री १६३

भातजन ६ ३६ ६१ ८६, १ ५ १३१
 भीप १ २
 भीम भीमजी ४ ७२
 भुरबागूर (भी लप्रहाबासपुरतमोपराय
 वूरवहिकापामराय बसिष्ठमोत्र सना
 सनामन्त्र) १४३
 भुवन भजनजी भुवनजी भक्त २५, ३६
 ४२ ७३
 भूपर भूपरदास भूपरदास बाहूड ८६
 ८७ ११२
 भडा १ १
 भद्र तावडा ४३

म

मन्त्री ८१
 मामजी ६६
 मामीराम विष्णुबाजिवासी ६६
 मङ्गल १८
 मङ्गलम्बर २८
 मदीगड ७२
 मण्डन कवि देववि मङ्ग ६ ६६ १२२
 मण्डन सूर्यधार ११६
 मन्त्रिकण्ठकवि (मोघिमन्त्रकविसुनु कपोत
 रामपोष) ११६
 मन्त्रिगुम्बर ३६
 मन्त्र २२
 मन्थुरा १
 मन्सूरन ६६
 मनभावनजी घाबि १२५
 मनसुबा १ २
 मनोहरदास ५७
 मनोहर घामा १२२
 मन्म ६८
 मन्मन्त्र १ ३

महम्मदकाशी, महम्मदि महुमूदकी २३

४३ ६५ ७२ १

महादेव बन्ध ६३

महादेव ६३

महामुद्रण महु १६१

महेन्द्र कवि ५२ ६६ ११४

मावीमाल (कवसरस १) १ ३

मावयो १ ४

मावक १४५

मावकवास ६८

मावकमहु १४६

मावो ३२

मावो कपलाय २३ ४१

मावोवास मावोवासकी १ २५ ३३

७५ १११

मावोराय ३३

मावोलाहि ३२

मावतकी ३४

मावत १ ४

मावककी २४

मावकीकी ७२

मिया १ ४

मीकडी ६८

मीकडीनाथ मीकडीपाय नाथ ४६ ७३

मीर ६७

मीरा मीराबाई १६, ३६ ३६ ६८, ६९

मुस्तानम ६८

मुकन्द मुकन्द मुकन्द भारती मुकन्द

भारतीकी ११ ५३, ४१ ७५, १

मुकन्दवित्त १३३

मुनि १ १ २

मरलीबाघ ५१ ६६

मुरलीधर व्यास (मावाकी) १२२

मुरारीदास कवि १२

मुरारीदास कविराजा (मिथन लुबेयसा

त्यज बुंदेलिवाली) ६१

मुरारीदास बारहठ ५३

मुरारीदास बारहठ ११३

मुसत ६६

मेहाबास माहोरी ३२

मेठीराय ६३

मेठीतर पिरमूदास ११३

मेहन २७ ६८ ११६

मेहनदास ३२ ३३, ७८ ८६

य

यकोवालाल यकोवालाल ७६, ६३

यामुनाचार्य १२५

युगलकिशोर ६३

र

रत्नाकी २४

रत्नाकी ७३

रघु ६६

रघु कवि ५१

रघुदेव १६

रघुनाथ १८ ११६

रघुराज ३७

रघुराजसिंहदेव मुराराबा (रीवानरेख) १६२

रघुरामकवि नागरा महु ६ १ ७, १११

रघुबा ४२

रावि ६४

रघु १ २

रत्नज रत्नजकी, रत्नज (बाहुधिय)

६, ७, १ ११ २१ २६ २७

२८, ३ ३१ ३६ ३८ ४१ ४२,

३३ ६३ ७७ ७८ ८६ ८७

रवि १ २

रत्नज ६७

रत्नतार (बं रायराज) १ ६

रत्नदास १६

रतन मीरभाष (यावो यावारज) ६१

रतन हुपीर ६१

रम्भ ११६
 रमातया १ १
 रमिता १ १
 रस १ ४
 रसराशि ३६ ८२
 रसवान ८५ ११२
 रसिक सनहो ६७
 रसोमोमाल पोवाल ८७
 रसोवात्री ७१
 राइमन्स ६४
 राका ६४
 राय १ १
 रायबहाल रायबहासत्री ६ १६१
 रायो रायोत्री रायोदास ३ ४ ६ ६६
 ६३
 रामचन्द्र १४४
 रामचरण रामचरणजी रामचरणदास
 १७ ३३ ६ ६६ ६८
 रामजीदास १६४
 रामदास ३७ ३७ ६८
 रामदीन डकतानी १५३
 रामनियास हारीत धादि १२२
 रामबकस ६३
 रामसास (रामलक्ष्मी) ६३
 रामवन्तभ ६७
 रामलपे ३७
 रामविहृ तबर डाकुर १२२
 रामलम्ब १२ ३६ ७१ ६३ १२६
 १२७
 रामानन्दजी ३३
 रामानन्द सरस्वती १२८
 रामानुज १३३
 रामानुजदास १ ३
 रामानुजयामुनाचार्य १३
 रामानुजप्रियङ्ग कश्चित् १४
 रामानुजाचार्य १३४ १६

रामाध्यायार्थ १६२ १४३
 रणराय १३४
 रणराय (वररत्नाप्रिय) ६७ ८१
 रणनारायण पाण्डव १६२
 रणरसिक मनभावन १३६
 रणराय १ ४
 रवान १ ११ १३, २८ ३६, ७ ४
 ६४
 रोक निग्र ६४
 स
 सपविदुस भक्त सपुबोटल २४ ४१
 सपुमम बाह्य ३६
 सलितकिमोरी ६५ १ ६
 सलिला सधो ६६
 सलमीधर समन्तामन्तरपुनाचवादेपुमोष
 जीवी १३७
 साहज ४३
 सात ३३ १ ३
 सातयजमसिक ३२
 सातजम ६३
 सातदास १६ ३२ ४१ ६३ ६६, १ ६
 १३६ १३३
 सानव १
 साया १ १
 सिलीन सिलीनराम ६६ ६४
 सोकाध्याय १६८
 स
 स्यास ४१ ७३ १ १२३
 सज्जन ६८
 सज्जवासी ११८
 सज्जनिधि १४१
 सकतावर ६७ ६६
 सङ्गनावर ७२
 सनवारीदास बाबा ७
 सनवकुष्ठजी २४

बरहराज १११
 बरहनि ११५
 बल्लभाचार्य १२७ १२८ १३६, १६
 बसन्त ६७
 बाहिर बाहिरको निर्मा बाहिर बाहिरा
 बाबोव ६ १६ २७ ३ ३
 ३१ ३२ ६४ ८४ ८८
 बास्मीक बास्मीकि बास्मीकिनी
 बास्मीकि मुनि ४३ ७३ १२८,
 १३१ १३३ १३४ १३५
 बिजयमरामाचार्य (बनुमु जाचार्यसिन्धु) १३७
 १५६
 बिजुकेसर १३६
 बिजाबास २८ ३६ ७२
 बिद्यापति २८
 बिजनाबसिह बिब १४३
 बिन्देवर १४३
 बिजलबास ६८
 बिजुबास ३३ ३६
 बिजुपुरी १४३
 बिजु घर्मा ८९, १३२
 बितालीनी २४
 बिहारी ३६
 बिहारीबास महकु ६२
 बीरू ११६
 बीरू मेहानी ११६
 बीरसिन्धु तवर (हाकिम इतिहास बिभाग
 राज्य घलवर) १४९
 बीसानी ७२
 बृष बृष कवि ३३ १४६
 बेजुदबाब बेहाम्ताचार्य १३४
 बेबीबास ७२
 बेबीमाथव १
 बेहपास ५, १३६ १४७ १४६ १३३
 १३६
 बेराचार्य (मुहप्रकाशिकाचमसुत) १२६

बेहाम्ताचार्य (कविताकि) १२८
 (बरबनाभापरनाम) १४६

बेम ६
 बेमुष्ट ४१
 बैकल १
 बेबासिन्धु ११४
 बेम २१
 बेमबबास १२६
 बेडी घली ३४
 छ

ब्याम ८४
 ब्याम कट्ट ६७
 ब्यामसुम्बरबास बी ए १३३
 ब्योभमबास २३
 बीरुम्बबास १६
 बीरुम्बमहु कविकलानिधि १ ६ ११४
 बीरुम्बराम कवि बेस १६२
 बीरुम्बघर्मा १४३
 बीररस्वामी १४७ १३४
 बीनिबास ३३ १ ६
 बीनिबासबास (योनिबाचार्यसिन्धु बाबुल
 कुमोदुमव) १४६
 बीनिबास बेहाम्ताचार्य १३
 बीबासगुहाई १ ३
 बीरङ्ग बीरङ्गको ४ ७३
 बीरसिन्धु १२६
 बीरसुतभरसिक ५८
 बीहर्ष १४४
 बीहुरिछास्त्री घाघुकवि १२३
 बजुराचार्य ३२ ३३, ७४ ८४ ८३
 १२६ १२६ १३१ १३२ १३३
 १३३ १४४ १४३ १४६, १४८
 १४६ १६
 बजकोपबास १४३
 बज्जुनाथ कुकवि १४६
 बज्जो १

सिद्धराम बर्मा चौधरी ६२
 सिद्धबस (बस) बारहूट १३३
 सिद्धराजभूष सेपावत ११४
 सिद्धराम घाबि ८७
 सिद्धम ३६, ७२
 सिद्धसिंह (राज) जयावत १११
 सिद्धानन्द ३३
 सिद्धानन्दभट्ट १८१
 सिद्धानन्द घति (धीरामबागप्रिय) १८८
 सिद्धाचार्य १२२

प

पम ६७
 पमदान १ ४
 पोत्री १ ३

म

म्याम म्याम म्यामदान १ १ २ १ ३
 म्योजी ३६
 मयकपदात निरञ्जनी २४
 मयाभाराम पोलीगड १८६
 मजूर ६८
 मजना १
 मजी कबरी ७२
 मजना २३ ४ ७१
 मन्मदास मलताजी १७ ३३ ४ ६५,
 ७२ १ ६
 मन्मदास घाबि १४४
 मन्ना १ ४
 मन्नाप ६८
 मन्मल्लुमार मारव सबाव १३१
 मन्मद ६६
 मन्मन ६
 मरदार ६३
 मरप ६६
 मरबन १ ४
 मरत ४३

मन्तर ६५
 महजदान ६८
 महमम (कोइतमानियातो) ५६
 माईबि ८२
 माई मजससिह ८७ ११३
 मापुजी ७७
 मापु मन्मतरामजी ११६
 मांमलियाजी ८
 मारी २४ ४१ ७३
 माहा ६६
 माईया भोला १५३
 माई ६६
 माबनिया मांमलियो ४ १ ८
 मिजुहरतानी ४६
 माहा मोहाजी २४ ४२ ७३
 मुगराम ६८
 मुगानन्द २४ ३६ ७१
 मुगजमदासजी (म्यामासली) ६६
 मुबामा मुबामादास १ ५ १ ६
 मुम्बर ८, १ ३६ १ २
 .. कवि घाबरे ३२
 मुम्बरदास ५, ६ ११ १७, १८ २१
 २६, ३२ ५१ ३२ ३७ ६३ ६४
 ६२ ७८ ७६ ८७ ८७ ८८ ८९,
 १२१
 मुम्बरदास (कामूदास प्रिय) ११
 .. घाबि ८६
 मुम्बरदास बूसर २६
 मुम्बरदास ११
 मुम्बरदासदासजी १ ५
 मुम्बरदासजी (कर्मजरीप्रिया) १८
 मुम्बरदास साहिबदान ११४
 मुम्बरदास कवि १
 मुम्बरदास पोमरान्तनय १४६
 मुम्बरदास बारीक १२२
 मुम्बर २७ ११६

सुरजमुनि ६३
 सुरतकवि ६
 सुरतमित्र ११२
 सुरतराम ६६ ६७ ६८
 सुरततिहु १ ३
 सुरहाल सुरबाब महुकवि सुरस्याम ११
 १६, १७ २ २१ २३ २६, २७
 ४१ ५८, ६६ ७३ ८३ ८५

सुरिया १ १
 सुबा १ ३
 सैरु १
 सैकफरीब ११६
 सेन २७
 सेनजी ७१
 सेबापति ११२
 सेबाबास १३ १४ १७ १८ १२४
 सेवर्ग ८६
 सेवमकत ४
 सेकडि १ १
 सोम ७१ १ १
 सोम (शानुक्षिप्य) ४३
 सोमजी २३
 सोम ४
 सोमजी २४ ७२
 सोमबाब १२
 सोम्यामाम्नु मुनि १२८, १३ १२७
 १९

हु

हुबबल हुबबलजी ४५, ७५
 हुनुमान घर्ग (चौमु जिबासी) १२२ १२३
 हुबीब ६६
 हुस्ताली ७५
 हुददल २६, २७
 हुदरेब स्वामी १५४
 हुदकनराज प्रोहित (तिबाङ्ग) ११४
 हरिचरनजिह्वा बोझाल १२३

हरिबास १ ४ ५ १ १४ ३ ३६,
 १ ६५, ६७ ७ १ ६
 हरिबास निरञ्जनी ७ ८
 हरिनारायणजी पुरोहित बी ए विद्या
 सुबब ८३ ८२ १ ४ १२१ १२२,
 १५

हरिबंस ८६
 हरिरामबास ५७
 निरञ्जनी (बीडबाभिया)
 १ ८ १४८

हरिभ्यासदेव लखित १३१
 हरिबस्मन ५४
 हरिबिबास ६३
 हरिबकाङ्ग ६३
 हरिस्वङ्ग हरिचिङ्ग ५२ ६४
 हरिसेबकविप भुङ्गारोपनामक ६६
 हरेकृष्णमित्र (बपतिहोप्यन्विबाङ्ग) ६७
 हरोज १ ३
 हस्तीपाव ४५, ७५
 हितकारो ३४
 हिलम १ ३
 हीरा १ ५
 हीराबख्श कालजी १ ७
 हुकमबख्श पिडिया हुकमीबख्श पिडिया
 ११२ ११३
 हुसेन हुसैनघाट्ट ६७ ६८
 हुबपराम ५४
 हुपीकैल ४१
 हुतम १ १ १

ह

शेबघर्ग शरबघर्गममबघर्गज १४६

ज

जिलोचन २३ ३६ ७२

झ

जानतिलोक २५, ४२ ७१ १ ६

जानबास १५६

जानकलीदेवी यागद्वय ६६

जानाघली १५६

जानगद शरबली १४६

राजस्थान पुरातन ग्रन्थ-माला

प्रधान सम्पादक—पद्मधो मुनि त्रिनयित्रय पुरातत्त्वाचार्य

प्रकाशित ग्रन्थ

१ सस्कृत

- १ प्रभासपर्वशी साहसिकचूड़ामणि सर्वदेराचार्यकृत सम्पादक—भोनीषाम्पायकसरी पं पद्माक्षिरामदासी रिवाकावर । मूल्या—१ ०
- २ मन्तराजराजन, महाराजा लबाईजयसिंह-कारित । सम्पादक—स्व पं कदरनाथ ज्योतिषिद, जयपुर । मूल्या—१ ७५
- ३ महविष्णुसर्वभक्त स्व पं मधुसूदन घोषप्रणीत सम्पादक—म न पं भिरिपरधर्मा चतुर्वरी । मूल्या—१ ७५
- ४ लक्ष्मणसंह पदमन्दकृत सम्पादक—डॉ जितेन्द्र जेटली एम ए पी-एच डी, मूल्या—१ ०
- ५ कारकल्लंघाद्योत पं रघुनन्दसिंहकृत सम्पादक—डॉ हरिप्रसाद दासी एम ए पी-एच डी । मूल्या—१ ७५
- ६ कृतिरीषिका मोनिरत्नप्रभूकृत सम्पादक—स्व पं पुष्पोलमठर्मा चतुर्वरी साहित्याचार्य । मूल्या—२
- ७ पद्मरत्नप्रदीप पञ्जातकृत सम्पादक—डॉ हरिप्रसाद दासी एम ए, पी-एच. डी । मूल्या—२ ०
- ८ कुम्भपोति कवि लामनाथविरचित सम्पादिका—डॉ प्रियबाला दाह एम ए, पी-एच डी., डी मिट् । मूल्या—१ ७५
- ९ मूलसंह पञ्जातकृत सम्पादिका—डॉ प्रियबाला दाह एम ए., पी-एच डी डी मिट् । मूल्या—१ ७५
- १० गृह्यारण्यपञ्चमी श्रीहर्षविरचित सम्पादिका—डॉ प्रियबाला दाह एम ए., पी-एच डी., मिट् । मूल्या—२ ७५
- ११ राजविमोह महाकाव्य महाकवि उदयराजप्रणीत सम्पादक—पं श्रीपीपामनारायण बहुपा एम ए उपसम्पादक राजस्थान प्राध्यापिका प्रतिष्ठान जोधपुर । मूल्या—२ २५
- १२ अक्याचिचित्रय महाकाव्य मट्टलक्ष्मीवरविरचित सम्पादक—केसरराम कादीराम दासी मूल्या—१ ५
- १३ मूलपलकोष (प्रथम भाग) महाराणा कुम्भकल्लंघकृत सम्पादक—प्रो रघुनाथ जेटली-नाथ कारित तथा डॉ प्रियबाला दाह एम ए पी-एच डी., डी मिट् । मूल्या—१ ७५
- १४ उत्तररत्नाकर साधुमुम्बरनशिविरचित सम्पादक—पुरातत्त्वाचार्य श्रीत्रिनयित्रयमुनि सम्प्रदाय संघासक राजस्थान प्राध्यापिका प्रतिष्ठान जोधपुर । मूल्या—४ ७५
- १५ दुर्गापूजाग्रजसि म न पं दुर्गाप्रसादद्विवेदिकृत सम्पादक—पं श्रीपञ्जावर द्विवेदी साहित्याचार्य । मूल्या—४ ७५
- १६ कम्पुतुहल महाकवि लोलनाथविरचित सम्पादक—पं श्रीपीपामनारायण बहुपा एम ए उप-संघासक राजस्थान प्राध्यापिका प्रतिष्ठान जोधपुर । इन्हीं कविवर की पत्तर कृति श्रीकृष्णजीसामृतकक्षित । मूल्या—१ ५
- १७ ईश्वरविलासमहाकाव्यम् कविकसानिधि श्रीकृष्णचन्द्रविरचित सम्पादक—मट्ट श्रीमन्मूला नाथ दासी साहित्याचार्य जयपुर । मूल्या—११५

- २ त्रिपुराभारतोत्पत्तिश्च वर्णधर्मप्रणीतं सम्पादय-मुनि धीमिनविजय ।
 ३ कश्चात्तुतया भट्ट धामरकरविनिमित्तं सम्पा -मुनि धीमिनविजय ।
 ४ कालपिष्ठाभ्याकरणं ठक्कुर सुधामनिहरचितं सम्पा-मुनि धीमिनविजय ।
 ५ परार्थरत्नमञ्जूषा १० हृत्पुत्रिभिरचितं सम्पा-मुनि धीमिनविजय ।
 ६ वसन्तविमलम् आम्, प्रज्ञातकृतं सम्पा-०-भी एम सी मोरी ।
 ७ मन्त्रोपाख्यानं प्रज्ञातकृतं सम्पा -भी बी जे साहेनरा ।
 ८ चन्द्रम्याकरणं प्रार्थार्य चन्द्रमामिद्विरचितं सम्पा -भी बी डी. रोयी ।
 ९ वृत्तमालिसमुच्चयं कविविरह्याङ्कुरचितं, सम्पा -भी एच डी. बेनणकर ।
 १० कविरचय प्रज्ञातकृतं " "
 ११ स्वयंभूद्वयं कविस्वयंभूरचितं " "
 १२ प्राहृतात्मन रघुनाथकविरचितं सम्पा -मुनि धी मिनविजय ।
 १३ कविकोस्तुत्रं च रघुनाथरचितं " सी एम एन मोरी ।
 १४ कृष्णरत्नकोटि भाग २, महाराष्ट्रा कृष्णकण्ठप्रणीतं सम्पा-०-डॉ. प्रियदासा पाह ।
 १५ इन्द्रप्रसन्नप्रकाश सम्पा-०-डॉं धीरधरच वर्मा ।
 १६ हृमोरमहाकाव्यम् नयचन्द्रमूरिकृतं सम्पा -मुनि धीमिनविजययी ।
 १७ रत्नचरीकावि ठक्कुर फेकरचितं " "
 १८ स्तुतिभद्रकाकावि सम्पा -डॉं चारमाचम जाओदिया ।
 १९ काठवदन्ता, मुक्तामृतं सम्पा-०-डॉं जयरथ मोहनमाल सुवय ।
 २० परमचरितं पंचकपुकाव्यावि " च चमूतमाल मोहनमाल
 २१ भुवनदीपक भावनाधर्मिकृतं सम्पा-०-वी धीपुत्रोत्तममठ ।

राजस्थानी और हिन्दी

- २२ मुद्रा नैचलोरी कपल, भाग २ मुद्रा नैलुलीकृतं सम्पा-०-भीबीप्रसाद साकरिया ।
 २३ पोष बाबल कविविभी चन्द्रमई, कवि ह्यरत्नकृतं भीरवरपतिह भटनानर ।
 २४ राजस्थानमें उत्कृष्ट साहित्यकी खोज एस प्रार. भास्करकर, हिन्दीपत्रावक-
 भीरवरच विवरी ।
 २५ राजोडारी बंधावली सम्पा -मुनि धीमिनविजय ।
 २६ कवि राजस्थानी भाषासाहित्यग्रन्थसूची सम्पादक-मुनिधीमिनविजय ।
 २७ मीर-मुद्र-परावली स्व गुरोहित इन्द्रियाचमणजो विद्याचमण हाथ संकलित
 सम्पा -मुनि धीमिनविजय ।
 २८ राजस्थानी साहित्यसंग्रह भाग ३ प्रसारक-भीमस्मीनाथमण मोस्वामी ।
 २९ सूरजप्रकाश कविया करलीबानकृतं सम्पा-०-भीबीवाचम मल्लय ।
 ३० विद्याभुवनग्रन्थसूची सम्पा-०-भीमोवातमाराचमण बहुरा घोर भीमस्मीनाथमण
 मोस्वामी ।
 ३१ महारम बूबीनरेण राजराजा मुक्तिह हाकाकृतं सम्पा -भीचमप्रसाद राबीच ।

विशेष-पुस्तक-विज्ञानार्थों को २५% कमीशन दिया जाता है ।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

(Rajasthan Oriental Research Institute)

जोधपुर

उद्देश्य

- १ राजस्थान में और अन्यत्र भारतीय संस्कृति के आधारभूत संस्कृत प्राकृत अपभ्रंश राजस्थानी हिन्दी व अन्य भाषाओं में लिखित प्राचीन ग्रंथों की खोज करना तथा उन्हें प्रकाश में लाना ।
- २ प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों का संग्रह कर उनके संरक्षण की व्यवस्था करना और उपयोगी ग्रन्थों को सम्बन्धित विद्वानों से सम्पादित करा कर उनके प्रकाशन की व्यवस्था करना ।
- ३ साधारणतः भारतीय एवं मुख्यतः संस्कृत व प्राचीन राजस्थानी के अध्ययन अन्वेषण संशोधन हेतु पर्यावश्यक उत्तम प्रकार का सम्पूर्ण पुस्तक भण्डार (मुद्रित ग्रन्थावली) स्थापित करना और उसमें देश विदेश में मुद्रित विविध विषयक ग्रन्थ-कुर्लम्य सभी ग्रन्थों का यथासम्भव संग्रह करना ।
- ४ संगृहीत सामग्री से शोधकर्ता अध्येता विद्वानों को उनके अध्ययन और अनुसंधान में सहायता पहुँचाना ।
- ५ राजस्थान के लोक जीवन पर प्रकाश डालने वाले विविध विषयक लोक-गीत चांपदायिक मंत्रम पदादिक भक्ति साहित्य एवं सामाजिक संस्कार धार्मिक व्यवहार तथा लौकिक व्यापार-विवार आदि से सम्बन्धित सभी प्रकार की सामग्री की खोज संग्रह संरक्षण एवं प्रकाशन करने की व्यवस्था करना ।



